मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 57 | अंक : 6 | दिसम्बर, 2016 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹15

सत्यमेव जयते

प्रो. वासुदेव देवनानी
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा
एवं भाषा विभाग
राजस्थान सरकार, जयपुर

विद्यालय और वार्षिक उत्सव

समय को धन कहा गया है और इसीलिए उसके एक-एक क्षण का सदुपयोग करने की शिक्षा दी जाती है। समय का अपना एक निर्धारित परिभ्रमण चक्र है, जिस पर वह चलता रहता है-बिना रुके, बिना थके! जो समय का महत्त्व स्वीकार कर सदुपयोग के रूप में उसका सम्मान करते हैं; समय, समय आने पर फलदायी बनकर उन्हें यथोचित वरदान देता है और जो समय का मूल्य नहीं पहिचानते, वे पश्चाताप करते नज़र आते हैं। कहा भी गया है- **''समय और सागर की लहरें किसी का इन्तज़ार नहीं करतीं।''** (Time and tide wait for none.)

समय के इसी अनुशासन में वर्ष भर की परिक्रमा पूर्ण कर वर्तमान में गतिशील वर्ष 2016 अवसान की ओर अग्रसर है। चन्द दिनों पश्चात यह वर्ष इतिहास का एक अध्याय बन जाएगा और एक नए नक्षत्र के रूप में वर्ष 2017 अंगड़ाई लेकर प्रकट होगा। आगत एवं विगत वर्षों के लिए ये दिन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। दरअसल यह संक्रान्ति काल है। मिलन एवं विदाई की वेला की अनुभूति रोमांच पैदा कर देने वाली होती है। वर्ष 2016 के आगमन के समय हमने जो संकल्प लिए थे, उन्हें किस हद तक पूरा कर पाए और नूतन वर्ष 2017 के लिए हमारे संकल्प क्या होंगे.. की समीक्षा एवं नियोजन का यह समय है। हमें इन दोनों कार्यों की समीक्षा पूरी ईमानदारी एवं साहस के साथ करनी चाहिए। जो ईमानदारी के साथ अपनी कमियों को स्वीकार कर भविष्य में उनकी पुनरावृत्ति नहीं करने का संकल्प लेते हैं, वे साहसी होते हैं। शिक्षा का एक काम ऐसा साहस हमारी वर्तमान पीढ़ी के दिलों में भरने का है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरी **'टीम एज्यूकेशन'** के शिक्षक अपनी इस भूमिका का भलीभाँति निर्वहन कर रहे हैं।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर की वार्षिक परीक्षाएँ 2017 का श्रीगणेश 02 मार्च 2017 से होगा। इस प्रकार अध्ययन-अध्यापन के लिए अब तीन माह का समय शेष रह गया है। इस बीच अर्द्धवार्षिक परीक्षाएँ एवं शीतकालीन अवकाश भी होंगे। गुरुजन एवं विद्यार्थियों से मैं चाहूँगा कि बेहतर परीक्षा परिणाम को ध्येय बनाकर आगामी दिनों में वे दत्तचित्त होकर अध्ययन-अध्यापन का कार्य करें। एक स्वर्णिम भविष्य आज के विद्यार्थियों की प्रतीक्षा कर रहा है। आइये, हम उस स्वर्णिम राह पर उन्हें अग्रसर कर अपने शिक्षक होने को सार्थक करें।

विद्यालयों में विभिन्न उत्सव-पर्व समय-समय पर मनाए जाते रहते हैं। इन उत्सव-पर्वों का हमारे सामाजिक जीवन में बड़ा महत्त्व होता है। उत्सव-पर्वों के आयोजन की शृंखला में विद्यालय का वार्षिक उत्सव साल भर का शीर्ष आयोजन होता है। मुझे मेरा विद्यार्थी जीवन याद आता है जब वार्षिक उत्सव में एक कॉपी अथवा पेन्सिल पुरस्कार स्वरूप प्राप्त कर हम फूले नहीं समाते थे। वार्षिक उत्सव बालकों की प्रतिभा को विकसित कर उनमें स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का विकास करता है और आयोजन के समय उपस्थित माता-पिता एवं अभिभावकों को सुख एवं सुकून दिलाता है। ये अवसर विद्यालयों को दानदाताओं के सौजन्य से अपनी आवश्यकताओं के संसाधन जुटाने में बड़ी मदद करते हैं। मैं चाहूँगा कि इस वर्ष सभी राजकीय विद्यालय अनिवार्य रूप से वार्षिक उत्सव का आयोजन कर विद्यालय एवं समाज तथा शिक्षक एवं अभिभावक के मध्य प्रेम और आत्मीयता का बीजारोपण करें। अतः वार्षिक उत्सव में माननीय जनप्रतिनिधिगण, गणमान्य नागरिकों, अभिभावकों एवं दानदाता भामाशाहों को अधिकाधिक संख्या में आमंत्रित कर उनकी सहभागिता सुनिश्चित की जावे। इस अवसर पर क्रीड़ा, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, परीक्षा, गृह कार्य, अनुशासन, स्वच्छता जैसे क्षेत्रों में उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र एवं ईनाम देकर प्रोत्साहित किया जावे। वार्षिक उत्सवों के आयोजन के समाचार जानने के लिए मैं उत्सुक हूँ और मुझे इसकी प्रतीक्षा रहेगी।

इस माह, 25 दिसम्बर 2016 को हमारे आदरणीय पूर्व प्रधानमंत्री भारत-रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म दिन है। अटल बिहारी जी का जीवन प्रेरणा का मधुर अध्याय है। बाधाओं और अभावों के बीच कैसे आगे बढ़ा जा सकता है, की शिक्षा वे हमें देते हैं। शिक्षा विभाग को अभी इसकी प्रबल आवश्यकता है। आइये, अटल जी को जन्मदिन की हार्दिक बधाई उन्हीं की एक ओजपूर्ण कविता 'गीत नया गाता हूँ' के साथ प्रदान करें-

टूटे हुए तारों से फूटे वासन्ती स्वर,
पत्थर की छाती में उग आया नव अंकुर,
झरे सब पीले पात, कोयल की कुहुक रात,
प्राची में अरुणिमा की रेख देख पाता हूँ
गीत नया गाता हूँ।
टूटे हुए सपने की सुने कौन सिसकी?
अन्तर को चीर व्यथा पलकों पर ठिठकी।
हार नहीं मानूँगा, रार नई ठानूँगा,
काल के कपाल पर लिखता-मिटाता हूँ।
गीत नया गाता हूँ।

एक बार पुनः आप सभी के प्रति हार्दिक शुभकामनाओं के साथ...

(प्रो. वासुदेव देवनानी)

"वार्षिक उत्सव बालकों की प्रतिभा को विकसित कर उनमें स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का विकास करता है और आयोजन के समय उपस्थित माता-पिता एवं अभिभावकों को सुख एवं सुकून दिलाता है। ये अवसर विद्यालयों को दानदाताओं के सौजन्य से अपनी आवश्यकताओं के संसाधन जुटाने में बड़ी मदद करते हैं। मैं चाहूँगा कि इस वर्ष सभी राजकीय विद्यालय अनिवार्य रूप से वार्षिक उत्सव का आयोजन कर विद्यालय एवं समाज तथा शिक्षक एवं अभिभावक के मध्य प्रेम और आत्मीयता का बीजारोपण करें।"

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते –श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 57 | अंक : 6 | मार्गशीर्ष–पौष २०७३ | दिसम्बर, 2016

प्रधान सम्पादक
बी.एल. स्वर्णकार

वरिष्ठ सम्पादक
प्रकाश चन्द्र जाटोलिया

सम्पादक
गोमाराम जीनगर

सह सम्पादक
मुकेश व्यास

प्रकाशन सहायक
नारायण दास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 15

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 75
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 150
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 200
- मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएं।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर–334 011
दूरभाष : 0151-2528875
फैक्स : 0151-2201861
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **–वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ
- शिक्षा–परीक्षा 5

आलेख
- महामना पं. मदन मोहन मालवीय 6
  टेकचन्द्र शर्मा
- सिद्धांत प्रेमी : लौह पुरुष 7
  सलिज वर्मा
- महानायक श्रीनिवास रामानुजन 9
  पवन के. भूत
- रामानुजन : एक महान् गणितज्ञ 10
  नफ़ीस अहमद
- भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद 12
  विवेकानन्द आर्य
- शिक्षाविद् गिजुभाई बधेका 14
  रविन्द्र कुमार मारू
- शिक्षा में अपेक्षित जीवन मूल्यों की तलाश 15
  मेवाराम कटारा
- बालक और उससे जुड़े सपने 19
  महेश कुमार चतुर्वेदी
- बच्चों को स्वस्थ रखता है योग 20
  रामेश्वरलाल वर्मा
- अपनी महत्त्वाकांक्षाएँ बच्चों पर मत लादिए 21
  डॉ. अजय जोशी
- गोगामेड़ी के मेले में 22
  डॉ. मदन गोपाल लढ़ा
- परीक्षा नहीं, मूल्यांकन चाहिए 23
  सत्यनारायण पंवार
- शिक्षा व्यवस्था और मूल्यपरकता 28
  विजय सिंह माली
- कर्त्तव्यपालन 32
  डॉ. मिट्ठू लाल पुरोहित
- बच्चों का विकास और मनोविज्ञान 33
  उर्मिला नागर
- विद्यालयों में हिन्दी भाषा शिक्षण 34
  रामगोपाल 'राही'
- तनाव से मुक्ति 36
  डॉ. गिरीशदत्त शर्मा
- शिक्षक के महनीय कार्य 37
  प्रकाश वया
- पर्यावरणीय जागरुकता 39
  डॉ. कल्पना शर्मा
- कृषि प्रधान देश में शिक्षा 41
  डॉ. लीला मोदी

रपट
- शिक्षा मंत्री ने किया 101 शिक्षकों का सम्मान 40
  डॉ. महावीर कुमार शर्मा
- स्मार्ट सिटी के राजकीय विद्यालय भी स्मार्ट 43
  वसुधा शर्मा

मासिक गीत
- प्रेरणा गीत 8
  संकलनकर्ता–**कल्पना दीक्षित**

स्तम्भ
- पाठकों की बात 4
- आदेश–परिपत्र 25–27
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 27
- शिविरा पञ्चाङ्ग (दिस. 16–जन. 17) 27
- चतुर्दिक समाचार 48
- शाला प्रांगण से 49
- हमारे भामाशाह 50

पुस्तक समीक्षा 44–47
- अनछुए अहसास : नीता चौबीसा
  समीक्षक–**प्रमोद कुमार चमोली**
- हाला का प्याला : तेजसिंह राठौड़
  समीक्षक–**सुभाष माचरा**
- जो बोया है : डॉ. कमलाकान्त शर्मा
  समीक्षक–**प्रो. डॉ. जमनालाल बायती**
- अगाड़ी : राजेन्द्र जोशी
  समीक्षक–**मनोहर सिंह राठौड़**

मुख्य आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर
मो. 9414142641

▼ परिचय

श्री पूर्ण चन्द्र किशन
आई.ए.एस.
निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

शिविरा के पाठकों को सूचित करते हुए परम हर्ष हो रहा है कि प्रारम्भिक शिक्षा निदेशक के रूप में श्री पूर्ण चन्द्र किशन, आई.ए.एस. ने 10 नवम्बर, 2016 को कार्यभार ग्रहण कर लिया है।

नवाचार के पर्याय, गतिशील व्यक्तित्व के धनी, अत्यन्त ऊर्जस्वी श्री पूर्ण चन्द्र किशन प्रखर विद्वान एवं संवेदनशील इन्सान हैं आपमें लेखक, मूर्तिकार और कुशल प्रशासक का अद्भुत समन्वय है।

विभिन्न प्रशासनिक पदों पर रहते हुए जनहितार्थ कार्यों को आपने न केवल गति प्रदान की अपितु नए आयाम भी स्थापित किए। जनजाति (tribal) क्षेत्र में शिक्षा के प्रति आधारभूत कार्य आप के नेतृत्व में हुआ। धौलपुर, डूँगरपुर जैसे जनजाति बाहुल्य क्षेत्रों में स्थानीय लोगों के सहयोग से, ठेकेदारों के चंगुल से बच्चों को मुक्त करवा कर शिक्षा से जोड़ा। वहाँ विद्यालयों में नामांकन और शिक्षा का स्तर भी बढ़ा।

प्रसिद्ध पत्रिका 'फोर्ब्स' में भी विशिष्ट कार्यों के फलस्वरूप आपका उल्लेख हुआ है।

26 जून, 1974 को जन्मे, गृह जिले उड़ीसा के श्री पूर्ण चन्द्र किशन बी.टेक (ऑनर्स-मैकेनिकल इंजीनियरिंग) उपाधि प्राप्त हैं। आपने 37 वर्ष की अल्पायु में ही बच्चों के लिए 'इंग्लिश लर्नर बुक' लिखी जो वागड़ी जनजाति (tribal) भाषा में है।

शिक्षा जगत आप के नेतृत्व में अपार नई संभावनाएँ देखते हुए हार्दिक अभिनन्दन करता है।

पाठकों की बात

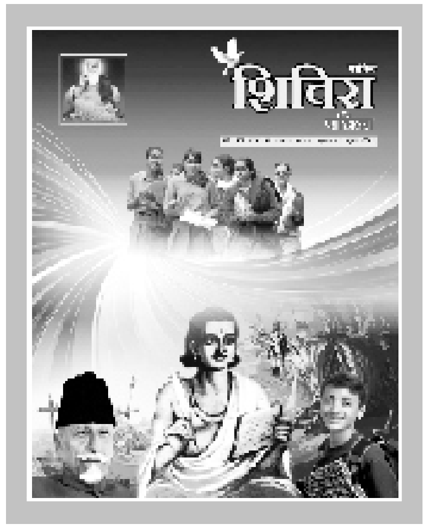

- शिविरा नवम्बर, 2016 के शैक्षिक चिन्तन में श्री शंकर लाल माहेश्वरी का आलेख 'बस्ते का बोझ कम करने हेतु प्रयास करें' प्रेरणास्पद लगा। बच्चे के बस्ते का बोझ कम हो इसके लिए योजनाबद्ध कार्य होना चाहिए।

शूरवीर सिंह चौहान, नागौर

- शिविरा माह, नवम्बर 2016 का अंक समय पर प्राप्त हुआ। यह अंक महान सन्त गुरु नानक देव, भारत रत्न मौलाना आजाद के जन्म दिवस के कारण महत्त्वपूर्ण बन गया है। इस अंक में 21 वीं सदी में शिक्षकों की बढ़ती जवाबदेही (चिन्तन विषय), कैसे हो शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार (शैक्षिक गुणवत्ता), शिक्षा और जीवन निर्माण (शिक्षा-संस्कार), सह-शैक्षिक गतिविधियाँ और संस्था प्रधान की भूमिका (नेतृत्व) जैसे विषयों पर महत्त्वपूर्ण लेख प्रकाशित कर इन विषयों पर शिक्षकों को जानकारी दी गई जो सराहनीय है। साथ ही खगोल विज्ञान के विषय में भी महत्त्वपूर्ण जानकारी दी गई है। शिक्षा और जीवन निर्माण में शिक्षा के महत्त्व को सार्थकता से समझाया गया है तथा जीवन निर्माण में शिक्षा के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है। जो प्रशंसनीय है।

सूरज प्रकाश, बीकानेर

- शिविरा पत्रिका का माह नवम्बर, 2016 का अंक प्राप्त हुआ। मुखावरण पृष्ठ आकर्षक व मन को प्रफुल्लित करने वाला लगा। 'कालिदास की कृतियों में चित्रित प्राकृतिक पर्यावरण अब कहाँ' लेख सारगर्भित व कालिदास साहित्य की चिर प्रासंगिकता को स्पष्ट करता है। शिक्षा चिन्तन में 21 वीं सदी में शिक्षकों की बढ़ती जवाबदेही लेख में शिक्षक की समाज में गरिमामयी भूमिका का रेखांकन प्रेरणास्पद लगा। हमारे भामाशाह कॉलम में भामाशाहों के नाम के साथ उनकी फोटो भी छपे ऐसी आशा करता हूँ। शिविरा पत्रिका में कलेवर के साथ-साथ पाठकोपयोगी सामग्री भी उत्तरोत्तर गुणवत्तायुक्त हो रही है। हृदय से आभार एवं शुभकामनाएँ।

रामकिशोर, बीकानेर

- शिविरा पत्रिका का वर्षों से पाठक हूँ। माह नवम्बर, 2016 का शिक्षामयी कवर पेज के साथ अंक प्राप्त हुआ, श्रीमान मंत्री जी की 'अपनों से अपनी बात' प्रत्येक शाला शिक्षक हेतु मार्गदर्शन एवं शिक्षा विभाग के बदलते आधुनिक स्वरूप पर प्रकाश डालती है। पत्रिका में प्रकाशित जयन्ती विशेष लेख पुरुष पर्व गुरुनानक देव, चाचा पण्डित जवाहर लाल नेहरु एवं मौलाना अबुल कलाम आजाद की जयन्ती शिक्षा दिवस के रूप में पढ़ने को मिली जो शिक्षा जगत के लिए प्रशंसनीय एवं प्रेरणादायी है। राष्ट्रीय शिक्षा दिवस पर शिक्षा के महत्त्व में बखूबी समझाया है।

राजेश कुमार अंकुर, जोधपुर

- 'शिविरा' पत्रिका का नवम्बर अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका में प्रकाशित श्री रमेश कुमार शर्मा के आलेख 'कालिदास की कृतियों में चित्रित प्राकृतिक पर्यावरण अब कहाँ?' अपूर्व साहित्यिक सम्पदा के साथ पुरातन पर्यावरण संरक्षण की व्यवस्थाओं का स्मरण दिलाता है। गुरु पर्व के पावन पर्व पर श्री हरजीत सिंह कंग और श्री थाना राम जाट के आलेख गुरु नानक के जीवन दर्शन का परिचय कराते हुए सामाजिक समरसता की दिशा में प्रवृत्त करते है। बाल दिवस और शिक्षक दिवस से सम्बद्ध रचनाएँ तथा आधुनिक भारत के लाल जवाहर लाल और भारत रत्न मौलाना आजाद के कृतित्व और व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए आलेख युवा पीढ़ी का मार्ग प्रशस्त करते हैं। श्री सुभाष चन्द्र कस्वाँ ने शिक्षा से जुड़ी अपेक्षा द्वारा वर्तमान में शिक्षा की बढ़ती व्यवस्था पर प्रहार करते हुए सेवा भावना के साथ शिक्षा प्रदान करने हेतु आह्वान किया है। साथ ही जीवनोन्मुखी शिक्षा के लिए अग्रसर होकर समसामयिक समाज की रचना की दिशा में कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की है। शिक्षकों द्वारा विविध कार्य प्रवृत्तियों के सफल क्रियान्वयन से संबंधित अनुभवों की जानकारी मिलती रहे तो उसकी सार्थकता रहेगी। पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु बधाई।

शंकर लाल माहेश्वरी, भीलवाड़ा

सत्यमेव जयते

बी.एल. स्वर्णकार
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

"शिक्षक प्रयास करें कि उनके विद्यार्थी व्यावसायिक रूप से दक्ष हों, पारंगत हों, उनकी प्रतिभा मानवता के हित में 'मेरा कर्त्तव्य प्रथम' और 'मेरा राष्ट्र प्रथम' की अवधारणा से अनुप्राणित हो।"

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

शिक्षा-परीक्षा

हेमन्त के यौवन में उल्लसित नव कौंपलें अपना स्वरूप बुनती हैं दिसम्बर के माह में। यह माह आँखों के साथ मन को भी हर्षित करने वाला है। सम्भवतः इस कारण ही इस माह को अध्ययन हेतु सर्वोत्तम समझा जाता है। न ग्रीष्म की तपिश, न शिशिर की ठिठुरन, प्रकृति की यह छटा विद्यार्थी को एकाग्रचित्त होकर मनोयोग से अध्ययन हेतु प्रेरित करती है। अतः आवश्यकता है न केवल सहज रहते हुए, समय का सदुपयोग अध्ययन-अध्यापन की श्रेष्ठता हेतु करें अपितु इस माह में आने वाले अवकाश का उपयोग भी पुनरावृत्ति हेतु करें।

दिसम्बर छःमाही परीक्षा का भी मास है। इस परीक्षा का महत्त्व भी सालाना इम्तिहान से किसी मायने में कम नहीं है। यदि आधा रास्ता सफलता से तय कर लिया जाए, तो लक्ष्य सुगम हो जाता है। अतएव इस परीक्षा में अपना श्रेष्ठ देने हेतु प्रयत्न करें तथा प्राप्त परिणाम का विश्लेषण कर आगामी परीक्षा हेतु स्वयं को तैयार करें और त्रुटियों को परिमार्जित करें। शिक्षक प्रयास करें कि उनके विद्यार्थी व्यावसायिक रूप से दक्ष हों, पारंगत हों, उनकी प्रतिभा मानवता के हित में 'मेरा कर्त्तव्य प्रथम' और 'मेरा राष्ट्र प्रथम' की अवधारणा से अनुप्राणित हो।

(बी.एल. स्वर्णकार)

जयंती विशेष

महामना पं. मदन मोहन मालवीय

❒ टेकचन्द्र शर्मा

जब मालवीय जी मात्र बारह वर्ष के थे तभी से उनके हृदय में प्राणी मात्र के प्रति करुणा, दया की भावना हिलोरे ले रही थी। एक छोटा सा प्रसंग प्रस्तुत है।

उनके मकान के पास गली में एक कुत्ते के गहरा घाव हो गया था। वह दर्द के मारे चिल्लाता रहता था। लोग उसे देखते और निकल जाते थे। मालवीय जी कुत्ते के लिए दवा लाए। घाव को धो पूछ कर साफ किया, दवा लगाई। कुछ दिनों की सेवा सुश्रुषा से घाव ठीक हो गया। यह उनकी पशुओं-पक्षियों के प्रति करुणा की भावना। मालवीय जी को महामना की उपाधि जनता ने दी थी। प्राणियों के प्रति दया, शिक्षा प्रचार-प्रसार की लगन, देश सेवा की लगन के साथ-साथ वे धर्म परायण व्यक्ति थे। धर्म को व्याख्यायित करते हुए वे कहते हैं-यतु आर्याः क्रियमाणां प्रशंसति स धर्मः! कितनी सारगर्भित व्याख्या है धर्म की।

उनका कथन था तप एक आवश्यक धर्म है। उन्होंने तप की व्याख्या यूं की है-

घट घट व्यापक राम जप रे।
मत कर बैर झूठ मत माखै।
मत पर धन हर मत मद चाखै।
जीव मत मार, जुआ मत खेले।
मत पर तिय लिख, यही तेरी तप रे।

वे अजातशत्रु थे, महान थे, सर्वप्रिय थे। देशभक्ति में उनका कौन मुकाबला कर सकता। समाज भक्त थे। साथ ही वे समाज सुधारक भी थे। किन्तु समाज सुधार के कार्य उन्होंने समझा बुझाकर और उन्हें राजी करके ही किए थे। उनका विचार था कि समाज में विद्रोह करके या समाज से अलग होकर, हटकर आप सुधार का कोई ठोस कार्य नहीं कर सकते। समाज से अलग होकर यदि हम सुधार कार्य करना चाहेंगे तो समाज हमारी बात की तरफ ध्यान ही नहीं देगा। उल्टा विरोध ही करेगा। उन्होंने जो कुछ भी किया समाज को साथ लेकर, समझा बुझाकर ही किया समाज से लड़कर उसकी निन्दा, बुराई करके कुछ करेंगे तो और भी बिगाड़ होगा ये थी

उनकी मान्यता।

मालवीय जी भिक्षु सम्राट की पदवी से विभूषित थे। वे कहते थे-

मर जाऊं मांगू नहीं अपने हित के काज।
परकारज हित मांगियो मोहि न आवे लाज।।

बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय के लिए धन एकत्रित करने में कितना आत्म-त्याग किया, यह एक उदाहरण है।

राजा बलदेवदास बिड़ला से एक बहुत बड़ी रकम उन्होंने प्राप्त की। इस पर किसी कवि ने कहा हैः-

असर लुभान का प्यारे! तेरे बयान में है।
किसी की आँख में जादू तेरी जुबान में है।।

मैथिलीशरण गुप्त ने उनके बारे में लिखा हैः-

तुम्हें कुशल याचक कहते हैं,
किन्तु कौन तुमसा दानी।
अक्षय शिक्षा-सत्र तुम्हारा ब्रह्मण ब्रह्मज्ञानी।।
स्वयं-मनमोहन की तुम में तन्यमता है समाई।।
कल्याणी वाणी, जन जन में, छिपे धूनी रमाई।।

परोपकार और उदारताः हृदय बड़ा कोमल और भावनाएँ अत्यन्त उदार थी। अनेक बार दोषी व्यक्तियों की सहायता करने के लिए तैयार हो जाते थे।

धैर्य और ईश्वर विश्वासः उनके बड़े पुत्र रमाकान्त मालवीय की मृत्य के समय उनका धैर्य और ईश्वर विश्वास देखा गया।

मालवीय जी के विद्यार्थियों को उपदेशः यह शरीर परमात्मा का मन्दिर है। इसमें ईश्वर रहता है। इसको कभी भी अपवित्र मत होने देना।

इस मन्दिर को अपवित्र करने वाली कुछ बातें है। इनसे सदा बचोः- भूल कर असत्य न बोलें। इस पवित्र मन्दिर का रक्षक ब्रह्मचर्य है इसका पालन करो। यहीं हमें आत्मबल देता है जिसके द्वारा हम संसार को जीत सकते हैं। ब्रह्मचारी लक्ष्मण, अर्जुन और हनुमान को सदा ध्यान में रखो। महापुरुषों के चित्र अपने कमरे में लगाओ। उन्हीं के आचरण अपने मन में जमाओ। हृदय को कभी कलुषित न होने दो। मन को सदा उल्लसित रखो। सैनिक का आदर्श अपने सामने रखो। प्रातः पाँच बजे से पूर्व अवश्य उठ जाओ। नित्य कर्म से निवृत्त हो भगवान से प्रार्थना करो। डायरी लेखन रोज करो। उन्नति में बहुत सहायक सिद्ध होगी।

अपनी बुराइयों, दोषों अपराधों के लिए पश्चाताप करो। और परमात्मा से क्षमा माँगो। शीलवान बनो। शीलं परम् भूषणम्। कठोर काम में लगे रहने का अभ्यास करो। पढ़ते समय सारी दुनिया को एक ओर रख दो। और पुस्तक में डूब जाओ। यही समाधि है, यही उपासना है। यही पूजा है। कठिन परिश्रम करना सीखो उच्च और पवित्र आदर्शों को कभी मत भूलो। बुद्धिबल और बाहुबल दोनों का उपार्जन करो। सादा जीवन और उच्च विचार का आदर्श मत भूलो। स्त्रीजाति का सदा सम्मान करो। प्रकृति के साथ जीवन का मेल करो। हृदय को पवित्र, मन को विमल और आत्मा को शुद्ध रखो। संसार में जहाँ जावोगे मान के अधिकारी होवोगे।

आशा है विद्यार्थी समाज इन उपदेशों से लाभ उठाएगा। अन्त में मैं कहना चाहूँगा-

पं. मदन मोहन मालवीय महामना।
हिन्दू विश्व विद्यालय की की स्थापना।।
धर्म, राष्ट्रीयता की थी भावना।
सम्भव नहीं उनके व्यक्तित्व को मापना।।

पूर्व शिक्षा अधिकारी
शर्मा सदन-झुंझुनूं-333001
मो: 9672973792

जयन्ती विशेष

सिद्धांत प्रेमी : लौह पुरुष

❒ सलिज वर्मा

यही प्रसिद्ध लौह पुरुष प्रबल,
यही प्रसिद्ध शक्ति की शिला अटल,
हिला इसे सका कभी न शत्रु दल,
पटेल पर
स्वदेश को
गुमान है।
सुबुद्धि उच्च शृंग पर किए जगह,
हृदय गंभीर है समुद्र की तरह,
कदम छुए हुए जमीन की सतह,
पटेल देश का
निगहबान है।
हरेक पक्ष को पटेल तौलता,
हरेक भेद को पटेल खोलता,
दुराव या छिपाव से इसे गरज ?
कठोर नग्न सत्य बोलता
पटेल हिन्द की निडर जबान है।

फ्रैंक मोराएस ने लिखा है, ''एक विचारक आपका ध्यान आकर्षित करता है, एक आदर्शवादी आदर का आह्वान करता है, पर कर्मठ व्यक्ति, जिसको बातें कम और काम अधिक करने का श्रेय प्राप्त होता है, लोगों पर छा जाने का आदी होता है, और पटेल एक कर्मठ व्यक्ति थे।''

सरदार पटेल भारत के देशभक्तों में एक अमूल्य रत्न थे। वे भारत के राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में अक्षय शक्ति स्तम्भ थे। आत्म त्याग, अनवरत सेवा तथा दूसरों को दिव्य-शक्ति की चेतना देनेवाला उनका जीवन सदैव प्रकाश-स्तम्भ की अमर ज्योति रहेगा। वास्तव में वे आधुनिक भारत के शिल्पी थे। इस मितभाषी, अनुशासनप्रिय और कर्मठ व्यक्ति के कठोर व्यक्तित्व में बिस्मार्क जैसी संगठन कुशलता, कौटिल्य जैसी राजनीतिक सत्ता तथा राष्ट्रीय एकता के प्रति अब्राहम लिंकन जैसी अटूट निष्ठा थी। जिस अदम्य उत्साह, असीम शक्ति, मानवीय समस्याओं के प्रति व्यावहारिक दृष्टिकोण से उन्होंने निर्भय होकर नवजात गणराज्य की प्रारंभिक कठिनाइयों का समाधान अद्भुत सफलता से किया। उसके कारण विश्व के राजनीतिक मानचित्र में उन्होंने अमिट स्थान बना लिया।

सरदार पटेल मन, वचन तथा कर्म से एक सच्चे देशभक्त थे। वे वर्ण भेद तथा वर्ग भेद के कट्टर विरोधी थे। वे अन्तःकरण से निर्भीक थे। अद्भुत अनुशासन प्रियता अपूर्व संगठन शक्ति, शीघ्र निर्णय लेने की क्षमता उनके चरित्र के अनुकरणीय अलंकरण थे। कर्म उनके जीवन का साधन था। संघर्ष को वे जीवन की व्यस्तता समझते थे।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सरदार वल्लभ भाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर 1875 को नडियाद, गुजरात में एक लेवा पाटीदार कृषक परिवार में हुआ था। उनकी शिक्षा मुख्यतः स्वाध्याय से ही हुई। लन्दन जाकर उन्होंने बैरिस्टर की पढ़ाई की और वापस आकर अहमदाबाद में वकालत करने लगे। महात्मा गाँधी के विचारों से प्रेरित होकर उन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया। भारत की आजादी के बाद वे प्रथम गृहमंत्री और उप प्रधानमंत्री बने। बारदोली सत्याग्रह का नेतृत्व कर रहे पटेल को सत्याग्रह की सफलता पर वहाँ की महिलाओं ने सरदार की उपाधि प्रदान की। गृहमंत्री के रूप में उनकी पहली प्राथमिकता देशी रियासतों को भारत में मिलाना था। उसको उन्होंने बिना कोई खून बहाये सम्पादित कर दिखाया। केवल हैदराबाद के ऑपरेशन पोलो के लिए उनको सेना भेजनी पड़ी। भारत के एकीकरण में उनके महान योगदान के लिए उन्हें भारत का लौह पुरुष के रूप में जाना जाता है।

स्वतन्त्रता आन्दोलन में सरदार पटेल का सबसे पहला और बड़ा योगदान खेड़ा संघर्ष में हुआ। गुजरात का खेड़ा खण्ड उन दिनों भयंकर सूखे की चपेट में था। किसानों ने अंग्रेज सरकार से भारी कर में छूट की माँग की। जब यह स्वीकार नहीं किया गया तो सरदार पटेल, गाँधी जी व अन्य लोगों ने किसानों का नेतृत्व किया और उन्हें कर न देने के लिए प्रेरित किया। अन्त में सरकार झुकी और उस वर्ष करों में राहत दी गई। यह सरदार पटेल की पहली सफलता थी।

सरदार पटेल ने आजादी के ठीक पूर्व (संक्रमण काल) ही पीवी मेनन के साथ मिलकर देसी राज्यों को भारत में मिलाने के लिए कार्य आरंभ कर दिया था। पटेल व मेनन ने देसी राजाओं को बहुत समझाया कि उन्हें स्वायत्तता देना संभव नहीं होगा। परिणामस्वरूप तीन राज्यों को छोड़कर शेष सभी रजवाड़ों ने स्वेच्छा से भारत में विलय का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। केवल जम्मू व कश्मीर, जूनागढ़ तथा हैदराबाद के राजाओं ने ऐसा करना नहीं स्वीकारा। जूनागढ़ के नवाब के विरुद्ध जब बहुत विरोध हुआ तो वह भागकर पाकिस्तान चला गया और जूनागढ़

भी भारत में मिल गया। जब हैदराबाद के निजाम ने भारत में विलय का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया तो सरदार पटेल ने वहाँ सेना भेजकर निजाम का आत्मसमर्पण करा लिया। कश्मीर रियासत को नेहरु जी ने यह कहकर अपने पास रख लिया कि यह एक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है। निःसंदेह सरदार पटेल द्वारा 562 रियासतों का एकीकरण विश्व इतिहास का एक आश्चर्य था। भारत की यह रक्तहीन क्रांति थी।

गृहमंत्री के रूप में वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने भारतीय नागरिक सेवाओं (आई.सी.एस.) का भारतीयकरण कर इन्हें भारतीय प्रशासनिक सेवाएँ (आई.ए.एस.) बनाया। अंग्रेजों की सेवा करने वालों में विश्वास भरकर उन्हें राजभक्ति से देशभक्ति की ओर मोड़ा। वे भारत में मुस्लिम लीग तथा कम्युनिस्टों की विभेदकारी तथा रुस के प्रति भक्ति से सजग थे। लंदन के टाइम्स ने लिखा था ''बिस्मार्क की सफलताएँ पटेल के सामने महत्वहीन रह जाती हैं।'' पटेल सही मायनों में मनु के शासन की कल्पना थे। उनमें कौटिल्य की कूटनीतिज्ञता तथा महाराज शिवाजी की दूरदर्शिता थी। वे केवल सरदार ही न हीं बल्कि भारतीयों के हृदय के सरदार थे। पटेल ने उच्च शिक्षा पायी थी परन्तु उनमें किंचित भी अहंकार नहीं था। वे स्वयं कहा करते थे, ''मैंने कला या विज्ञान के विशाल गगन में ऊँची उड़ानें नहीं भरी। मेरा विकास कच्ची झोंपड़ियों में गरीब किसानों के खेतों की भूमि और शहरों के गंदे मकानों में हुआ है।'' मरणोपरान्त पटेल को सन् 1991 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया। 31 अक्टूबर, 2013 को सरदार वल्लभ भाई पटेल की 137 वीं जयन्ती के मौके पर गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात के नर्मदा जिले में सरदार पटेल के स्मारक का शिलान्यास किया। इसका नाम 'एकता की मूर्ति' (स्टैच्यू ऑफ यूनिटी) रखा गया है। यह मूर्ति स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी (93 मीटर) से दुगुनी ऊँची बनेगी।

महान आत्माओं की महानता उनके जीवन सिद्धांतों में होती है। उन्हें अपने सिद्धांत प्राणों से अधिक प्रिय होते है। सामान्य मानव जिन परिस्थितियों में अपनी निष्ठा से डिग जाता है, महापुरुष अडिग रहते हैं। सत्य उनका एकमात्र आश्रय होता है। उनका अपना पथ होता है, जिससे वे कभी विपथ नहीं होते। ऐसे ही सिद्धांतनिष्ठ सरदार वल्लभ भाई पटेल थे जिन्हें देश 'लौह पुरुष' के नाम से जानता है।

सत्यनिष्ठ महापुरुष को शत-शत नमन!!!

प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि. सुंई, बीकानेर
मो: 9414143728

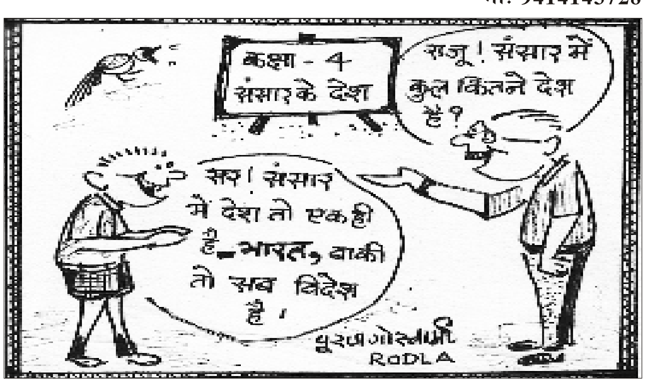

इस माह का गीत

प्रेरणा गीत

आँधी क्या है तूफान मिले
चाहे जितने व्यवधान मिले
बढ़ना ही अपना काम है
बढ़ना ही अपना काम है।

हम नई चेतना की धारा
हम अंधियारे में उजियारा
हम उस बयार के झोंके हैं,
जो हर ले सबका दुःख सारा।
चलना है, शूल मिले तो क्या
पथ में अंगार जले तो क्या
जीवन में कहाँ विराम है।
बढ़ना ही अपना काम है।।1।।

हम अनुगामी उन पाँवों के
आदर्श लिए जो बढ़े चले।
बाधाएँ जिन्हें डिगा न सकी,
जो संघर्षों में खड़े रहे।
सर पर मण्डराता काल रहे
करवट लेता भूचाल रहे।
पर अमिट हमारा नाम है
बढ़ना ही अपना काम है।।2।।

वह देखो! पास खड़ी मंजिल
इंगित से हमें बुलाती है।
साहस में बढ़ने वाले के
माथे पर तिलक लगाती है।
साधना न व्यर्थ कभी जाती
चल कर ही मंजिल मिल पाती।
फिर क्या बदली क्या घाम है
बढ़ना ही अपना काम है।।3।।

संकलनकर्ता-**कल्पना दीक्षित**
पुस्तकालयाध्यक्ष डाइट-उदयपुर मो. **9462677857**

राष्ट्रीय गणित दिवस

महानायक श्रीनिवास रामानुजन

❒ पवन के. भूत

श्रीनिवास रामानुजन (22 दिसम्बर 1887 से 26 अप्रैल 1920) एक महान गणितीय प्रतिभा थे। रामानुजन ने गणित स्कूल/कॉलेज में परम्परागत तरीके से न सीखकर स्वयं इसका सृजन किया। अपनी इस सृजन यात्रा में उन्होंने स्वतंत्र रूप से कार्य करते हुए लगभग 3900 प्रमेय/सूत्र प्रतिपादित किए तथा अनेक स्थापित प्रमेयों व सूत्रों को नए तरीके से ज्ञात किया। इस महान विभूति के जीवन से संबंधित कुछ रोचक तथ्यः-

1. अनन्त का ज्ञान :-गणित शिक्षक ने एक दिन कक्षा में बताया, ''किसी संख्या में उसी संख्या का भाग देने पर एक प्राप्त होता है। जैसे तीन व्यक्तियों में तीन आम बाँटे तो प्रत्येक को एक आम प्राप्त होगा, पाँच व्यक्तियों में पाँच आम बाँटे तो...।'' तभी तीसरी कक्षा में पढ़ रहे रामानुजन ने बात को काटते हुए कहा, ''पर क्या शून्य में शून्य का भाग देने पर एक प्राप्त होगा? शून्य व्यक्तियों में शून्य आम बाँटने पर क्या प्रत्येक को एक आम मिलेगा?'' अनन्त/अनिर्धार्य मान की इस उम्र में समझ उनकी गणित संबंधी अलौकिक क्षमताओं का प्रारंभिक प्रमाण था।

2. संस्कृति प्रेमः- रामानुजन की माँ ने उन्हें भारतीय रीति-रिवाजों व पुराणों की शिक्षा दी तथा उन्हें धार्मिक गीत गाना, सात्विक भोजन करना व पूजा में ध्यान लगाना सिखाया। भोजन व जलवायु संबंधी समस्याओं के कारण विदेश में इनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था लेकिन फिर भी उन्होंने आजीवन अपनी संस्कृति का पालन किया।

3. शिक्षाः- 16 वर्ष की आयु में दिसम्बर, 1903 में रामानुजन द्वारा मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण करने पर उन्हें छात्रवृत्ति मिली। लेकिन गणित के प्रति उनके एकतरफा अत्यधिक लगाव ने उनके अन्य विषयों को प्रभावित किया व इसी कारण वे अपनी उच्चतर औपचारिक शिक्षा पूर्ण नहीं कर सके।

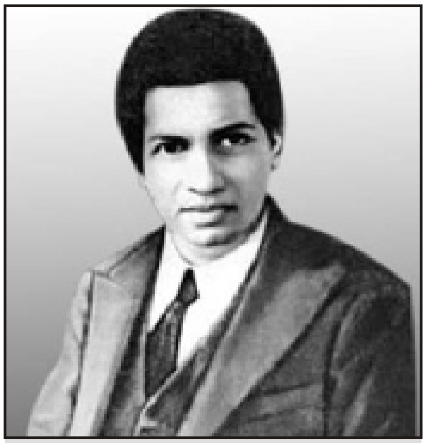

जन्म : 22 दिसम्बर 1887 इरोड, तमिलनाडु
पिता : के. श्रीनिवासन, साड़ी की दुकान पर मुनीम
माता : कोमल अटम्मल, गृहिणी
परिवार : वैष्णव ब्राह्मण परिवार, कुम्भकोणम (तमिलनाडु)
विवाह : 14 जुलाई 1909 जानकी अम्मल के साथ
कार्यक्षेत्र : गणित (संख्याज्ञान, अनन्त श्रेणियाँ, सतत् फलन, गणितीय विश्लेषण आदि)
प्रेरक, मित्र, मार्गदर्शक व प्रभावित करने वाले गणितज्ञः-

1. G.S. Carr
2. G.H. Hardy
3. J.E. Littlewood
4. Ramaswamy lyengar

उपलब्धि : रोयल सोसायटी इंगलैंड का सदस्य बनना

4. गरीबी और किस्मतः- औपचारिक कॉलेज शिक्षा में अगणितीय विषयों के कारण असफल होने के बाद भी पूर्ण मनोयोग के साथ रामानुजन बेहद मौलिक व उच्च स्तरीय गणितीय लेखन करते रहे। विवाह के बाद उन्हें जीवन यापन के लिए रोजगार की आवश्यकता पड़ी। ट्यूशन व एकाउण्ट कार्य के लिए लोगों से संपर्क कर रहे थे तभी भाग्य ने साथ दिया-रामानुजन को राजस्व विभाग में कार्य मिला तथा वहाँ उनके अधिकारी रामास्वामी अइयर थे जो स्वयं एक गणितज्ञ थे।

5. क्रान्तिकारी मोड़ः- 17 वर्ष की उम्र में जब एक सामान्य बालक कॉलेज में एडमिशन के लिए चक्कर लगाता है, उस समय तक रामानुजन ने जी.एस.कर्र की पुस्तक ''A Synopsis of Elementary Resolution in Pure and Applied Mathematics'' का गहनता से अध्ययन किया तथा बरनौली संख्या का विकास किया और यूलर नियतांक को दशमलव के 15 स्थानों तक ज्ञात किया। रामास्वामी अइयर (इंडियन मेथमेटिकल सोसायटी के संस्थापक) की सहायता से उसका कार्य इंडियन मेथमेटिकल सोसायटी के जर्नल में प्रकाशित हुआ।

6. सनकी या प्रतिभा...?:- रामानुजन ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के अनेक प्रोफेसरों से संपर्क करने का प्रयास किया लेकिन किसी ने उन्हें तवज्जों नहीं दी। सन् 1913 में जब वे 25 वर्ष के थे तब उनका एक पत्र केम्ब्रिज विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जी.एच.हार्डी को मिला। नौ पृष्ठ युक्त इस पत्र को पढ़कर वे उलझ गए- इसमें लिखे तथ्य उनकी समझ में नहीं आ रहे थे। कोई उनका मजाक तो नहीं उड़ा रहा है- यह विचार तक उनमें मन में आया।

तब हार्डी ने तत्कालीन उभरते हुए एक अन्य अपने गणितज्ञ मित्र जे.ई. लिट्लवुड को पत्र दिखाते हुए कहा कि यह कोई सनकी या विलक्षण प्रतिभा है। काफी समय तक इस 9 पृष्ठीय अलौकिक कार्य पर ध्यान केन्द्रित करने के बाद उन्होंने तय किया कि वे एक विलक्षण प्रतिभा के गणितीय कार्य का अवलोकन कर रहे है।

7. चमत्कारी/विलक्षण बालकः–

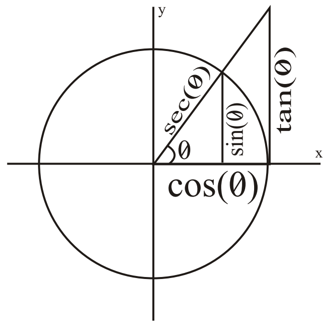

एस.एल. लियोनी द्वारा लिखित पुस्तक 'एडवांस ट्रिग्नोमेट्री' (उन्नत त्रिकोणमिति) पर 13 वर्ष की आयु में मजबूत पकड़ बनाना व इस पर स्वरचित प्रमेय व सूत्र स्थापित करना। मात्र 14 वर्ष की आयु तक वह गणित पूर्ण करना जो औपचारिक शिक्षा में 28 वर्ष की आयु तक पूर्ण होती है।

8. संख्याओं से मित्रताः– सुप्रसिद्ध टेक्सीकेब घटना (टेक्सी नं. 1729 पर हार्डी को दिया गया उनका जवाब), स्कूल में अपने सवाल-जवाबों से गणित शिक्षक की बोलती बंद कर देना, 4 × 4 का रामानुजन वर्ग बनाना (जिसमें सभी पंक्तियों व कॉलमों का योग बराबर हो तथा विकर्णों का योग भी उसके बराबर रखना), रामानुजन योग, विभाजन सिद्धांत आदि पर उनकी पकड़ को देखते हुए लिटिलवुड ने कहा, ''प्रत्येक धनात्मक पूर्णांक रामानुजन का अभिन्न मित्र है।''

9. अस्वीकरण :– श्रीनिवास ने जो तथ्य खोजे उनकी समालोचना हुई तथा अनेक तथ्य उस समय अस्वीकार्य भी रहे। उनकी मृत्यु के लगभग 70-75 वर्ष बाद संसार उनकी खोजों की यथार्थता व सत्यता को समझ पाया और तब उनके प्रमेयों से विश्व को सोचने व आगे बढ़ने की नई दिशा मिली।

10. फिल्मः– मेथ्यू ब्राउन ने प्रथम विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि में दो मूलतः बेमेल व्यक्तित्वों (हार्डी और रामानुजन) की मित्रता के साथ-साथ कुम्भकोणम से लेकर रामानुजन के संपूर्ण संघर्ष को दर्शाती एक फिल्म बनाई जिसका नाम था, 'The man who knew infinity' इस चलचित्र ने रामानुजन को फेम दिलाई। इस फिल्म में संघर्ष, सफलताओं व कमजोर स्वास्थ्य वाले इस सख्श को एक वास्तविक हीरो के रूप में दिखाया गया है।

11. सलाम (A Salute):– भारत सरकार ने श्रीनिवास रामानुजन के जन्म के 125 वर्ष बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 2012 को 'राष्ट्रीय गणित वर्ष' घोषित किया। उनका जन्म दिन 22 दिसम्बर प्रतिवर्ष राष्ट्रीय गणित दिवस के रूप में मनाया जाता है। **UNESCO** ने भी भारत सरकार के साथ मिलकर इस दिन से गणित से आनन्द फैलाने व आनन्द से गणित सिखाने का प्रचार-प्रसार किया। आधुनिक गणित के इस महानायक ने मात्र 32 वर्ष के जीवनकाल में गणित को जो ऊँचाइयाँ व आयाम प्रदान किए, उनके लिए पूरा शिक्षा विभाग इन्हें सलाम करता है। उन्होंने कहा था–

''एक समीकरण मेरे लिए कोई मायने नहीं रखती जब तक कि वो कुदरत (ईश्वर द्वारा रचित संसार) की व्याख्या न करे''

–रामानुजन

व्याख्याता
रा.उ.मा.वि. रानीगाँव, बाड़मेर (राज.)
मो: 9982157002

जन्म दिवस

रामानुजन : एक महान् गणितज्ञ

❐ **नफ़ीस अहमद**

भारत भूमि पर देवताओं की असीम कृपा रही है। यहाँ ऐसी अनेक महान आत्माओं ने जन्म लिया है जिन्होंने अपने ज्ञान व आदर्शों का लोहा न केवल भारत में ही मनवाया अपितु सम्पूर्ण विश्व का प्रतिनिधित्व भी किया। ऐसी ही एक महान आत्मा ने 22 दिसम्बर 1887 को भारत के कोयम्बटूर के ईरोड नामक गाँव में एक ब्राह्मण परिवार में जन्म लिया। इस महान आत्मा को विश्व ने श्रीनिवास रामानुजन इयंगर के नाम से जाना इनके पिता श्री श्रीनिवास इयंगर तथा माता श्रीमती कोमलताम्मल थीं। श्री रामानुजन एक महान गणितज्ञ के रूप में जाने जाते हैं। आपने अपनी प्रतिभा और लगन से गणित क्षेत्र में अद्भुत आविष्कार करते हुए भारत को गौरव प्रदान किया।

रामानुजन का जन्म एक पारस्परिक ब्राह्मण परिवार में हुआ तथा इनका बचपन प्राचीन मन्दिरों के लिए प्रख्यात कुम्भकोणम में व्यतीत हुआ था। रामानुजन बचपन से ही जिज्ञासु प्रवृत्ति के बालक थे। उनको प्रश्न पूछने का बहुत शौक था। दस वर्ष की आयु में उन्होंने प्राइमरी की परीक्षा में पूरे जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया और फिर आगे की पढ़ाई के लिए टाउन हाई स्कूल चले गए।

रामानुजन को बाल्यावस्था से ही गणित में रुचि थी। हाई स्कूल की परीक्षा आपने शानदार अंकों के साथ उत्तीर्ण की। फिर अपने बलबूते पर ही कॉलेज स्तर की गणित में निपुणता प्राप्त कर ली थी। गणित व अंग्रेजी में अच्छे अंकों के कारण आपको सुब्रमण्यम छात्रवृत्ति मिली और इन अद्भुत योग्यताओं के कारण ही आपको कालेज में आसानी से प्रवेश भी मिल गया।

रामानुजन की गणित में विशेष रुचि थी। यह विषय उनके लिए इतना रोचक था कि वे अन्य विषयों पर ध्यान ही नहीं दे पाते थे। इतिहास एवं जीव विज्ञान के कालांशों में भी रामानुजन गणित के प्रश्न ही हल करते रहते थे परिणामतः ग्यारहवीं कक्षा में वे गणित में तो उत्तीर्ण हो गए परन्तु अन्य विषयों में सफल नहीं हो पाए। दूसरी ओर उनके घर की आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं थी। अतः रामानुजन ने ट्यूशन पढ़ाने के साथ खाते बही का काम शुरु कर दिया। उनके पास कोई स्थाई नौकरी नहीं थी। बस भगवान पर भरोसा था। ट्यूशन आदि से रामानुजन को कुल पाँच रुपये मासिक मिलते थे। इतनी कम राशि में उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति बड़ी मुश्किल से होती थी। खाली समय में वे अपने प्रिय विषय गणित पर शोध कार्य करते रहते थे। इसी बीच माता-पिता ने 1908 में आपका विवाह जानकी देवी से करवा दिया। विवाह के बाद आपको हर जिम्मेदार व्यक्ति की

तरह आजीविका की चिन्ता सताने लगी। रोजगार की तलाश आपको मद्रास तक ले गई परन्तु वहाँ भी आपको कोई काम नहीं मिला! इसी दौरान मद्रास के डिप्टी कलेक्टर श्री रामास्वामी से आपका मिलन हुआ। रामास्वामी स्वयं गणित में रुचि रखते थे तथा उस समय के अच्छे गणितज्ञ भी थे उन्होंने रामानुजन के शोधकार्य को देखा तो वे दंग रह गए। रामास्वामी ने जिलाधिकारी महोदय की सहायता से उनको पच्चीस रुपये मासिक की छात्रवृत्ति का प्रबन्ध करवा दिया। इन्हीं दिनों रामानुजन ने अपना शोधपत्र प्रकाशित किया जिसका शीर्षक था– 'बरनौली संख्याओं के कुछ गुण!' यह शोधपत्र 'जर्नल आफ इण्डियन मेथेमेटिकल सोसायटी' में प्रकाशित हुआ। जब आप मद्रास पोर्ट में क्लर्क के रूप में कार्यरत थे तब आप पर कामकाज का बोझ कम था अत: आपका अधिकतर समय गणित के शोधकार्य मे ही बीतता था। आप रात-रात भर बैठकर गणित के सूत्र बनाते तथा शोधकार्य करते रहते। अब रामानुजन के गणित के कारनामों की चर्चा होने लगी। रामानुजन ने अपने गणितीय सिद्धान्तों के कुछ प्रोफेसर शेषू अय्यर को दिखाए तो उन्होंने इनका गहन अध्ययन किया। वे उनकी उपलब्धियों से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने रामानुजन के तैयार किए गए समस्त कागजात लन्दन के प्रोफेसर हार्डी को जो उस समय के प्रसिद्ध गणितज्ञों में से एक थे को भेज दिए। आरम्भ में प्रोफेसर हार्डी भी रामानुजन के कार्य को समझ नहीं पाए परन्तु जब उन्होंने अपने मित्रों की सहायता से सबकुछ जान-समझ लिया तो उन्हें इस बात का आभास हो गया कि रामानुजन गणित के क्षेत्र में एक दुर्लभ व्यक्तित्व हैं और उनको अपने शोधकार्य के लिए इंग्लैण्ड आना चाहिए। यहाँ यह कहना उचित होगा कि प्रोफेसर हार्डी की मित्रता रामानुजन के जीवन का एक बहुत बड़ा मोड़ थी।

प्रोफेसर हार्डी ने बिना किसी विलम्ब के रामानुजन को कैम्ब्रिज आने के लिए आमन्त्रित किया पर अपने व्यक्तिगत कार्यों व धन की कमी के चलते उन्होंने वहाँ जाने से मना कर दिया। उनके इस निर्णय ने प्रोफेसर हार्डी को बहुत निराश किया, पर भगवान को कुछ और ही स्वीकार था अत: भाग्य ने उनका साथ दिया और रामानुजन को मद्रास वि.वि. से शोधवृत्ति मिल गई। लिखने की आवश्यकता नहीं कि इससे उनका जीवन काफी हद तक सरल हो गया। उनको शोधकार्य के लिए भी अच्छा समय मिल गया। उधर प्रोफेसर हार्डी अपने पत्रों के द्वारा उन्हें बराबर निमंत्रण दिए जा रहे थे। अन्तत: रामानुजन ने अपनी सहमति उन्हें भेज ही दी! प्रोफेसर हार्डी ने उनके लिए ही आर्थिक सहायता का भी प्रबन्ध कर दिया। यहाँ इस बात का उल्लेख आवश्यक है कि रामानुजन ने कैम्ब्रिज जाने से पूर्व करीब 3000 से भी अधिक नए सूत्रों को अपनी नोटबुक में लिख लिया था।

रामानुजन ने लंदन की धरती पर कदम रखा उससे पहले ही प्रोफेसर हार्डी ने उनके लिए समस्त व्यवस्थाएँ कर रखी थीं अत: वहाँ उनको कोई संघर्ष नहीं करना पड़ा बल्कि उनके बाद जीवन में बहुत ही उल्लेखनीय परिवर्तन आया। प्रोफेसर हार्डी के साथ मिलकर उन्होंने उच्च कोटि के शोधपत्रों का प्रकाशन करवाया। इसी श्रृंखला में एक विशेष शोध के लिए रामानुजन को केम्ब्रिज विश्वविद्यालय द्वारा बी.ए. की उपाधि प्रदान की गई परन्तु रामानुजन के लिए वहाँ की जलवायु प्रतिकूल साबित हुई और वे क्षय रोग का शिकार हो गए। उस समय क्षय रोग की कोई कारगर चिकित्सा उपलब्ध नहीं थी। रोगी को सेनेटोरियम में रह कर ही अपने स्वस्थ होने के प्रयास करने होते थे। रामानुजन को भी कुछ दिनों तक वहाँ रहना पड़ा। वहाँ भी रामानुजन गणित के सूत्रों की नई नई कल्पनाएँ किया करते थे। रामानुजन को रॉयल सोसायटी का फेलो नामित किया गया। सोसायटी के इतिहास में वे इतनी कम आयु के पहले सदस्य थे। जब यह समाचार भारत में उनके शुभचिन्तकों ने सुना तो पूरे भारत में उत्सव का माहौल बन गया। सोसायटी की सदस्यता के ट्रिनिटी कॉलेज की फेलोशिप पाने वाले पहले भारतीय बने। सबकुछ अच्छी तरह से चल रहा था पर उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था। डॉक्टर्स की राय से उनको भारत लौटना पड़ा। यहाँ आते ही मद्रास विश्वविद्यालय में उन्हें प्राध्यापक की नौकरी मिल गई।

भारत आने के बाद भी रामानुजन का स्वास्थ्य गिरता ही चला गया! बीमारी की हालत में भी उन्होंने माक थीटा फंक्शन पर एक उच्च स्तरीय शोधपत्र लिखा। रामानुजन द्वारा इस फलन का उपयोग गणित ही नहीं बल्कि चिकित्साविज्ञान में कैंसर को समझने के लिए भी किया जाता है।

समय के साथ उनका स्वास्थ्य गिरता चला गया। डॉक्टर्स तो पहले ही जवाब दे चुके थे! फिर दिनांक 20 अप्रैल 1920 को प्रात:काल के समय वह मनहूस घड़ी आई। जब वे अचेत हो गए! चिकित्सकों ने एक बार फिर इस महान् गणितज्ञ को बचाने के लिए अपने समस्त प्रयास कर डाले लेकिन उनका हर प्रयास व्यर्थ गया और दोपहर होते होते यह महान आत्मा इस संसार से सदा के लिए विदा हो गई! उस समय उनकी आयु 33 वर्ष की थी। उनकी मृत्यु के समाचार से राष्ट्र ही नहीं अपितु सम्पूर्ण संसार में शोक की लहर दौड़ गई। नि:सन्देह उनकी मृत्यु एक अपूरणीय क्षति थी। एक अत्यन्त ही सामान्य परिवार में जन्म लेकर सम्पूर्ण विश्व को अपनी नवीन शोधों के द्वारा आश्चर्य में डालने वाले रामानुजन ने अपनी इस यात्रा में भारत को अपूर्व गौरव प्रदान किया। 1976 में रामानुजन का वह पुराना रजिस्टर जिस पर वे अपने प्रमेय तथा सूत्र लिखा करते थे अचानक ट्रिनीटी कॉलेज के पुस्तकालय में मिल गया। यह रजिस्टर करीब एक सौ पृष्ठों का था। इसे बाद में रामानुजन की नोट बुक के नाम से जाना गया। अब तो मुम्बई के टाटा मूलभूत अनुसन्धान संस्थानों द्वारा इसका प्रकाशन भी हो चुका है।

आज रामानुजन, भारत का महान सपूत हमारे बीच नहीं है। आमजन की कुछ ऐसी ही मान्यता है परन्तु सत्यता यह है कि उनके महान कार्यो ने रामानुजन को सदा के लिए अमर कर दिया है। अत: वे कल भी हमारे साथ थे। आज भी हैं और सदैव हमारे साथ ही रहेंगे।

व्याख्याता
भैरव राज.उ.मा. विद्यालय, भीण्डर (उदयपुर)

वृक्ष भगवान का ही रूप है जो पत्थर मारने वाले को भी फल देता है। स्वयं धूप में रहकर राहगीर को छाया देता है। आसमान की ऊँचाइयों को छूने पर भी अपने धरातल को नहीं भूलता और हर मौसम में अडिग रहकर आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को प्रसन्नता प्रदान करता है; सबको प्राणवायु देता है। आर्थिक दृष्टि से देखा जाए तो एक पेड़ अपने 50 वर्ष के जीवन काल में 75 लाख रु. की आय दे सकता है।

जयन्ती विशेष

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

❐ विवेकानन्द आर्य

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद नाम का स्मरण होते ही आँखों के सामने एक सादगी और सरलता भरे व्यक्तित्व वाले व्यक्ति की छवि उपस्थित हो जाती है। इन्हें प्यार से हम सब राजेन्द्र बाबू कहते हैं। स्वाधीन भारत के सर्वप्रथम राष्ट्रपति के पद पर रहते हुए पूर्णयता अहंकारमुक्त रहने वाले तथा किसान जैसी वेशभूषा में रहने वाले व्यक्ति थे डॉ. राजेन्द्र प्रसाद।

जन्म और शिक्षा : बिहार प्रान्त के एक छोटे से गाँव जीरादेयू में 3 दिसम्बर 1884 को डॉ. साहब का जन्म हुआ था। पिता महादेव सहाय की तीन बेटियाँ और दो बेटे थे, जिनमें वे सबसे छोटे थे। परिवार संयुक्त परिवार था। परिवार में सबसे छोटे होने के कारण वे सबके दुलारे थे। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को अपनी माता और बड़े भाई महेन्द्र प्रसाद से बहुत स्नेह था। डॉ. साहब को बचपन में गाँव के मठ में रामायण सुनना व स्थानीय रामलीला देखना बड़ा अच्छा लगता था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव जीरादेयू में ही हुई। तत्पश्चात् कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक किया। इसके साथ ही बी.एल., कानून में मास्टर डिग्री और डॉक्टरेट भी की। चूँकि उस समय गाँव परम्पराओं पर चलता था और एक परम्परा बाल विवाह की थी। इसके चलते इनका विवाह भी मात्र बारह वर्ष की आयु में राजवंशी देवी से हो गया।

स्वतंत्रता आंदोलन में भागीदारी: कानून में मास्टर डिग्री व डॉक्टरेट करने के पश्चात् डॉ. राजेन्द्र प्रसाद कलकत्ता में ही वकालत करने लगे। धीरे-धीरे इनकी ख्याति प्रसिद्ध वकील के रूप में होने लगी। वकालत खूब चलने लगी। इसी दौरान 'सर्वेंटस ऑफ इण्डिया' सोसायटी की स्थापना करने वाले देशभक्त गोपाल कृष्ण गोखले के कहने पर वे वकालत के साथ-साथ अंग्रेजों के खिलाफ आन्दोलनों में भाग लेने लगे। सतीशचन्द्र मुखर्जी की 'डॉन सोसायटी' में शामिल होने पर उनकी मुलाकात देश के बड़े-बड़े नेताओं से हुई। सन् 1911 में जब बिहार अलग प्रान्त बना तो ये पटना आ गए। वहीं चम्पारण आन्दोलन के दौरान इनकी भेंट गाँधीजी से हुई। चम्पारण में गाँधीजी ने एक तथ्य अन्वेषण समूह भेजे जाते समय उनसे अपने स्वयंसेवकों के साथ आने का अनुरोध किया था। डॉ. साहब महात्मा गाँधी की निष्ठा, समर्पण एवं साहस से बहुत प्रभावित हुए और 1921 में उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय के 'सीनेटर' का पदत्याग कर दिया। गाँधीजी ने जब विदेशी संस्थाओं के बहिष्कार की अपील की थी तो उन्होंने अपने पुत्र मृत्युंजय प्रसाद, जो एक मेधावी छात्र छात्र थे, उन्हें कलकत्ता (अब कोलकाता) विश्वविद्यालय से हटाकर बिहार विद्यापीठ में दाखिल करवाया था। उन्होंने 'सर्चलाइट' और 'देश' जैसी पत्रिकाओं में इस विषय पर बहुत से लेख लिखे थे और इन अखबारों के लिए अक्सर वे धन जुटाने का काम भी करते थे। 1914 में बंगाल और बिहार आई बाढ़ में उन्होंने काफी बढ़ चढ़कर सेवा कार्य किया था।

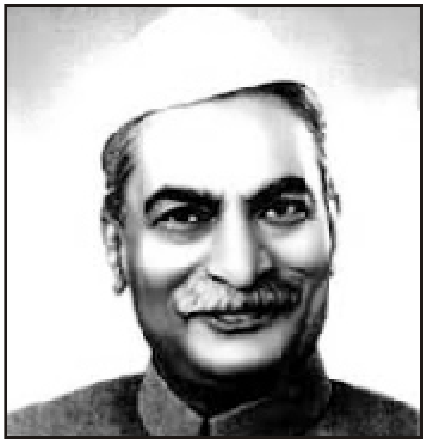

गाँधीजी के नमक सत्याग्रह में भी इन्होंने प्रभावी भूमिका अदा की। ये महसूस करते थे कि नमक पर कर लगाना अमानुषिक कार्य था। बिहार में नमक सत्याग्रह का आरम्भ इनके नेतृत्व में हुआ। पुलिस आक्रमण के बावजूद नमक कानून के उल्लंघन के लिए पटना में नखास तालाब चुना गया। स्वयंसेवकों के दल उत्साहपूर्वक एक के बाद एक आते और नमक बनाने के लिए गिरफ्तार कर लिए जाते। राजेन्द्र बाबू ने अहिंसक रहने के लिए स्वयंसेवकों से अपील की। नमक कानून तोड़ने के विरोध में इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और इन्हें जेल भेज दिया गया।

1934 में बिहार में भयंकर भूकम्प आया था। इस समय राजेन्द्र प्रसाद जेल में थे। जेल से दो वर्ष में छूटने के पश्चात् भूकम्प पीड़ितों के लिए धन जुटाने में तन-मन-धन से जुट गए। सिंध एवं क्वेटा के भूकम्प के समय भी इन्होंने कई राहत शिविरों का इंतजाम अपने हाथों में लिया था। 1934 में ही ये भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के मुम्बई अधिवेशन में अध्यक्ष चुने गए। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के 1939 में अध्यक्ष पद से त्यागपत्र देने पर एक बार पुनः अध्यक्ष का पदभार इन्होंने ग्रहण किया था।

1946 में भारत आने वाले ब्रिटिश केबिनेट मिशन के प्रयास असफल रहे। यद्यपि केन्द्रीय और प्रान्तीय विधानमण्डलों के चुनाव और एक अंतरिम राष्ट्रीय सरकार बनाने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया था। 1946 में जवाहरलाल नेहरु के नेतृत्व में बनी अंतरिम सरकार में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को कृषि एवं खाद्य मंत्री नियुक्त किया गया। इसी दौरान कलकत्ता में साम्प्रदायिक दंगे आरम्भ हुए और पूरे बंगाल और बिहार में फैल गए। डॉ. साहब ने नेहरु जी के साथ दंगा ग्रस्त क्षेत्रों का दौरा करते हुए लोगों के मानसिक संतुलन एवं विवेक बनाए रखने की अपील की। स्वाधीनता से पूर्व 1946 में हमारा संविधान बनाने के लिए एक संविधान सभा का गठन किया गया था जिसके अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को बनाया गया था। यह उनकी निःस्वार्थ राष्ट्र सेवा के प्रति श्रद्धांजलि थी।

स्वतंत्रता प्राप्ति और राष्ट्रपति : लम्बे संघर्ष और अनगिनत बलिदान के पश्चात् 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। यद्यपि राजेन्द्र प्रसाद के अखण्ड भारत का सपना विभाजन से खण्डित हो गया था। संविधान

निर्मात्री सभा ने 26 नवम्बर 1949 को भारत की जनता को अपना संविधान दे दिया जिसमें भारत को गणराज्य का दर्जा दिया गया था। 26 जनवरी, 1950 को भारत गणतंत्र बना और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को भारत का प्रथम राष्ट्रपति बनाया गया। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पहले ऐसे राष्ट्रपति हैं जिन्होंने दो बार राष्ट्रपति का पद संभाला है।

हिन्दी एवं भारतीय भाषा प्रेम : यद्यपि राजेन्द्र प्रसाद की पढ़ाई फारसी एवं उर्दू से शुरू हुई थी तथापि बी.ए. में उन्होंने हिन्दी ही ली। वे अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू, फारसी एवं बंगाली भाषा और साहित्य से पूरी तरह परिचित थे तथा इन भाषाओं में सरलता से प्रभावकारी व्याख्या भी दे सकते थे। गुजराती का व्यावहारिक ज्ञान भी उन्हें था। एम.एल. परीक्षा के लिए हिन्दी कानून का उन्होंने संस्कृत ग्रंथों से ही अध्ययन किया था। हिन्दी के प्रति उनका अगाध प्रेम था। हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं जैसे भारत मित्र, भारतोदय, कमला आदि में उनके लेख छपते थे। उनके निबन्ध, सुरुचिपूर्ण तथा प्रभावकारी होते थे। 1912 में जब अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन कलकत्ते में हुआ तब स्वागतकारिणी समिति के वे प्रधानमंत्री थे। 1926 में वे बिहार प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के और 1927 में उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन में सभापति थे। हिन्दी में उनकी 'आत्मकथा' बड़ी प्रसिद्ध पुस्तक है। अंग्रेजी में भी उन्होंने कुछ पुस्तकें लिखी हैं। उन्होंने हिन्दी के 'देश' और अंग्रेजी के 'पटना लॉ वीकली' समाचार पत्र का सम्पादन भी किया था।

कृतियाँ : डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने अपनी 'आत्मकथा' (1946) के अतिरिक्त कई पुस्तकें लिखीं जिनमें बापू के कदमों में (1954), इण्डिया डिवाइडेड (1946), सत्याग्रह ऐट चम्पारण (1922), गाँधीजी की देन, 'भारतीय संस्कृति व खादी का अर्थशास्त्र' इत्यादि उल्लेखनीय है।

भारत रत्न : सन् 1962 में अवकाश प्राप्त करने पर राष्ट्र ने उन्हें 'भारत रत्न' की सर्वश्रेष्ठ उपाधि से सम्मानित किया। यह उस पुत्र के लिए कृतज्ञता का प्रतीक था जिसने अपनी आत्मा की आवाज सुनकर आधी शताब्दी तक अपनी मातृभूति की सेवा की थी।

निधन : अपने जीवन के आखिरी महीने बिताने के लिए उन्होंने पटना के निकट सदाकत आश्रम चुना। यहाँ पर ही 28 फरवरी, 1963 को उनके जीवन की कहानी समाप्त हुई। यह कहानी थी श्रेष्ठ भारतीय मूल्यों और परम्परा की चट्टान सदृश्य आदर्शों की।

देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद भारत के सर्वोच्च पद पर पहुँचने वाले असाधारण व्यक्तित्व थे। राष्ट्र के प्रति उनका समर्पण भाव हमें नतमस्तक करता है। उनके कार्यों और व्यवहार से प्रभावित होकर ही सरोजिनी नायडू ने कहा था ''उनके जीवन की कहानी सोने की कलम मधु में डूबाकर लिखनी होगी।''

नायब तहसीलदार
सी-56, खतुरिया कॉलोनी, बीकानेर
मो. 9460093490

राष्ट्रीय सम्पत्ति की सुरक्षा का ध्यान

भारत के प्रथम राष्ट्रपति स्व. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी के जीवन की एक घटना है। बात तो है छोटी, पर इस तथ्य की द्योतक है कि साधुभाव, सत्पुरुषों की प्रत्येक गतिविधि से प्रकट होता है, केवल पूजा पाठ से नहीं। हुआ यह है कि सादगी प्रिय राष्ट्रपति के पैरों में रात्रि को जब पीड़ा होने लगी तो सचिव को पता चला कि उनके जूतों के तले इतने घिस गये थे कि उनमें उभरी कीलें चुभने लग गयी। उन्होंने सचिव से कहा-''कल जूते मंगा लेंगे।''

सचिव महोदय अगले दिन 16 रुपये के जूते खरीद लाए। मूल्य पूछने पर राजेन्द्र प्रसाद जी को धक्का लगा। वे बोले-''गत वर्ष मैंने जूते 12 रुपए में लिए थे। इतने कीमती जूते मुझे नहीं चाहिए।'' सचिव ने कहा ''जी वहाँ कम मूल्य वाले भी थे पर वे कमजोर थे। यह जोड़ा अधिक मुलायम है।'' राष्ट्रपति का उत्तर था-''मेरे पैर तो कम कीमत वाले कड़े जूते के अभ्यस्त हैं। अतः इन्हें लौटाकर वही मंगा दें।'' जैसे ही सचिव लौटने के लिए जाने लगे तो राष्ट्रपति महोदय बोले-''जितना रुपया बदलवाने में बचाओगे उतना कार में जाकर पेट्रोल में खर्च कर दोगे। किसी आने-जाने के हाथ बदलवा देना।'' राष्ट्र की सम्पत्ति की एक-एक पाई का ध्यान रखने वाले राजेन्द्र बाबू के लिए एक छोटी सी बात भी गम्भीर थी।

जीवित कई हजार

एक दिन गुरु तेगबहादुर कश्मीर से आए अत्याचार पीड़ित लोगों की करुण कथा सुनकर उदास बैठे थे। उन्हें हिन्दुओं पर होने वाले अत्याचार देखकर मार्मिक पीड़ा होती थी। बालक गोविन्दराय अपने पिता के पास बैठा था। उसने पिताजी से उनकी उदासीनता का कारण पूछा। गुरु तेगबहादुर ने कहा, ''बेटा इस समय देश और धर्म को किसी महान आत्मा के बलिदान की आवश्यकता है।'' बालक गोविन्द की तेजस्विता मुखर हो उठी। उसने कहा- ''पिताजी, आपसे बढ़कर महान आत्मा इस समय संसार में कौन हो सकता है? आप ही धर्म की रक्षा करें।'' गुरु तेगबहादुर बालक की बात सुनकर गंभीर हो गए। मन ही मन दृढ़ निश्चय करके उन्होंने कश्मीर के अत्याचारी नवाब को कहला भेजा कि ''यदि वह गुरु तेगबहादुर को इस्लाम स्वीकार करा दे तो सब हिन्दू मुसलमान हो जाएँगे।'' नवाब ने इस बात की शिकायत अपने बादशाह औरंगजेब से की। क्रूर और अत्याचारी औरंगजेब ने गुरुजी को दिल्ली बुलाकर बड़ी नृशंसतापूर्वक उनका वध करवा डाला। गुरु गोविन्दराय पर अपने पिताजी के बलिदान का गहरा प्रभाव हुआ। उन्होंने पंच प्यारों का चयन करके सबके नाम में सिंह शब्द जोड़ते हुए 'खालसा पंथ' का निर्माण किया और इस प्रकार आक्रमणकारी मुसलमानों के अत्याचारों को समाप्त करने के लिए संगठित सैनिक शक्ति तैयार की। उनके प्रयास से उस काल में धर्म की रक्षा के लिए कटिबद्धता संभव हो सकी।

गुरु गोविन्दसिंह के चारों पुत्र देश धर्म की रक्षा में बलिदान हो गए। गुरुजी के बलिदान ने हिन्दू समाज की सुप्त चेतना में चिन्गारी का कार्य किया। हिन्दु समाज चीत्कार कर जाग उठा और औरंगजेब का कश्मीर के ब्राह्मणों को मुसलमान बनाने का स्वप्न, स्वप्न ही रह गया तथा हिन्दु समाज में भी एक प्रबल चेतना की लहर दौड़ गई। उस समय उन्होंने कहा था-

इन पुत्रन के सीस पे, वारि दिये सुत चार।
चार मुए तो क्या भया, जीवित कई हजार।।

आज देश को ऐसे ही राष्ट्रभक्तों की आवश्यकता है।

बाल शिक्षण

शिक्षाविद् गिजुभाई बधेका

❒ रविन्द्र कुमार मारू

वकालात त्याग 1920 में बाल-मन्दिर की स्थापना कर बाल-शिक्षण में नवीन प्रयोग करने वाले देश के अग्रणी शिक्षाविद् गिजुभाई बधेका का जन्म 15 नवम्बर, 1885 में चित्तल, सौराष्ट्र में हुआ। बालपन में आप स्कूली शिक्षा व्यवस्था के यातनापूर्ण माहौल से आहत रहे, बाद में उच्च शिक्षा मुम्बई में प्राप्त की।

गिजुभाई बच्चों की आजादी के प्रबल समर्थक रहे जिनकी मान्यता थी कि बच्चों को स्वतंत्रतापूर्ण शिक्षण व्यवस्था से ही पूर्ण शिक्षित किया जा सकता है। वे बच्चों के साथ मारपीट, डाँट-फटकार, यातना-प्रताड़ना से पढ़ाने के सख्त खिलाफ थे। उन्होंने बच्चों को लाड़-प्यार से पढ़ाने के पक्ष में निरन्तर चिंतन-मनन एवं विविध प्रयोग किए।

गिजुभाई बेहद मेहनती, निष्ठा के पक्के व दृढ़ संकल्पवान व्यक्तित्व के धनी थे। इसीलिए आपने शिक्षण के एक ऐसे संसार की रचना की जहाँ कष्ट, यातना, अपमान, गाली-गलोच, डाँट-फटकार, कुटाई-पिटाई के लिए कोई स्थान न था। वे मॉन्टेंसरी शिक्षा पद्धति के सिद्धांतों के ज्ञाता थे, अतः भारतीय परिवेश के सन्दर्भों में इसे लागू कर बच्चों में रोचक गतिविधियों का बीजारोपण किया और इस क्षेत्र में असीम सफलता पाई। 1916 से 1936 तक वे लगातार बाल शिक्षा के अनेक आयामों पर चिंतन-मनन करते रहे, अधिक से अधिक समय बच्चों के साथ बिताते, बातचीत करते, उनके कोमल मन में झाँकने और समझने का निरन्तर प्रयत्न करते थे। वे बच्चों का विश्वास जीतने में महारथी थे, क्योंकि वे बच्चों की बातों को बड़े चाव से सुनते थे, समस्याओं को दूर करने के लिए तत्पर रहते थे।

बच्चों के इन्द्रिय विकास के खेल ईजाद करने, शान्ति की क्रीड़ा, शैक्षिक भ्रमण, हाथ के काम, संगीत, नाटक, रचनात्मक कार्यो, बाल-संग्रहालयों, कथा-कहानी द्वारा शिक्षण आदि विभिन्न प्रवृत्तियों के आयोजन में उन्होंने लगभग अपना सारा जीवन बिताया। बाल-मन्दिर में

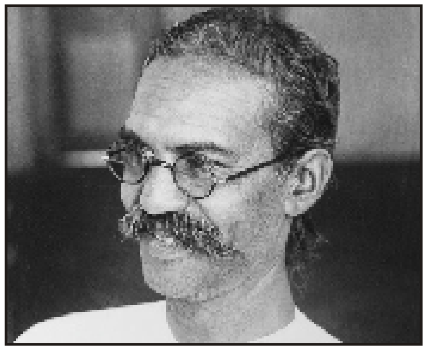

बच्चे हँसते-खिलखिलाते, उत्साह-उमंग पूर्वक दिनभर इच्छानुसार गतिविधियों में लगे रहते और जीवन रक्षा के उपयोगी पाठ पढ़ते। दिनभर में इनके चेहरे पे थकान नाम की कोई चीज नज़र नहीं आती थी, वे पूरे दिन पढ़ते-लिखते फिर भी शाम को इनके चेहरे फूलों की तरह खिले रहते थे। यहाँ शिक्षण विषयों से इतर बच्चों के चरित्र-निर्माण के अंतर्गत ईमानदारी, सत्य, परिश्रम, मैत्री, अहिंसा, करुणा, स्नेह, दया, परोपकार, सहयोग जैसे सद्गुणों को सफलतापूर्वक सिखाया जाना ही गिजुभाई की महान उपलब्धि मानी जाती है।

गिजुभाई प्रयोगधर्मी शिक्षक तो थे ही, साथ ही साथ बाल-साहित्य के प्रणेता भी रहे। आपने दो सौ से अधिक बाल पोथियाँ गुजराती भाषा में लिखीं और बच्चों को स्वाध्यायी बनाने के लिए प्रेरणास्रोत बने। साथ ही शिक्षकों को बाल-शिक्षण के नवीन सिद्धांतों एवं विधियों का प्रशिक्षण देने के निमित्त अध्यापक मंदिर की स्थापना की। माता-पिता तथा अध्यापकों के लिए अनेकानेक उपयोगी पुस्तकें लिखीं।

महात्मा गाँधी गिजुभाई की प्रत्येक गतिविधि से प्रसन्न और आश्वस्त थे। 23 जून, 1939 को गिजुभाई का देहावसान होने पर महात्मा गाँधी ने लिखा, ''गिजुभाई के बारे में कुछ लिखने वाला मैं कौन हूँ? उनके कार्यो ने तो मुझे सदैव मंत्रमुग्ध किया है। मुझे दृढ़ विश्वास है कि उनका कार्य आगे बढ़ चलेगा।''

शोधार्थी, बाल विद्यालय केम्पस
बारां रोड, कोटा-324001

हीरों का हार

एक जौहरी था। वह दुकानदार होकर भी विचार और व्यवहार में संत था। लोभ और गलत ढंग से धन जोड़ने से घृणा करता था। एक बार एक महिला सवेरे-सवेरे उसके यहाँ आकर बोली- ''सेठजी! कोई सस्ता-सा हार चाहिए जो 15 रुपए के अन्दर ही मिल जाए; कारण, मैं निर्धन हूँ लेकिन मेरी लड़की हार के लिए बहुत हठ कर रही है।'' जौहरी ने कहा-''15 रुपये क्या, मैं तुम्हें इससे भी कम 10 रुपये में ही एक हार दे देता, किंतु अलमारी की चाबी घर पर ही रह गयी है। हाँ, दोपहर को या शाम को आना, तब दे सकूँगा।'' बाद में दोपहर को सेठ भोजन करने घर चला गया और उस अलमारी की चाबी घर से दुकान पर भेज दी। सायंकाल सेठ दुकान पर आया तो उसे मुनीम ने बता दिया कि ''दस रुपये वाला नकली हीरों का एक हार वह महिला ले गयी जिससे आपकी बात हुई थी।'' कई दिन बाद सेठ के पास एक ग्राहक आया जो वास्तविक हीरों का एक बहुमूल्य हार खरीदना चाहता था। सेठ ने अलमारी में जहाँ वह हार रखा था, वहाँ उसे हार मिला नहीं। उसने मुनीम से उस हार के बारे में पूछा और जब उसने कहा, ''मुझे नहीं पता'' तो उसे नौकरी से निकाल दिया।

महीने भर बाद वही महिला फिर सेठ के पास आयी और गले की माला दिखाकर कहा-''इस हार का एक मनका टूट गया है, आप नया मनका वैसा ही मुझे दे दें।'' सेठ ने अलमारी से एक मनका निकाल कर उसे दे दिया। महिला ने उसका मूल्य पूछा तो सेठ ने कहा-''तीन हजार रुपये।'' तब तो वह बड़ी परेशान हुई, सेठ ने कहा-''आपको विश्वास न होगा कि जो माला आप ले गयी थी, उसका मूल्य साठ हजार रुपये है, पर वह आपको दस रुपये में मिए गया। यह गलती मुनीम की थी आपकी नहीं। मुनीम को दुकान से हटा दिया, परंतु माला आपने एक बार यहाँ से खरीद ली, तो वह आपकी हो गयी।'' यह सुनकर उस महिला ने तुरंत गले से वह हार निकाला और सेठ को वापस करते हुए बोली-''सेठ जी! मैं निर्धन अवश्य हूँ, पर इस प्रकार धोखे या भूल से मिला किसी का मुझे कुछ नहीं चाहिए। आप अपना यह हीरों का हार रखिए। बेचारा मुनीम निर्दोष है, उसे फिर से काम पर लगा लें, बस।'' महिला की बात से सेठ प्रसन्न हुआ। बोला-''आप विश्वास करें, मैं मुनीम को यहाँ फिर रख लूँगा, परंतु मेरी भी एक बात आप रख लें।'' महिला ने पूछा-''वह क्या?'' सेठ ने सच्चे मोतियों का एक हार, जो पाँच हजार रुपये का था, अलमारी से निकाला और उस महिला के गले में डाल दिया। कहा-''यह एक भाई की बहिन के लिए छोटी सी भेंट है।'' महिला मान गयी और लौट गयी।

जीवन मूल्य

शिक्षा में अपेक्षित जीवन मूल्यों की तलाश

❐ मेवाराम कटारा

शिक्षा, सीखने की सतत प्रक्रिया है। वह घर विद्यालय एवं समाज में अनवरत चलती रहती है। शिक्षा उचित-अनुचित तथा अच्छे-बुरे के मध्य भेद करने की योग्यता प्रदान करती है। अतः किसी ने इसे 'बालक का सर्वांगीण विकास' बताया तो किसी ने 'बालक के व्यवहार में वाँछित परिवर्तन' कहा। शिक्षा के दो पहलू हैं। 1. जीवनयापन में सहयोग तथा 2. जीवन-निर्माण में सहायता करना। ये दोनों पहलू ही मानव जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण हैं परन्तु दूसरा पहलू महत्तर है क्योंकि यही मानव को सम्पूर्ण मानव बनाता है। इसके लिए विद्यालय साधन और साध्य के मध्य एक सेतु है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास तथा समाज व राष्ट्र के भाग्योदय के लिए प्रभावी कार्य करता है। महान् शिक्षाविद् जे.एस. रॉस कहते हैं-''विद्यालय एक बाग है विद्यार्थी कोमल पौधे हैं तथा अध्यापक बागवान है। शिक्षा की धुरी मानव है। मनुष्य में मनुष्यत्व निर्माण में आज की शिक्षा-प्रणाली पूर्ण रूप से असफल रही है। अतः इस पर गहन चिन्तन की आवश्यकता है।''

जीवन में सभी कार्यों का कोई उद्देश्य होता है। शिक्षा का भी उद्देश्य है। उद्देश्यनिष्ठ शिक्षा से छात्रों की अधिगम प्रक्रिया प्रभावित होती है तथा उनमें अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन भी होता है। जनवरी 5, 1973 में महान् शिक्षाविद् एल्विन टाफलर ने 'टाइम्स एजूकेशन सप्लीमेंट' में लन्दन के पत्रकारों को कहा- ''शिक्षा के सम्बन्ध में हमारा काल परिप्रेक्ष्य असन्तुलित है। विद्यालय में हम बुरी तरह से अतीत की ओर बढ़े चले जा रहे हैं, वर्तमान की ओर बहुत कम तथा भविष्य की ओर हमारी गतिमति शून्य है।'' अतः बीसवीं सदी में शिक्षा के क्या उद्देश्य रहे हैं। कौनसे जीवन मूल्य उसके लक्ष्य रहे हैं? तथा जीवन मूल्य रहे? इन सब बातों को यहीं पर छोड़ कर उस युग की चिन्ता करनी चाहिए जिस युग में हमें जीना है तथा व्यवहार करना है। आज मानवीय जीवन मूल्य अत्यन्त ही द्रुतगति से परिवर्तित हो रहे हैं। अतः जिस 21 वीं सदी में हम जी रहे हैं, उसके शेष कालखण्ड के परिप्रेक्ष्य में सोचना चाहिए। मात्र अतीत से चिपके रहना प्रगतिहीनता है। एल्विन टाफलर का मत है- ''बिना भविष्य की परिकल्पना के आज औचित्यपूर्ण सार्थक एवं युक्ति युक्त पाठ्यक्रम की कल्पना नहीं कर सकते। हमारे अधिकांश पाठ्यक्रम अपरीक्षित एवं अस्पष्ट हैं और इस अवधारणा पर आधारित हैं कि भविष्य वर्तमान की भाँति ही रहेगा। लेकिन परिवर्तन की तीव्रगति को देखते हुए हम दूसरी पीढ़ी के लिए यह नहीं कह सकते कि कल भी आज जैसा ही होगा।'' टाफलर का कथन निश्चित ही हमें भविष्य की चिन्ता की ओर अग्रसर करता है। भविष्य में शिक्षा का क्या स्वरूप होगा? उसके क्या उद्देश्य होंगे? हमारे जीवन जीवन मूल्य क्या होंगे? उन्हें शिक्षा से जोड़ने के लिए पाठ्यक्रम क्या होगा? उसके क्या उद्देश्य होंगे? ये सारी बातें भविष्य की परिकल्पना किए बिना स्पष्ट नहीं होगी। शिक्षा और सामाजिक स्वप्न अन्योन्याश्रित हैं। अतः तीव्रगति से बदलते परिप्रेक्ष्य में हमें भविष्य के विषय में परिकल्पना करनी चाहिए। मूल्यों की पुनः स्थापना करने के लिए विद्यालयों को पुनः मूल्यों से सम्बद्ध करना होगा। विद्यार्थियों को अपना मूल्य प्रक्रम तय करना है। अन्यथा जटिल विकल्पों से तारतम्य न बैठाने पर उनका व्यक्तित्व अपंग हो जाएगा।

समाज एक जीवित संस्था है। अतः परिवर्तन उसकी नियति है। परिवर्तन की धारा युगधारा होती है। इसके साथ तालमेल नहीं बैठाने पर हम पिछड़ जाएंगे। शिक्षा समाज नहीं बदलती अपितु इसी परिवर्तन को स्थायी बनाने के साधन तथा क्षमता प्रदान करती है। इसलिए भावी समाज की परिकल्पना प्रस्तुत नहीं कर सकती। जबकि समाज अपनी भावी आवश्यकताओं को पहिचान कर शिक्षा को उन प्रारूपों से परिचित कराता है और शिक्षा को उनकी आपूर्ति के लिए निश्चित दिशा-निर्देश देता है। भारत के शिक्षाविदों को समाज की मूल इच्छाओं को पहचानना है और उनकी आपूर्ति करना है। अन्यथा समाज गतिहीन हो जाएगा। हम कदाचित यह भी भूल रहे हैं कि बदलते समाज तथा उन्नत विज्ञान व टेक्नोलोजी के कारण हमारे अध्ययन-अध्यापन का स्वरूप भी बदल रहा है। आधुनिक टेक्नोलोजी पढ़ाने की अपेक्षा सीखने की प्रक्रिया पर बल देने वाली है।

जो शैक्षिक प्रक्रिया अथवा ढाँचा अपने पाठ्यक्रम के द्वारा निम्न लक्ष्यों एवं आदर्शों की प्राप्ति कर सके वही हमारे बदलते सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश के लिए उपयुक्त एवं प्रभावी होगा। वे लक्ष्य हैं-गरीबी हटाना, सांस्कृतिक आस्था, धर्म-निरपेक्षता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, वर्गहीन समाज, पूँजीवादी समाज के प्रति बेरुखी, शिक्षा व न्याय के समान अवसर, प्रजातांत्रिक दृष्टिकोण, भविष्योन्मुखी एवं अनौपचारिक शिक्षा, प्रयोगवादी दृष्टिकोण, सृजनात्मकता का विकास, राष्ट्रीय एकता, व्यावसायिक आश्वासन, पर्यावरण प्रदूषण सम्बन्धी ज्ञान स्वास्थ्य शिक्षा, तनावपूर्ण जीवन से छुटकारा आदि।

डॉ. राधाकृष्णन ने कहा- ''हमारा कार्य केवल शिक्षा देना ही नहीं शक्ति और ओज को छात्रों तक पहुँचाना है। हमें तो मानव हृदय को परिष्कृत एवं सुसंस्कृत करना है।'' इसी युगधर्म को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षानीति 1986 में मूल्यों की शिक्षा के प्रति चिन्ता की गई जो इस प्रकार है-

''आज भारत राजनीतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से ऐसे दौर से गुजर रहा है जिसमें परम्परागत मूल्यों के ह्रास का खतरा पैदा हो गया है और समाजवाद धर्म निरपेक्षता, लोकतंत्र और व्यावसायिक नैतिकता के लक्ष्यों की प्राप्ति में लगातार बाधाएँ आ रही हैं।''

''शिक्षा सुसंस्कृत बनाने का माध्यम है। यह हमारी संवेदनशीलता और दृष्टि को प्रखर करती है जिससे राष्ट्रीय एकता पनपती है, वैज्ञानिक तरीके के अमल की सम्भावना बढ़ती है तथा समझ और चिन्तन में स्वतंत्रता आती है। साथ ही शिक्षा हमारे संविधान में प्रतिष्ठित

समाजवाद, धर्म निरपेक्षता और लोकतंत्र के लक्ष्यों की प्राप्ति में अग्रसर होने में हमारी सहायता करती है।''

''शिक्षा के द्वारा आर्थिक व्यवस्था के विभिन्न स्तरों के लिए जरूरत के अनुसार जनशक्ति का विकास होता है। शिक्षा के आधार पर ही अनुसंधान और विकास में सम्बल मिला है जो राष्ट्रीय आत्म निर्भरता की आधारशिला है।''

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के भाग 8 के पैरा 4 से 6 तक कहा गया है-''इस बात पर गहरी चिन्ता व्यक्त की जा रही है कि जीवन के लिए आवश्यक मूल्यों का ह्रास हो रहा है और मूल्यों पर से ही लोगों का विश्वास उठता जा रहा है। शिक्षाक्रम में ऐसे परिवर्तन की जरूरत है जिससे सामाजिक और नैतिक मूल्यों के विकास में शिक्षा एक सशक्त साधन बन सके।''

''हमारा समाज सांस्कृतिक रूप से बहुआयामी है। इसलिए शिक्षा के द्वारा उन सार्वजनिक और शाश्वत मूल्यों का विकास होना चाहिए जो हमारे लोगों को एकता की ओर ले जा सके। इन मूल्यों में धार्मिक अंधविश्वास, कट्टरता, असहिष्णुता आदि का और भाग्यवाद का अन्त करने में सहायता मिलनी चाहिए।''

''इस संघर्षात्मक भूमिका के साथ-साथ मूल्य शिक्षा का एक गंभीर सकारात्मक पहलू भी है जिसका आधार हमारी सांस्कृतिक विरासत, राष्ट्रीय सार्वभौम लक्ष्य व दृष्टि है, जिस पर मुख्य तौर से बल दिया जाना चाहिए।''

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के इन बिन्दुओं को आधार मानते हुए आगे सन् 1988 में 'प्रारम्भिक और माध्यमिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्याः एक रूप रेखा में मूल्यों पर विशेष बल दिया गया था। परन्तु अब उस पर नए सिरे से विचार करने की आवश्यकता समझते हुए दिसम्बर 2000 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा प्रसारित 'विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा में कहा गया है-''देश में शिक्षा के क्षेत्र में जो अनुभव प्राप्त हुए हैं उनके प्रकाश में इनमें से कुछ की तो पुनः रचना और कुछ का पुनः प्रतिपादन करना होगा। आसपास घटित होने वाले परिवर्तनों के परिप्रेक्ष्य में कुछ नए आवश्यक क्षेत्रों को भी जोड़ना जरूरी हो सकता है। वर्तमान परिदृश्य में निम्न बिन्दुओं पर विशेष जोर देना होगा-

''व्यक्तिगत सामाजिक, राष्ट्रीय और आध्यात्मिक मूल्यों जैसे-स्वच्छता और समय की पाबन्दी, सदाचार, सहिष्णुता और न्याय, राष्ट्रीय अस्मिता के प्रति गर्व, कानून व्यवस्था के प्रति सम्मान और सत्यप्रियता का समावेश और उनकी निरन्तरता।'

''गरीबी, अज्ञानता, अस्वस्थता, जातिवाद, दहेज, अस्पृश्यता और हिंसा को समाप्त करना और समता, स्वास्थ्य, शान्ति और समृद्धि को सुनिश्चित करना।''

इसी पाठ्यचर्या में 'किसी भी स्तर पर मूल्य शिक्षा और धर्मों के बारे में शिक्षा अलग से अध्ययन या परीक्षा के विषय नहीं होंगे', कहकर धार्मिक शिक्षा से होने वाले खतरों से आगाह कराया है।

उपर्युक्त उद्धरणों से शिक्षा से जुड़े अनेक जीवन मूल्य उभर कर आए जिनमें कुछ ऐसे हैं जो प्राचीनकाल में उच्च स्थान पा चुके हैं जो आने वाले समय के लिए महत्त्वपूर्ण हैं परन्तु जिन्हें हम जीवन-मूल्य कह सकते हैं वे तो प्रायः शाश्वत ही होते हैं। यह बात दूसरी है कि किसी कालखण्ड विशेष में विशेष मूल्यों को स्थान मिला हो।

प्राचीन ग्रन्थों में अनेक जीवन मूल्यों पर प्रकाश डाला गया है। कुछ लोग तो धर्म, अहिंसा, सत्य, शान्ति और प्रेम को ही शाश्वत मानवीय मूल्य मानते हैं, परन्तु ये तो प्रचलित हैं, इनके अतिरिक्त भी स्वतंत्रता, समानता, बन्धुत्व, जनतांत्रिक दृष्टिकोण, समाजवाद, धर्म निरपेक्षता, सांस्कृतिक परम्पराओं के प्रति सम्मान, सामाजिक विभेद की समाप्ति, लैंगिक समानता, छोटा परिवार, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग, वैज्ञानिक मनोवृत्ति, पर्यावरण संरक्षण, चेतना आदि महत्त्वपूर्ण मूल्य हैं जिनकी वर्तमान शिक्षा में महत्ती आवश्यकता है। पूर्व की परम्परा एवं बुद्धिमत्ता तथा पश्चिम की तकनीकी प्रगति के मध्य समन्वय होना चाहिए। अनेकता में एकता के भाव की पुष्टि हो। धार्मिक अंधविश्वास दूर हो असहिष्णुता,हिंसा, अकर्मण्यता का अन्त हो। छोटों को भी सम्मान मिले तथा उदारता सभी के हृदय में स्थान पाए। ये मूल्य छात्रों को सुसंस्कारित बनाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण होंगे तथा देश के भावी नागरिकों में समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी तथा बहादुरी जैसे गुणों को जन्म देंगे।

उपर्युक्त सभी गुणों को आध्यात्मिक, नैतिक, धार्मिक, राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, लोकहित आदि भागों में विभाजित किया जा सकता है। चूँकि ये शाश्वत जीवन मूल्य हैं, अतः इन्हें नकारा नहीं जा सकता परन्तु ये किस रूप में स्वीकारे जाएँ ताकि साधन एवं साध्य दोनों उचित हों।

आध्यात्मिक मूल्य व्यक्तिपरक है। उन्हें प्राप्त कर मनुष्य आत्म कल्याण की ही बात सोचता है। भक्ति, तप, जप, ध्यान, ज्ञान प्राणायाम आदि कष्टसाध्य कर्म करने के उपरान्त भी प्रत्यक्षतः तो व्यक्तिगत हित ही करता है। इस भौतिक, आर्थिक, विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी प्रधान युग में इनका सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व हो सकता है। नैतिक मूल्यों की जब बात करते हैं तो मनु आदि की स्मृतियों के अनुसार धैर्य, क्षमा, इन्द्रियदमन, बाह्य अभ्यन्तर शुद्धता, इन्द्रियों को वश में करना, ब्रह्मचर्य, शुद्ध धारणा शक्ति, सत्य, अक्रोध, दया, दान, सहिष्णुता, प्रेम, अस्वाद, अभय, सर्वधर्म समता, अहिंसा, अपरिग्रह, अस्तेय, सूनृता आदि अनेक शाश्वत मूल्यों की एक लंबी सूची उभर कर आती है। परन्तु जिस युग में सम्पूर्ण वातावरण ही उत्तेजक है, खान-पान, श्रव्य-दृश्य, पाठ्य-सामग्री, सब कुछ उत्तेजनामय है, जहाँ जगह-जगह उत्तेजना पैदा करने वाला पॉप संगीत चल रहा हो, पुरुष और नारियाँ साथ-साथ मस्ती से नृत्य कर रहे हों। अर्द्धनग्न नारियाँ, अंग प्रदर्शन कर रही हों, उस वातावरण में किसी युवक से ब्रह्मचर्य, इन्द्रिय निग्रह, भक्ति, आंतरिक शुद्धता, जप, तप जैसे मूल्यों की कैसे अपेक्षा की जा सकती है? इसके लिए तो वातावरण पर ही ध्यान देना होगा। जहाँ स्पर्द्धा एवं ईर्ष्या उत्तरोत्तर बढ़ रही हो, कदम-कदम पर क्षण-प्रतिक्षण जहाँ हिंसा धोखाधड़ी का माहौल हो वहाँ बालक से पूर्णतः अहिंसक, दयावान, शान्त एवं निष्क्रोध होने की अपेक्षा नहीं की जा सकती। सत्य परिवर्तनशील है। एक व्यक्ति या प्राणी को झूठ बोल कर किसी से बचा लिया तो वह उस सत्य से अधिक उचित है जिसके बोलने पर प्राणी की हत्या हो। अतः

परिणाम समझ कर ही सत्य का मूल्यांकन करना चाहिए। केवल मारना ही हिंसा नहीं अपितु मन-कर्म वाणी से भी किसी का जी दुखाना भी हिंसा है। परन्तु एक शत्रु, राष्ट्रद्रोही, अनाचारी, दुराचारी जैसे समाज कंटक को मारना लोकहित में है अतः इस परिणाम को समझकर ही हिंसा करने वाले को परमवीर आदि अलंकार प्रदान किए जाते हैं। प्रयोजन के आधार पर ही अहिंसा को जीवन-मूल्य के रूप में आँकना चाहिए। सत्य की परिवर्तनशीलता से बचने के लिए जैन दर्शन ने स्याद्वाद का सहारा लिया। परिग्रह को भी एकदम नहीं नकारा जा सकता। अनुचित साधनों से धन अर्जित कर समाज में आर्थिक असमानता पैदा करने पर परिग्रह जहर बन जाता है। परन्तु अपने भावी जीवन-यापन, मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने, बीमार होने पर उपचार कराने शादी-विवाह, जीवन-यापन कर साधन बनाने तथा बच्चों को पेट भरने के लिए यदि कोई कुछ धन संग्रह कर लेता है तो उसे बुरा नहीं समझना चाहिए अतः आवश्यकता से अधिक निष्क्रिय राशि-संग्रह करना ही परिग्रह माना जाए। यदि परिश्रम से अपने उपयोग के लिए कोई अर्जित करे और प्रभूत मात्रा में अर्जित करे तो उसे हेयदृष्टि से क्यों देखा जाए?

हमारी संस्कृति हमेशा बड़ों के आदर की शिक्षा देती आई है। अच्छी बात है, होना भी चाहिए। परन्तु बड़ों का भी यह कर्त्तव्य है कि छोटों को अपेक्षित प्यार व आदर दें। बड़े के नाम पर समाज के कुछ वर्गों ने समाज के बहुत बड़े भाग को दलित बना दिया तथा उन्हें अपेक्षित आदर नहीं दिया। इसी उपेक्षा के परिणाम स्वरूप वर्ग संघर्ष उठ खड़ा हुआ। दलित वर्ग ने उचित आदर की अपेक्षा की। महाकवि भारवि के पिता ने उनके पांडित्य की कभी सराहना नहीं की, परिणामतः विद्रोह भड़क उठा और चल दिए पिता की हत्या करने। इस प्रकार के अनेक प्रसंग इतिहास में देखे जा सकते हैं। अतः छोटे को भी उचित आदर दिया जाना चाहिए तथा इसे जीवन मूल्यों में उचित स्थान मिलना चाहिए।

मानव निर्माण में धर्म का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अनेक विद्वानों ने धर्म की शिक्षा का समर्थन किया है। धर्म का अर्थ है धारण करने योग्य। धर्म की शिक्षा स्वार्थ को रोकती है। धर्म को जानकर व्यक्ति में अच्छे नैतिक गुणों एवं कर्त्तव्य परायणता का विकास होता है। गाँधी जी ने कहा है'जहाँ धर्म नहीं वहाँ स्वास्थ्य, धन आदि नहीं हो सकते।' नैतिकता का आधार धर्म ही है। शिक्षा द्वारा नैतिक एवं आचरण मूल्यों का विकास नहीं होने पर समाज में पक्षपात, भाई-भतीजावाद, रिश्वत, कामचोरी, दायित्व हीनता, अवसरवादिता एवं कथनी करनी में अन्तर दिनोदिन बढ़ता जा रहा है। 'यतोऽभ्युदय निःश्रेयससिद्धिः सधर्मः' जिससे उन्नति एवं कल्याण की सिद्धि हो वह धर्म है। सन् 1945 में केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार समिति एवं डॉ. राधाकृष्णन् समिति ने भी धार्मिक शिक्षा की सलाह दी थी। परन्तु आज यह महत्त्वपूर्ण जीवन मूल्य धर्म को सही मायने में न समझने के कारण अहितकर हो गया है। आज सम्प्रदायों को ही लोग धर्म कहने लगे हैं तथा इन सम्प्रदायों की वर्षाकाल में मेंढ़कों की तरह लम्बी संख्या हो गई है। मानव को भ्रांत कर दिया है। एक सम्प्रदाय के लोग दूसरे सम्प्रदाय के लोगों से द्वेष रखते हैं। एक ही सम्प्रदाय की दो धाराओं में भी मतैक्य नहीं है। अतः बालक के समक्ष धर्म का सही अर्थ प्रस्तुत करना चाहिए। उसका उज्ज्वल स्वरूप ही सामने आना चाहिए। धर्म या मजहब का बालक सही अर्थ समझ लेगा तो वह दूसरे धर्म में भी आस्था रखेगा। क्योंकि 'मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना', जिस प्रकार पानी का धर्म शीतलता अग्नि का धर्म जलाना होता है उसी प्रकार मानव का भी अपना धर्म है। तुलसी ने- ''परहित सरिस धर्म नहीं भाई, पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।'' कह कर धर्म का स्वरूप स्पष्ट कर दिया है।

अतः शिक्षा के माध्यम से बालक के समक्ष धर्म के समन्वित स्वरूप को रखा जाए। सभी धर्म ग्रन्थों से सूक्तियाँ प्रस्तुत की जाएं। किसी सम्प्रदाय के संगठनकारी प्रसंग ही प्रस्तुत किए जाए विघटनकारी नहीं। सर्व धर्म सद्भाव को जीवन मूल्य माना जाए। सभी धर्म ग्रन्थों का कथन एक ही है। सभी रास्ते परमसत्ता तक पहुँचते है। महामति प्राणनाथ का सन्देश है-

''जो कुछ कहा कतेब में सोई कह्या वेद
दोउ बन्दे एक साहिब के पर लड़त बिना पाए भेद।।''

राष्ट्र और शिक्षा का गहरा सम्बन्ध है। राष्ट्रीय चेतना, राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रीय धरोहर का संरक्षण, राष्ट्रीय सम्पत्ति की सुरक्षा आदि सभी मानवीय मूल्यों में सम्मिलित किए जाने चाहिए। जिस राष्ट्र की शिक्षा सशक्त होगी वह राष्ट्र उतना ही समृद्ध एवं शक्तिशाली होगा। अतः राष्ट्र को सशक्त बनाने के लिए राष्ट्रीय चेतना को प्रमुख मूल्यों में स्थान दिया जाए। अपनी मातृभूमि के लिए समर्पण की भावना जगाई जाए। पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2000 में भी इस पर जोर दिया गया है-''राष्ट्रीय पहचान को सुदृढ़ करने की आवश्यकता अब पहले भारतीय संविधान में निहित मूल्यों का पोषण कर राष्ट्रीय एकता और सामाजिक सुसम्बद्धता को प्रोत्साहित एवं विकसित करने का दृढ़ता के साथ पक्ष लिया जा रहा है। इस दृष्टि से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के द्वारा चिह्नित दस केन्द्रीय घटकों को पुनः प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता है।

एक सबल और समृद्ध राष्ट्र निर्माण हेतु बढ़ती हुई जनसंख्या की समस्या से सावचेत होना अत्यंत आवश्यक है। लघु एवं सुनियोजित परिवार में विश्वास रखते हुए जनसंख्या वृद्धि को रोकने में पूर्ण सहयोग करें। धार्मिक सद्भाव के साथ-साथ जाति-सद्भाव, भाषायी, प्रान्तीयता आदि सद्भावों को भी शिक्षा से जोड़ा जाए ताकि जातीय, भाषायी, क्षेत्रीय संघर्ष को अवसर न मिले। इन सद्भावों द्वारा बालक में साथ मिलकर आगे बढ़ने की, मिलकर काम करने आदि की भावना का विकास होगा। वेदों में इस मूल्य को महत्त्व दिया गया है-

'संगच्छध्वं संवदध्वं सं-वो मनांसि जानताम्।'
समानि व आकूति समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।

इस मूल्य को महत्त्व देने वाले अनेक मंत्र ऋग्वेद और अथर्ववेद में उपलब्ध हैं। अथर्ववेद के ऋषि की प्रार्थना यहाँ दृष्टव्य है-

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसम्,
नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्।
सहस्रधारा द्रविणस्य मे दुहां
ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती।।

विविध भाषा भाषियों और धर्मावलम्बियों को परिवार की तरह धारण करती हुई यह पृथ्वी भारत भूमि मुझे स्थिर होकर सहस्र धाराओं में धन प्रदान करे जैसे गाय सरलता से आनाकानी किए बिना दूध देती है। अतः इस काल में भारत में धार्मिक, जातीय, भाषायी,

क्षेत्रीय एकता का एक महत्त्वपूर्ण जीवन मूल्य है, इस पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए।

दूरसंचार एवं यातायात के द्रुतगामी साधनों के कारण पृथ्वी सिमट कर बहुत छोटी हो गई है। सूचना प्रौद्योगिकी के विश्वव्यापी प्रसार के कारण कोई बात मिनटों में सम्पूर्ण विश्व में प्रसारित हो जाती है। अतः 'माता भूमिपुत्रोऽहं पृथिव्याः' अर्थात् भूमि मेरी माँ है और मैं पृथ्वी का पुत्र हूँ। जब माता एक है तो सभी मानव भी भाई-भाई होने चाहिए। हमारी संस्कृति ने सदैव इस मूल्य को महत्त्व दिया है तथा आज भी वह मूल्य उतना ही महत्त्वपूर्ण है। हृदय की उदारता को सदैव अपनाया है परन्तु अब ह्रास होने लगा है। अतः एक बार पुनः स्मरण करना चाहिए।

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

उदारता एक महान जीवन मूल्य है तथा उसी से सबके कल्याण की भावना संसार के लोगों में बढ़ेगी। जन-जन का भाव होगा-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।

यजुर्वेद के ऋषि की यह प्रार्थना यदि हर व्यक्ति के हृदय में समा जाए तो फिर सारे झगड़े ही समाप्त हो जाए-

दृते दृंह मा! मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे। सर्वा आशा मम मित्राणि भवन्तु।।

पर्यावरण की शुद्धता को वैदिक काल से ही जीवन मूल्यों में उच्च स्थान दिया गया है जो आज भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है अथवा उससे अधिक। वैदिक ऋषि द्युलोक, अन्तरिक्ष, पृथ्वी, जल, औषधियों, वनस्पतियों आदि की शान्ति के लिए प्रार्थना करता रहा है तथा पर्यावरण प्रदूषण दूर करने के लिए यज्ञ करता रहा है। परन्तु आज इस महँगे समय में पूर्ववत् प्रत्येक व्यक्ति के लिए यज्ञ करना सम्भव नहीं। कुछ करें तो भी वाहनों एवं कारखानों से निकले धुएँ में यज्ञ धूम्र का पता भी नहीं चलता। अतः यज्ञ निरर्थक हो जाता है। ऐसी स्थिति में बालक प्रदूषण के कुप्रभाव को समझे तथा पर्यावरण को प्रदूषित करने में सहयोग नहीं करे, वह ध्वनि, वायु, जल आदि को प्रदूषित नहीं करेगा। पेड़ पौधे लगाएगा, उन्हें नष्ट नहीं करने देगा। अतः पर्यावरण की शुद्धि की ओर पर्याप्त ध्यान देने की आवश्यकता है। अन्यथा प्राणी को शुद्ध वायु, जल, मिट्टी भी नहीं मिल सकेगी। दिन-रात चैन से सो भी नहीं पाएगा।

समाज की किन्हीं कारणों से कुछ ऐसी व्यवस्था बन गई कि पुरुष को उच्च और नारी को निम्न स्थान दिया जाता है परन्तु आज ऐसा लैंगिक भेद उचित नहीं। 'पाति रक्षति इति पतिः' व्युत्पत्ति करके पति को रक्षा करने वाला कहा गया है। पुत्र यदि 'पुन्नाम्नो नरकाद्यस्मात् त्रायते पितरं सुतः तस्मात पुत्र इति प्रोक्तः स्यमेव स्वयंभुवः' कह कर बड़ा माना जाता है तो पुत्री कौनसी कम है। पुत्र+ङीप=पुत्री। अतः पुत्र शब्द शब्द तो इसमें भी है, ङीप् प्रत्यय तो अतिरिक्त है अतः यदि हम 'पुन्नाम्नो नरकाद्यस्यास्त्रायते पितरम्' यह व्युत्पत्ति पुत्री की करें तो क्या त्रुटि है। अतः दहेज की समस्या, नारी उत्पीड़न, भ्रूण हत्या आदि सभी समस्याओं का एक ही उपचार है कि लैंगिक अभेद को महत्त्व दिया जाए।

सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण तथा सांस्कृतिक परम्पराओं के प्रति सम्मान का भाव मानव का महान् मूल्य है अतः बालक को शिक्षा के माध्यम से अपनी संस्कृति के उज्ज्वल स्वरूप से परिचित कराया जाना चाहिए ताकि बालक में अपनी धरती के प्रति लगाव बढ़े तथा गर्व अनुभव कर सके।

21वीं सदी अर्थ प्रधान है। इस भौतिक युग में सर्वत्र धन का ही महत्व है। भर्तृहरि ने सत्य ही कहा है-'सर्वे गुणाः कान्चनं आश्रयन्ते।' शारीरिक संरक्षण के लिए भी धन की आवश्यकता है। धन के अभाव में मनुष्य शारीरिक एवं मानसिक रूप से अस्वस्थ रहता है। अतः बालक का सर्वांगीण विकास करने के लिए उसकी शिक्षा को आर्थिक मूल्यों से जोड़ना चाहिए। चूँकि शिक्षा आर्थिक प्रगति की प्राथमिक एवं मूलभूत आवश्यकता है। नवोदित क्रियाशील समाज के लिए यह उत्प्रेरक घटक है। अर्थ मानव की मूलभूत आवश्यकता है। अतः शिक्षा को आर्थिक मूल्यों से जोड़ना आज के बालक के साथ न्याय होगा। इसके लिए व्यवसायोन्मुखी शिक्षा, व्यावसायिक मार्गदर्शन, विज्ञान के सदुपयोग के प्रति रुचि, जनसंख्या वृद्धि के प्रति सजगता, जल, बिजली आदि प्राकृतिक संसाधनों का मितव्ययता के साथ उपयोग आदि से बालक को अवगत कराया जाए।

संक्षेप में 21 वीं सदी में शाश्वत मूल्यों में से, जो समयानुकूल हैं उन्हें संशोधन के साथ पुनः प्रतिष्ठापित किया जाए। समयानुकूल उनके अर्थ स्पष्ट किए जाए उनका स्वरूप स्पष्ट किया जाए तथा युगानुकूल शान्ति, सत्याग्रह, मधुरवाणी, जीवदया, सर्वधर्म सद्भाव, जनसंख्या-नियंत्रण, पर्यावरण की शुद्धता स्वास्थ्य, लोकतंत्र में आस्था, स्वतंत्रता का सदुपयोग, राष्ट्रीय चेतना, उदारता, लैंगिक समानता, सौहार्द्र, छोटों का आदर, सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण एवं सम्मान, प्राकृतिक संसाधनों का मितव्ययता के साथ सदुपयोग, रचनात्मक चिन्तन, सदुपयोग एवं व्यावसायोन्मुखी शिक्षा आदि मानव मूल्यों को महत्त्व दिया जाए तथा इन्हें शिक्षा से जोड़ा जाए।

उपर्युक्त जीवन मूल्यों को प्रार्थना सभा, छात्रावास, खेलकूद, स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा, उत्सव, समारोह एवं जयन्तियों के आयोजन, सहगामी क्रियाओं-नाटक, संगीत कला, समाचार-दर्शन, रेडियो व टेलीविजन, भित्ति पत्रिका, विद्यालय पत्रिका, लेखन प्रतियोगिताओं सहभोज, भाषा विकास, भ्रमण आदि के माध्यम तलाश कर शिक्षा से जोड़ा जा सकता है।

पूर्व प्राचार्य
36, जसवन्त नगर, भरतपुर-321001

बाल मन

बालक और उससे जुड़े सपने

❒ महेश कुमार चतुर्वेदी

सपने देखना तब तक मत छोड़ो जब तक कि वे पूरे न हो जाएँ।

–ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

भूतपूर्व राष्ट्रपति कलाम सा. ने सपने को लेकर जो अवधारणा प्रस्तुत की है उसका मन्तव्य यही है कि जब तक मंजिल (सपने) प्राप्त नहीं हो जाती। तब तक उसे प्राप्त करने के लिए सतत प्रयत्न करते रहना चाहिए।

हमें सपने जरूर देखने चाहिए क्योंकि जब तक हम सपने नहीं देखेंगे तो उन्हें पूरा कब करेंगे? लेकिन सपने ऐसे हों, जो हमारे बूते के हों। अति महत्त्वाकांक्षी होकर देखे गए सपने सामर्थ्य से परे होते हैं।

सपने देखना आदमी की फितरत है। लेकिन सपने देखना बुरा नहीं है। रात में सपने देखना ठीक है। किन्तु दिन में देखे जाने वाले सपने कभी–कभी परेशानी का सबब बन जाते हैं। जब तक दिन में देखे सपने पूरे नहीं होते व्यक्ति परेशान, अधीर और व्याकुल रहने लगता है और पता नहीं उन सपनों को पूरा करने के लिए वह न जाने क्या–क्या सद्कर्म अथवा खटकर्म करने लगते हैं।

बालक भी सपने देखते हैं। उनकी स्वप्निल दुनिया बड़ी निराली है। बालमन घूमना, खेलना, मौज–शौक करना तथा नई–नई बातों को सीखने और समझने में रुचि रखता है। उसे दुनियादारी से कोई मतलब नहीं। बालमन जो ठहरा। छोटा सा मन। एकदम पाक–साफ, पवित्र एवं निर्मल, जिसका कोई सानी नहीं। उनकी साफगोई बातें बरबस ही हमें उनकी ओर आकर्षित करती हैं इसीलिए तो बालक सबके प्रिय होते हैं।

यह भी सच है कि बालक मन के सच्चे और धुन के पक्के होते हैं। मनोविज्ञान के आधार पर कहा जाता है कि बालक की अवस्था अपरिपक्व होती है। उनके विचारों में स्थायित्व नहीं होता। क्या अच्छा और क्या बुरा है। इसका निर्णय वे नहीं कर पाते हैं। उन्हें जिस धारा और जिस दिशा की ओर चलने को कहा जाता है वे सहज ही उस ओर जाने के लिए तैयार हो जाते हैं। इसी का फायदा उठा कर बालकों के अभिभावक उनके साथ भावात्मक ब्लेकमेल करते हैं क्योंकि उनके होनहार को लेकर वे अति महत्वाकांक्षी होते है। बचपन में ही वे बालकों

को डॉक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड अकाउंटेंट, आई ए एस अथवा आर ए एस अधिकारी और न जाने क्या–क्या सपने संजोकर उसे लायक बनने के लिए उस पर दबाव डालते हैं।

बालक में जैसा अभिभावक चाहते हैं वैसा बनने की क्षमता अथवा कुव्वत भले ही न हो। जाहिर है क्षमता से अधिक दबाव पतन का कारण बनता है। गुब्बारे में अधिक हवा भरने पर गुब्बारा फूट जाता है। पॉलीथिन की थैली में निश्चित मात्रा से अधिक सामग्री भरने पर थैली फट जाती है। क्षमता से अधिक बोझा लादने पर पशु अथवा व्यक्ति लड़खड़ाकर गिर जाता है। फिर बालक कोमल सरल हृदय हैं। कमजोर हैं। ऐसे में उनसे बड़ी आशा कैसे की जा सकती है?

बालक, अभिभावक के दबाव में तोता रटंत पैटर्न पर रटने वाला पढ़ाकू बन जाता है। उसकी आँखों पर मोटा चश्मा चढ़ जाता है। कई सारी ट्यूशन और कोचिंग क्लासेज का बोझ उस पर लाद दिया जाता है। हर वक्त वह मानसिक दबाव में रहता है। ऐसे बालक की मनोदशा को न तो अभिभावक समझते हैं और न ही बालक किसी को कहता है। एक तरफ बालक पर अभिभावक की महत्त्वाकांक्षा का दबाव दूसरी तरफ विद्यालय एवं कोचिंग सेंटर का दबाव आखिर बालक करे तो क्या करे?

अकसर देखा जाता है कि बालक में असफलता का डर, माता–पिता की आकांक्षा पर खरा न उतरने के डर से वह टूट जाता है। पिता के एवं स्वयं के सपने को पूरा न कर पाने की स्थिति में वह अपने जीवन को समाप्त करना बेहतर समझता है और आत्महत्या कर लेता है। इसके बाद पछताने के सिवा कोई चारा नहीं रहता है। इसका जीता जागता उदाहरण कोटा के कोचिंग संस्थान का है। जहाँ विगत 11 महीनों में अपना जीवन समाप्त करने वाले कोटा के 29 छात्रों में से 17 कोचिंग संस्थान के थे।

ऐसी बात नहीं कि बालकों में प्रतिभा नहीं है दक्षता नहीं है। कई बालक आशातीत सफलता प्राप्त कर ऊँचाइयाँ हासिल कर लेते हैं। कई गुदड़ी के लाल अपना और अपने माता–पिता का नाम रोशन करते हैं। किन्तु आनुपातिक दृष्टि से ऐसे बालकों की संख्या न्यून ही होती है।

निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि अभिभावक बालक को उसकी रुचि और क्षमता के आधार पर उसे सही दिशा–निर्देश देकर उसे आगे बढ़ा सकते है। यदि बालक में प्रतिभा है, तो वह स्वतः ही प्रगति के नित नये आयाम छू लेगा। ऐसे समय में आवश्यकता होती है कि वे समय–समय पर उसका हौंसला अफजाई करें। उसकी अप्रत्याशित सफलता पर उसकी पीठ थपथपाएं। यदि बालक में ऊँचा उड़ने की क्षमता है तो उसे हतोत्साही न करें। हो सके तो उसकी हर सफलता पर उसे मनमाफिक अच्छा उपहार दें।

आपका सम्बल, आपका सहारा, आपका उत्साहवर्द्धन बालक में नई चेतना, नई उमंग और नए आत्मविश्वास का संचार करेगा। ऐसे में बालक अपनी ज़िंदगी के साथ अपने और अपने माता–पिता के सपने पूरा करने में कामयाब होगा। यही तो आप, हम और बालक चाहते है।

कैरियर निर्माण में रत बालक अपनी व्यथा को इन शब्दों में व्यक्त करना चाहता है–

मैं जिधर चाहूँ, मुझे उड़ने दो।
विकास की जिस धारा में बहूँ
बस बहने दो–बस बहने दो।
मैं पक्षी हूँ–नील गगन का
मैं जिधर उड़ना चाहूँ, मुझे उड़ने दो।।

देवेन्द्र टॉकीज के पीछे,
छोटी सादड़ी (राज.) प्रतापगढ़–312064
मो: 09460607990

स्वास्थ्य

बच्चों को स्वस्थ रखता है योग

❐ रामेश्वरलाल वर्मा

वर्तमान समय में बच्चे अपनी पढ़ाई एवं व्यस्त जीवन शैली के कारण तनाव व थकान से ग्रस्त हो जाते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार बालकों के थकान व तनाव को मिटाने में योग अत्यंत उपयोगी हो सकता है। जो बालक नियमित योग करते हैं वे स्वस्थ एवं ऊर्जावान होते हैं उनका एकाग्रता का स्तर अच्छा होता है। बालकों को अध्ययन के साथ खुशी व आनंद चाहिए। यह योगासन द्वारा संभव हो सकता है। योग करने से बालकों के मन-मस्तिष्क को भी शांति मिलती है।

बच्चों के लिए व्यायाम के समान ही योग भी अत्यंत उपयोगी है। अध्ययन के दौरान अक्सर बच्चों को थकान महसूस होती है। इसके लिए माता-पिता, शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों को पढ़ाई के बाद प्राणायाम करने की सलाह दें। प्राणायाम के द्वारा पर्याप्त प्राणवायु (ऑक्सीजन) ग्रहण करने की क्षमता में अभिवृद्धि होती है। जिसके फलस्वरूप मानसिक शांति प्राप्त होती है। शरीर की प्रतिरोधात्मक शक्ति बढ़ती है। प्राणायाम में भ्रामरी, अनुलोम-विलोम प्राणायाम, बाह्य-प्राणायाम कपाल-भाति मुख्य है। इनमें तीव्र गति से श्वास बाहर निकालते समय मन में यह विचार जागृत करना होगा कि मैं अपनी सभी कमजोरियों को बाहर निकाल रहा हूँ। शारीरिक स्वास्थ्य के लिए मन की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण है।

एक ही जगह पर बैठे रहने से बालकों में पेट व कमर से जुड़ी परेशानियाँ होने लगती हैं, ऐसे में बालक प्राणायाम कर सकते हैं। प्राणायाम के अलावा सरल आसन कर सकते हैं। आसन करते समय शारीरिक क्रियाओं के साथ ही श्वास क्रिया को नियंत्रित किया जा सकता है। जिससे शरीर में पर्याप्त शक्ति का संचार होता है।

यदि बालकों को सूर्य नमस्कार, कपाल भाति, पवन मुक्तासन, वज्रासन आदि करवाया जाए तो बालकों की पाचन क्रिया ठीक रहती है। मोटापा नहीं बढ़ेगा। प्राणायाम व 'ॐ' का उच्चारण भी बच्चों के फेफड़ों की कार्य क्षमता को सुधारता है। योग से श्वसन क्रिया के नियंत्रण एवं शारीरिक क्रियाओं से शरीर में सुप्त पड़े तंतुओं का पुनर्जागरण होता है जिससे बच्चों के अन्दर छिपी हुई असीम शक्ति व चेतना जागृत होने लगती है।

बच्चों के अनवरत बैठे रहने से गर्दन में दर्द, अकड़न की समस्या हो सकती है। इसके लिए गर्दन को दाएं-बाएं गोलाकार घुमाने जैसे व्यायाम कर सकते हैं गर्दन व कंधों को राहत मिलेगी। कम उम्र में ही बच्चों को साँस संबंधी परेशानी होने लगती है जिसका मुख्य कारण है कि बालक ज्यादातर समय बंद कमरे में बिताते है शिक्षक एवं माता-पिता को इस ओर भी ध्यान देना आवश्यक होगा।

शवासन यह पूर्ण विश्राम आसन है यह तनाव मुक्त शारीरिक व मानसिक आसन है अन्य आसन करते समय थकने पर बीच में आवश्यकतानुसार किया जा सकता है। योग का सबसे बड़ा गुण यह है कि वे सहज साध्य और सर्व सुलभ है। योग की कियाएँ करने से शरीर, मन तरोताजा रहता है। योगासनों द्वारा पाचन अंग पुष्ट होते है। रीढ़ की हड्डी को लचीला बनाते हैं योग से स्मरण शक्ति में वृद्धि होती है। बालकों की धारण शक्ति को नई स्फूर्ति एवं ताजगी मिलती है।

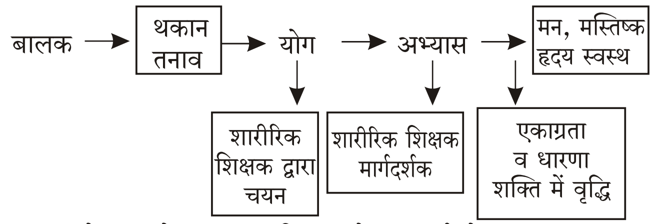

योग अपने शारीरिक शिक्षक के परामर्श से ही प्रारम्भ करना चाहिए। शिक्षक आपके स्वास्थ्य के अनुकूल योग करने की सलाह देंगे। शारीरिक शिक्षक के मार्गदर्शन में बच्चों को योग करवाने पर शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक विकास होता है।

योग प्रारम्भ करते समय बच्चों को निम्न बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। योग प्रातः खाली पेट किया जाना सर्वोत्तम है। भोजन करने के चार घण्टे बाद भी किया जा सकता है। योग शान्त, स्वच्छ स्थान पर किया जाना अत्यधिक लाभप्रद होता है। योग करते समय वस्त्र ढीले व आरामदायक होने चाहिए। ऐसे बालक, जो हृदय रोगी हैं उनको प्राणायाम, कपाल भाति करने की सलाह नहीं दी जाती है। योग प्रारम्भ में अधिक नहीं करें। धीरे-धीरे अभ्यास का समय बढ़ाया जाए। योग करते समय थकान हो तो शवासन में अल्प विश्राम करें।

शिक्षक एवं माता-पिता बच्चों के मार्गदर्शक एवं सहयोगी बनें। बच्चे स्वस्थ एवं नीरोग रहेंगे। योग बच्चों के लिए वरदान सिद्ध होगा। बच्चों के दिमाग में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा। बालक स्वस्थ रहने के साथ एकाग्रता बढ़ेगी तथा अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ेगी। बच्चों को अवसाद से मुक्ति मिलेगी।

''तनाव की स्थिति में निष्क्रिय मत बैठिए वर्तमान में जीने का प्रयास कीजिए।''

सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य
पुराना किला, सांभरलेक-303604, जयपुर-(राज.)
मो: 9929187985

शिक्षा शिक्षा का सम्बन्ध जितना व्यक्ति से है, उससे अधिक समाज से है। हम ऐसे मानव की कल्पना कर सकते हैं, जिसे किसी भी प्रकार की शिक्षा न मिली हो और जो अपनी सहज प्रवृत्तियों के सहारे ही जीवन यापन करता हो। किन्तु बिना शिक्षा के समाज संभव नहीं। यदि 'शिक्षा' न हो तो 'समाज' का जन्म ही न हो। अतः शिक्षा के प्रश्न को मूलतः सामाजिक दृष्टिकोण से ही देखना होगा। हमारे शास्त्रों के अनुसार यह ऋषि-ऋण है, जिसे चुकाना प्रत्येक का कर्त्तव्य है।

-पं. दीनदयाल उपाध्याय

व्यक्तित्व विकास

अपनी महत्त्वाकांक्षाएँ बच्चों पर मत लादिए

❒ डॉ. अजय जोशी

अतुल पढ़-लिखकर एक सफल इंजीनियर बनना चाहता है लेकिन उसके पिता चाहते हैं कि वह एक चार्टर्ड अकाउण्टेन्ट बने। उसकी वाणिज्य विषय में बिल्कुल रुचि नहीं है लेकिन पिताजी की जिद है कि वाणिज्य विषय का अध्ययन करके चार्टर्ड अकाउन्टेंट की परीक्षा दे जबकि वह चाहता है कि गणित तथा विज्ञान विषय लेकर वह इंजीनियरिंग हेतु तैयारी करें। अतुल न चाहते हुए भी वाणिज्य विषय लेता है। सी.ए. की परीक्षा भी देता है लेकिन उसे सफलता नहीं मिल पाती क्योंकि वाणिज्य के क्षेत्र में उसकी रुचि बिल्कुल नहीं है। ऐसी हालत में वह न तो अपनी इच्छा से इंजीनियर बन पाया और न ही पिताजी की इच्छा से सी.ए.। इस कारण अतुल में बहुत हताशा आयी तथा माता-पिता को भी निराशा हुई।

प्रत्येक माँ-बाप की यह इच्छा होती है कि उनके बच्चे पढ़ लिखकर कुछ बनें, अपना भविष्य बनाएँ तथा उनका नाम रोशन करें। माता-पिता की यह अपेक्षा गलत नहीं है उनकी यही भावना होती है कि बच्चा अपना सुखमय जीवन व्यतीत कर सके। यदि यह अपेक्षा किसी दबाव के साथ बच्चों पर लादी जाए तो यह उसके विकास के लिए बाधक होगी। कुछ माता-पिता अपनी दमित इच्छाएँ बच्चों के माध्यम से पूरा करना चाहते हैं। उनकी यही इच्छा रहती है कि वे जो नहीं बन सके वह बच्चा अवश्य ही बनकर दिखाएँ। उदाहरण के लिए किसी बच्चे के पिता की इच्छा एक सफल डॉक्टर बनने की थी परन्तु परिस्थितिवश वह डॉक्टर नहीं बन सका तो

उसकी यही दमित इच्छा महत्त्वाकांक्षा बनकर अपने बच्चे पर दबाव डालती है कि वह डॉक्टर अवश्य ही बनें। बच्चे की अपनी समस्या है वह डॉक्टर नहीं बन कर एक अच्छा गायक बनना चाहता है। गायन में उसकी रुचि है, गाने योग्य स्वर भी हैं परन्तु पिताजी की इच्छा पूरी करने हेतु वह जबरदस्ती विज्ञान पढ़ रहा है जो उसे समझ में नहीं आ रही है। विज्ञान की भारी भरकम पढ़ाई के कारण उसे अपने गायन हेतु समय नहीं मिल पा रहा है। परिणाम यह रहता है कि वह पढ़ाई में अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं मिलने के कारण डॉक्टर नहीं बन पाता। गायन की तरफ ध्यान नहीं दिए जाने के कारण वह अच्छा गायक भी नहीं बन पाया। ऐसी स्थिति में उसमें सिवाय हताशा के कुछ नहीं रहा। ऐसे बहुत से उदाहरण है जिनमें माता-पिता की महत्त्वाकांक्षाओं का शिकार होकर बच्चे न तो उनकी आकांक्षा पूरी कर पाए और नहीं वे बन पाए जो वे स्वयं बनना चाहते थे। बच्चों के भविष्य की चिन्ता करना हर अभिभावक का कर्तव्य है। बच्चे के व्यक्तित्व में उनका अपना पूरा योगदान करना चाहिए। बच्चों के लिए कौनसा क्षेत्र उपयुक्त रहेगा इसका पता लगाने के लिए बच्चे के स्वभाव का अध्ययन करना चाहिए। उसकी किस क्षेत्र में रुचि है। इसका पता लगाना चाहिए। वह पढ़ाई में किस विषय में अच्छा है यह उसके अध्यापकों तथा उसके परीक्षा परिणामों में आए अंकों से जानना चाहिए।

उसके साथ कुछ समय बिता कर उससे अंतरंग बातचीत करके तथा उसके आचार-विचार का पता लगाकर स्वयं ही यह जानने का प्रयास करना चाहिए कि आपका बच्चा किस तरफ जा रहा है। यदि आपका बच्चा आपकी अपेक्षाओं के अनुसार ही चल रहा है तो बहुत अच्छा, यदि नहीं चल रहा है, उसका मन कहीं और क्षेत्र में लग रहा है तो आपको पूरी ईमानदारी के साथ उसे बनने देने में लगा देना चाहिए जो वह बनना चाहता है। बच्चा अपनी इच्छा तथा स्वाभाविक प्रवृत्ति के कारण जो कुछ करता है तथा जो कुछ बनना चाहता है उसमें उसे अधिक रुचि होती है। वह इस हेतु स्वेच्छा से अधिक निष्ठावान तरीके से प्रयास करता है। प्रयासों के पीछे उसका एक स्वाभाविक आत्मविश्वास भी होता है। यह आत्मविश्वास उसे अधिक सजगता से वह सब करवा लेता है जो दबाव में कभी संभव नहीं होता। आपका सहयोग तथा बच्चे का आत्मविश्वास मिल कर जो रंग दिखाएगा हो सकता है वह आपकी आशाओं तथा अपेक्षाओं से अधिक अच्छा हो।

निदेशक
रोजगार स्वरोजगार मार्गदर्शन संस्थान
बिस्सों का चौक, बीकानेर

विवेक एक बहुत बूढ़े आदमी ने दूसरा विवाह किया। उसकी पहली पत्नी से एक पुत्र भी था, जो आयु में छोटा था। बूढ़ा मरने लगा, तो विश्वास किया और एक पुराने दास को बुलाकर जंगल का वह स्थान दिखाया, जिसमें पेड़ के नीचे उसने धन गाड़ा था, कहा- ''पुत्र के बड़े हो जाने या आवश्यकता पड़ने पर यह धन उसे बता देना।'

मृत्यु के कुछ समय उपरांत घर में तंगी आई और धन की आवश्यकता पड़ी। दास का भी ईमान डगमगा गया। धन पूछने पर वह उस पेड़ के नीचे तो खड़ा हो जाता, पर यह कहता कि मुझे याद नहीं, वह पेड़ कौन-सा है?'' कई बार उसने यही किया। लड़का बड़ा चतुर था। उसने सोचा बार-बार जिस पेड़ के नीचे दास खड़ा होता है, उसी के नीचे धन होना चाहिए। एक दिन उसने यह समझकर वहाँ खोदा और धन मिल गया। माँ ने पूछा-''तुमने यह कैसे जाना?'' बेटे ने कहा-''चोर की दाढ़ी में तिनका होता है।''

कितना ही प्रयास किया जाए, पाप कभी छिपा नहीं रह सकता। व्यक्ति को अपने विवेक से भी काम लेना चाहिए।

परिवेश

गोगामेड़ी के मेले में

❒ डॉ. मदन गोपाल लढ़ा

आखिरकार एना व धारा की इच्छा पूरी हो ही गई।

एना व धारा दोनों सगी बहिनें हैं। अपने पापा की लाडली। एना आठवीं में पढ़ती है एवं धारा पाँचवीं में। दोनों पढ़ाई में बहुत होशियार है। पिछले साल एना अपनी कक्षा में अव्वल आई। धारा ने दूसरा स्थान पाया। इससे पापा बहुत खुश हुए। उसी वक्त उन्होंने पापा से गोगामेड़ी का मेला दिखाने की बात कही। पिछले साल अखबार में गोगा जी के मेले की खबरें पढ़ी थी। श्रावण पूर्णिमा से भाद्रपद की पूर्णिमा तक यहाँ भव्य मेला लगता है। पापा ने तुरंत मेला घुमाने की हामी भर दी। श्रावण का महीना आते ही दोनों ने पापा को अपना वादा याद दिलाया। पापा ने अपना वादा निभाया। वे बस से उन दोनों को लेकर हनुमानगढ़ जिले की नोहर तहसील के गोगामेड़ी गाँव पहुँच गए।

गोगामेड़ी में लोक देवता गोगाजी की मेड़ी बनी हुई है। गोगाजी के मंदिरों को मेड़ी कहा जाता है। पापा ने बताया कि हिंदू व मुस्लिम दोनों धर्मों के लोग यहाँ दर्शन के लिए आते हैं। सबसे पहले एना व धारा ने अपने पापा के साथ मंदिर में धोक लगाई। नारियल व प्रसाद चढ़ाया। संगमरमर से निर्मित समाधि के ऊपर घोड़े पर सवार गोगाजी की मूर्ति उत्कीर्ण है। मूर्ति के शीर्ष कोण पर सूर्य व चंद्रमा खुदे हुए हैं। उन्होंने मूर्ति देखी। एना ने सवाल किया, 'पापा गोगाजी कौन थे?' पापा मुस्कुराए। उनको पता था कि अब सवालों की झड़ी लग जाएगी।

'वीर गोगाजी ददरेवा के राजा जेवरसिंह व रानी बाछल के पुत्र थे। करीब नौ सौ वर्षों पहले उनका जन्म हुआ। वे बहुत पराक्रमी व गो भक्त थे।' पापा ने बताया।

फिर उन्होंने मेले में घूमना शुरू किया। गोगामेड़ी का परिसर बहुत बड़ा है। यह करीब साढ़े सात सौ बीघा में फैला हुआ है। राजस्थान ही नहीं, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, जम्मू एवं कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, बिहार, झारखंड आदि प्रदेशों से यहाँ श्रद्धालु दर्शन के

लिए आते हैं। हर साल लाखों लोग मेले में पहुँचते हैं। पैदल यात्रियों के हाथ में गोगाजी की ध्वजा थी। पापा ने बताया कि इसे 'निशान' कहा जाता है। कुछ श्रद्धालु ढोल, डैरूं व अन्य परम्परागत वाद्यों से गोगाजी की गाथा गा रहे थे। मेले में बहुत सारी दुकानें सजी थी। वहाँ मिठाई, खिलौने, कपड़े, खेती के उपकरण, बर्तन आदि बिक रहे थे। कहीं कठपुतली का खेल चल रहा था तो कहीं मदारी तमाशा दिखा रहा था। बच्चे झूला झूलने का आनंद ले रहे थे। पुरुष व महिलाएँ परम्परागत पहनावे में मेले में घूम रहे थे। एक तरफ पशु मेला चल रहा था। दूरदराज के लोग यहाँ अपने पशुधन के साथ आते हैं। पशुओं की खरीद व बिक्री होती है। प्रशासन व पुलिस के लोग व्यवस्था संभाले हुए थे। मंदिर से एक किलोमीटर दूर गुरु गोरखनाथ जी का धूणा है। पापा ने बताया कि यहाँ गुरु गोरखनाथ ने वर्षों तक तपस्या की थी। उनके धूणे पर सदियों से अखंड जोत जल रही है। यहीं पर गोरख गंगा तालाब है। यहाँ आने वाले श्रद्धालु तालाब में स्नान करते हैं व थोड़ी सी मिट्टी अपने साथ ले जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि यहाँ स्नान करने से चर्म रोगों से छुटकारा मिलता है।

'पापा, इतने सारे लोग यहाँ कैसे आते हैं?' मेले में भारी भीड़ देखकर एना ने पूछा।

'बस व रेल से। कुछ लोग निजी वाहनों से भी आते हैं। राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम मेले के लिए विशेष बसें चलाता है। अन्य राज्यों के परिवहन निगमों द्वारा भी मेले के लिए विशेष बसें चलाई जाती हैं। रेलवे मंत्रालय मेला स्पेशल गाड़ियों की व्यवस्था करता है। बहुत से लोग पैदल चलकर जाहरवीर गोगाजी के धोक लगाते हैं। कई श्रद्धालु तो मेला परिसर में घुसने के बाद पेट के बल पसर कर दो किलोमीटर की दूर तय करते हैं। गोगाजी के जयकारों से आसमान गूँजने लगता है। महिलाएँ मीठे सुरों में भजन गाती चलती हैं। शुक्ल व कृष्ण पक्ष की सप्तमी, अष्टमी व नवमी को यहाँ सबसे अधिक श्रद्धालु आते हैं। वे दूर-दूर से अपनी मन्नत लेकर यहाँ पहुँचते हैं। मन्नत पूरी होने पर दुबारा दर्शन करने आते हैं। पहले चरण में पूर्वांचल के श्रद्धालु अधिक आते हैं। वे पीले वस्त्र पहनकर गोगाजी के धोक लगाते हैं।' पापा ने बताया के समूचे उत्तरी भारत के गाँव-गाँव में गोगाजी के मंदिर मौजूद हैं। राजस्थान में तो 'गाँव-गाँव में गोगो, गाँव-गाँव में खेजड़ी' की कहावत प्रसिद्ध है। गोगाजी को मनाने व पूजा करने की परम्परा में भिन्नता है। हिंदु गोगाजी को 'वीर' रूप में पूजते हैं। मुस्लिम 'पीर' रूप में उनको पूजते हैं। यह तीर्थ साम्प्रदायिक सद्भाव का सशक्त प्रतीक है।

'पापा, मेले की सारी व्यवस्थाएँ कौन संभालता है?' इस बार सवाल करने की बारी धारा की थी। 'राज्य सरकार का देवस्थान विभाग, पशुपालन विभाग व जिला प्रशासन मेले का संचालन करते हैं। समाजसेवी लोगों व स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा निःशुल्क भण्डारे की व्यवस्था की जाती है। राजस्थान सरकार यहाँ यात्रियों की सुविधा के लिए आवास व अन्य व्यवस्थाएँ करवा रही हैं।' पापा ने जवाब दिया। घूमते-घूमते एना व धारा थक गई। शाम हो गई तब वे अपने शहर के लिए वापस रवाना हो गए। उनको मेले में घूमकर बहुत आनंद आया। इस यात्रा से उनको बहुत सारी नई जानकारियाँ मिली। आते वक्त उन्होंने अपने पापा से अगली बार फिर मेले में आने का वादा करवा लिया। वे दोनों बहुत खुश थी।

144, लढ़ा निवास, महाजन
बीकानेर-334604
मो: 9982502969

शैक्षिक चिन्तन

परीक्षा नहीं, मूल्यांकन चाहिए

❒ सत्यनारायण पंवार

कहावत है कि परीक्षा से ईश्वर भी घबराता है फिर इंसान की क्या औकात? उसी प्रकार अधिकतर विद्यार्थी भी बोर्ड परीक्षा के बारे में सोचकर उत्तेजित और बैचेन हो जाते हैं और उन्हें भय और चिन्ता सताने लगती है। ऐसी परिस्थिति में विद्यार्थियों की एकाग्रता भंग होने लगती है क्योंकि वे सोचते हैं कि जो कुछ भी उसने पढ़ा उसे वह कहीं भूल न जाए। वास्तव में परीक्षा विद्यार्थियों की सबसे बड़ी चुनौती है क्योंकि इसका भय विद्यार्थियों को बीमार कर सकता है जिसे हम 'परीक्षा का बुखार' कह सकते हैं। परीक्षा की चिन्ता और तनाव के कारण विद्यार्थियों की नींद हराम हो जाती है। कुछ छात्र सिर दर्द की दवाई लेने लगते हैं और कुछ छात्र स्मरण शक्ति बढ़ाने की दवाई लेते हैं। इतना ही नहीं कुछ छात्र अपने तनाव को कम करने के लिए न केवल धूम्रपान करते हैं इस में वृद्धि भी कर देते हैं।

परीक्षा के द्वारा पता चलता है कि छात्र ने विषय का कितना ज्ञान प्राप्त किया। साथ ही उस विषय को पढ़ाने वाले शिक्षक के पढ़ाने की क्षमता को भी आँका जा सकता है। परीक्षा में सफलता से छात्र को अगली कक्षा में प्रवेश मिलता है। परीक्षा के द्वारा प्रत्येक छात्र की मेहनत, सतत उद्यम, विनेयता और अनुशासन का पता चलता है। वास्तव में परीक्षाएँ शिक्षकों का पथ प्रदर्शन करती है। शिक्षा परीक्षा की पुस्तिकाओं की जाँच करने के बाद विषय के कमजोर क्षेत्रों को फिर से दोहरा सकती है। आजकल शिक्षा के क्षेत्र में परीक्षा ही शासित करती है इसलिए छात्रों को शुरू से ही गृहकार्य और ट्यूशन की आवश्यकता होती है। इतना ही नहीं परीक्षा प्रणाली छात्रों में Unhealthy competitive मनोवृत्ति को प्रोत्साहित करती है और छात्रों को बिना समझे विषय को रटने के लिए उत्साहित करती है। वास्तव में रट लेना अधिगम नहीं है। एक परीक्षक द्वारा एक ही विषय की दो बार परीक्षाएँ ली जाए तो एक छात्र को प्राप्तांक अलग-अलग मिलेंगे। अगर एक ही

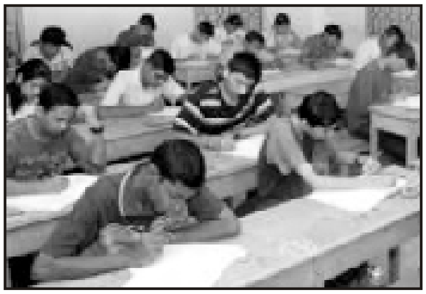

परीक्षा की उत्तर पुस्तिका को दो अलग-अलग परीक्षक जाँचते है तो वे अलग-अलग प्राप्तांक देते हैं। यानि सभी परीक्षाएँ अपर्याप्त, विश्वसनीयता और वैद्यता की शिकार होती है। जबकि परीक्षाओं में ये गुण विद्यमान होने चाहिए।

आजकल कुछ अति महत्त्वाकांक्षी अभिभावक अपने बच्चों की आवश्यकता से अधिक चिन्ता करते हैं। और सोचते है कि उनके बच्चे उनकी आशाओं के अनुकूल परीक्षा की तैयारी नहीं कर रहे हैं। ये अभिभावक अपने बच्चों के लिए ट्यूशन लगाते हैं, टेलीफोन और केबल कनेक्शन कटवा देते हैं, दोस्तों के साथ खेलना और अधिक देर तक बात करना बन्द करवा देते हैं और रिश्तेदारों से मिलने नहीं देते। इस प्रकार की बंदिशों के कारण उनके बच्चे हतोत्साहित हो जाते है और वे आत्महत्या करने की या घर से भाग जाने की सोचने के लिए बाध्य हो जाते हैं।

दिल्ली के पूर्व मनोचिकित्सक डॉ. अरुण ब्रूटा ने बताया कि उनके पास करीब 300 रोगी विद्यार्थियों की सूचना है। परीक्षा की चिन्ता से आत्महत्या करने की कोशिश की। जिनमें से 6 विद्यार्थियों ने आत्महत्या कर ली। इतना ही नहीं बोर्ड की परीक्षा की तैयारी करने वाले हजारों विद्यार्थियों के चेहरों पर चिन्ता की रेखाएँ और ऊँचे स्तर का तनाव दिखाई दे रहा है।

''स्कूल मेंटल हेल्थ प्रोग्राम' के संयोजक डॉ. पारिख, ने दिल्ली की सात नामी स्कूलों में सर्वेक्षण करके पता लगाया है कि बोर्ड की परीक्षा देने वाले 70 प्रतिशत विद्यार्थी चिन्ता और तनाव से ग्रसित हैं। करीब एक तिहाई की नींद हराम है और एक बटा छः सिरदर्द से पीड़ित दवा ले रहे हैं। इतना ही नहीं 10 प्रतिशत धूम्रपान करने में भी वृद्धि हुई हैं।

'न्यू स्टेट एकेडेमी' की प्राचार्या डॉ. संगीता भाटिया, का कहना है कि बोर्ड की परीक्षा में बैठने वाले छात्रों की चिन्ता का कारण अभिभावकों का अनुचित दबाव है और स्कूलों में दिनों दिन प्रतियोगिता का बना हुआ माहौल है।

डॉ. अरुण ब्रूटा, स्कूल मनोवैज्ञानिक ने बताया कि जिन 6 विद्यार्थियों ने आत्महत्या की, उन्होंने बताया कि उनकी आत्महत्या का कारण बोर्ड की परीक्षा में अधिक से अधिक अंक (80 प्रतिशत के ऊपर) प्राप्त करने की चिन्ता के साथ-साथ अभिभावकों का अनुचित दबाव था। इतना ही नहीं उन्हें इस बात की भी चिन्ता थी कि अगर वे 80 प्रतिशत से अधिक अंक नहीं ला पाएंगे तो उनके कुशाग्र बुद्धि वाले साथी उन्हें नहीं अपनाएंगे।

आजकल के बोर्ड की परीक्षा देने वाले विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का दृश्यविधान पाँच साल पहले वाले विद्यार्थियों से कमज़ोर है क्योंकि प्रतिस्पर्द्धा में वृद्धि हुई है। आजकल कुछ अभिभावक अपने बच्चों की आवश्यकता से अधिक चिन्ता करते हैं और सोचते हैं कि उनके बच्चे उनकी आशाओं के अनुकूल परीक्षा की तैयारी नहीं कर रहे हैं। इस प्रकार बोर्ड में बैठने वाले छात्रों को परीक्षा की चिन्ता तो होती है लेकिन अतिमहत्त्वाकांक्षी अभिभावक, हेल्पलाइन और सलाहकारों की नसीहत से उनकी चिन्ता में वृद्धि हो जाती है।

परीक्षा के भय का सामना करने के लिए प्रत्येक विद्यार्थी को साहसी और निर्भीक बनना चाहिए। बोर्ड की परीक्षा देने वाले सभी छात्रों को आत्मविश्वास रखते हुए अनुशासित हो कर परीक्षा की तैयारी करनी चाहिए। सभी छात्रों को निर्भीक होकर बोर्ड की परीक्षा को सालाना परीक्षा समझना चाहिए। सभी विद्यार्थियों को

अपने आप पर भरोसा रखकर साहसपूर्ण परीक्षा का सामना करना चाहिए। अतिमहत्त्वाकांक्षी अभिभावकों को अपने बच्चों के परिश्रम पर भरोसा करके और छात्रों पर किसी प्रकार के अनुचित अंकुश नहीं लगाना चाहिए। अपने बच्चों की काबलियत को दूसरे कुशाग्र बुद्धि वाले छात्रों से तुलना नहीं करनी चाहिए। सभी अध्यापकों, अभिभावकों और मीडिया वालों को परीक्षा में बैठने वाले छात्रों को अधिक से अधिक पढ़ने के लिए प्रेरित करके उनमें आत्मविश्वास पैदा करना चाहिए जिससे वे चिन्तामुक्त हो कर परीक्षा दें।

आजकल सभी लोग परीक्षा से तनाव युक्त छात्रों को तनाव से मुक्त होने की सलाह देते हैं और परीक्षा में अधिक अंक लाने में 24 घण्टे सहायता भी करते हैं लेकिन परीक्षा प्रणाली पर कोई अंगुली नहीं उठाता। यह मूलभूत सच्चाई कि हम विद्यार्थियों को परीक्षा के द्वारा ही शिक्षित नहीं कर सकते। वास्तव में आन्तरिक और बाह्य परीक्षाओं को मिलाकर निरन्तर मूल्यांकन की प्रक्रिया के द्वारा ही विद्यार्थी का वास्तविक उपलब्धि को नाप सकते हैं। केवल बोर्ड के सर्टिफिकेट प्राप्त करने से विद्यार्थी वास्तविक जीवन की चुनौतियों का सामना नहीं कर सकता। क्या मानव को जीवन में सफलता Academic Excellence के आधार पर मिलती है? कुछ कम्पनियों ने यह तय कर लिया है कि Top Rankers को नौकरियों में नहीं लेना चाहिए। उनके अलग मिजाज के कारण।

अल्बर्ट आईन्सटन कॉलेज की प्रवेश परीक्षा में फेल हुए। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपने जीवन में कभी परीक्षा नहीं दी। बिल गेट्स कॉलेज के प्रथम वर्ष में फेल हुए। इससे क्या पता लगता है कि परीक्षा में अधिक अंक प्राप्त करने वाला प्रतिभाशाली व्यक्ति होता है। वास्तव में परीक्षा में प्राप्तांकों के आधार पर हम किसी व्यक्ति की बुद्धि को नहीं आंक सकते। हमारे भारत में तो परीक्षा एक यंत्र है जिसके द्वारा विद्यार्थियों के रट्टा लगा कर उसे परीक्षा में उगल देने की काबलियत को निश्चित तारीख और समय पर नापा जा सकता है।

अब हमें ऐसे ढोंग से छुटकारा पाना चाहिए क्योंकि इस परीक्षा से पीड़ित लोगों को आत्महत्या तक करनी पड़ रही है। वास्तव में परीक्षा के द्वारा विद्यार्थियों के ज्ञान को नापने के लिए 'खुली-किताब' परीक्षा प्रणाली अपनानी होगी। ऐसी परीक्षा के द्वारा विद्यार्थियों की संकल्पना की समझ के बारे में पता चलेगा न कि रट्टा लगाने की क्षमता का। इतना ही हो सके तो विद्यार्थियों को पुस्तकालय में बैठाकर निश्चित समय के लिए पुस्तकों का प्रयोग करके परीक्षा ली जाय। वास्तव में परीक्षा विद्यार्थियों के अधिगम में बाधा डालती है इसलिए इस दोषपूर्ण परीक्षा प्रणाली को समाप्त कर दिया जाय।

शिक्षक का मुख्य काम है छात्रों के ज्ञान, समझ उपयोग लाने की रीति-नीति, आदर्श और व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाना। शिक्षक अपने शिक्षण उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए केवल पुस्तकों का ही सहारा नहीं लेते बल्कि शैक्षिक अनुभवों को अर्जित करने के लिए विद्यालय में अनेकानेक शैक्षिक सहशैक्षिक प्रवृत्तियों का आयोजन करते है। आश्चर्य की बात है कि सीखने के माध्यम अनेक हैं लेकिन परीक्षा ली जाती है महज पाठ्य पुस्तकीय ज्ञान की। परीक्षा के संकीर्ण तंत्र में वह व्यापकता कहाँ जो विद्यार्थी के ज्ञान के साथ-साथ समझदारी, तार्किकता, प्रत्युत्पन्नमति, सीखे हुए ज्ञान को उपायोजन, सद्व्यवहार सौन्दर्यबोध, कलात्मकता, कल्पनाशीलता, रचनाशीलता, सद्भावना, कर्मकुशलता आदि की भी जाँच कर सके। इससे कहीं अधिक व्यापकता, सततता, आत्मिकता, विविधता आदि मूल्यांकन में समाहित किए हुए है। मूल्यांकन भी लगातार और विस्तृत होना चाहिए। वास्तव में परीक्षा को मूल्यांकन से स्थानापन्न कर दिया जाय और शिक्षकों को यह दायित्व सौपा जाए कि छात्रों के सभी सोपानों पर नज़र रखे तो बेशक छात्रों के साथ न्याय होगा। अध्यापक के लिए मूल्यांकन के विभिन्न यंत्र हैं जैसे कि लिखित परीक्षा, मौखिक परीक्षा, प्रयोगात्मक परीक्षा, पर्यवेक्षण, साक्षात्कार, प्रश्नमाला, अवलोकन लिस्ट, रेकार्ड का तरीका। इस प्रकार एक शिक्षक एक छात्र का सालभर में विभिन्न शक्तियों का नाप तौल करके मूल्यांकन करेगा। इसलिए विद्यालयों में व्यापक और सर्वांगीण विधि का सूत्रपात किया जाय ताकि विद्यार्थियों के साथ न्याय हो सके और वे आगे बढ़ सके।

68, गोल्फ कोर्स स्कीम
जोधपुर-342011

कमियों को सम्हालना, अच्छाइयों को उछालना

घर के किसी सदस्य में विशेष कर बच्चों में कई कमियाँ भी होती हैं। कुछ बच्चे पढ़ने में कमजोर होते हैं। यदि हम बच्चों के सामने उसकी कमियों की चर्चा किसी अन्य से करेंगे या बच्चे से भी हर समय कमियों की चर्चा करेंगे तो बच्चे की कमियाँ दूर होने के स्थान पर ढीठ होने का खतरा अधिक है या वह स्वाभिमान हीनता (Inferiority complex) से ग्रस्त हो सकता है।

अतः माता-पिता को चाहिए कि बच्चों के विकास के लिए उनमें उत्साह भरें, उनमें जो अच्छे गुण हैं उनकी चर्चा अधिक न करें।

कभी-कभी ऐसा होता है कि पति पत्नी में भी किसी विषय पर मतभेद हो जाता है तो ऐसे मतभेदों की चर्चा बच्चों के सामने करने से बचना चाहिए।

आदेश-परिपत्र : दिसम्बर, 2016

1. राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल, जयपुर के केन्द्रीकृत मूल्यांकन कार्य हेतु नियुक्त परीक्षकों को तत्काल कार्यमुक्त करने के सम्बन्ध में।
2. प्रारम्भिक शिक्षा से सैट-अप परिवर्तन से माध्यमिक शिक्षा में आए शिक्षकों के बकाया एसीपी व वेतन, एरियर भुगतान के सम्बन्ध में।
3. शासन तंत्र के सभी स्तरों पर पारदर्शिता लाने, पहचान एवं जवाबदेही सुनिश्चित करने की दृष्टि से पालनार्थ निर्देश।
4. शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित 44वीं राज्य स्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता सत्र 2016-17 का आयोजन।

1. राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल, जयपुर के केन्द्रीकृत मूल्यांकन कार्य हेतु नियुक्त परीक्षकों को तत्काल कार्यमुक्त करने के सम्बन्ध में।

● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/मा-स/ओपन स्कूल/2007/244 दिनांक : 25.10.2016 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक-प्रथम/द्वितीय ● विषय : राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल, जयपुर के केन्द्रीकृत मूल्यांकन कार्य हेतु नियुक्त परीक्षकों को तत्काल कार्यमुक्त करने के सम्बन्ध में। ● प्रसंग : राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल, जयपुर का पत्र क्रमांकः प.12(01)मूल्यांकन/परीक्षा/2011/10261, दिनांक : 10.10.16

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक पत्र के क्रम में लेख है कि राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल, जयपुर राज्य सरकार की अति महत्त्वपूर्ण योजनाओं में से एक है। इसका उद्देश्य शिक्षा का सार्वजनीकरण करना एवं सस्ती व सुलभ शिक्षा प्रदान करना है। इसके द्वारा शिक्षा से वंचितों को अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से शिक्षित करने का प्रयास शासन के निर्देशानुरूप किया जाता है।

राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल, जयपुर की परीक्षाएँ वर्ष में दो बार माह मार्च-अप्रेल व अक्टूबर-नवम्बर में आयोजित की जाती है। परीक्षाओं की उत्तर पुस्तिकाओं के केन्द्रीकृत मूल्यांकन (Spot Evalution) कार्य हेतु जो कि मूल्यांकन अनुभाग, राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल, शिक्षा संकुल, जयपुर में ही होता है, के लिए बड़ी संख्या में योग्य एवं अनुभवी विषयाध्यापकों की आवश्यकता होती है। राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल, जयपुर द्वारा राज्य के विभिन्न विद्यालयों में नियुक्त शिक्षकों को केन्द्रीकृत मूल्यांकन कार्य हेतु लगाया जाता है। प्रासंगिक पत्र द्वारा राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल, जयपुर द्वारा अवगत करवाया गया है कि अनेक अवसरों पर संस्था प्रधानों द्वारा मूल्यांकन कार्य हेतु शिक्षकों को कार्यमुक्त नहीं किए जाने के कारण राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल, गया है कि अनेक अवसरों पर संस्था प्रधानों द्वारा मूल्यांकन कार्य हेतु के मूल्यांकन कार्य में बाधा उत्पन्न होती है, जिससे समय पर परीक्षा परिणाम घोषित करने में कठिनाई उत्पन्न होती है।

उपर्युक्त क्रम में आपको निर्देशित किया जाता है कि भविष्य में राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल, जयपुर द्वारा केन्द्रीकृत मूल्यांकन कार्य हेतु लगाए गए शिक्षकों को तत्काल कार्यमुक्त करने हेतु क्षेत्राधिकार के समस्त संस्था प्रधानों को निर्देशित किया जाना सुनिश्चित करें।

(अरुण कुमार शर्मा) उप निदेशक (माध्यमिक) माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर

2. प्रारम्भिक शिक्षा से सैट-अप परिवर्तन से माध्यमिक शिक्षा में आए शिक्षकों के बकाया एसीपी व वेतन, एरियर भुगतान के सम्बन्ध में।

● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/स्थिरी-अ/34810/2016-17 दिनांक : 21.11.2016 ● समस्त उपनिदेशक, माध्यमिक शिक्षा, समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा ● विषयः प्रारम्भिक शिक्षा से सैट-अप परिवर्तन से माध्यमिक शिक्षा में आए शिक्षकों के बकाया एसीपी व वेतन, एरियर भुगतान के सम्बन्ध में। ● प्रसंग : जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक-प्रथम, सीकर का पत्र दिनांक 24.08.2016

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक पत्र के संदर्भ में निर्देशित किया जाता है कि शासन के नीतिगत निर्णय की पालना में प्रारंभिक शिक्षा से सैट-अप परिवर्तन के पश्चात् माध्यमिक शिक्षा विभाग में पदस्थापित शिक्षकों व कार्मिकों के प्रारम्भिक सैट-अप में पदस्थापन अवधि के दौरान बकाया एसीपी व वेतन एरियर के भुगतान के सम्बन्ध में जिला शिक्षा अधिकारी/उपनिदेशक, माध्यमिक स्तर से बार-बार मार्गदर्शन हेतु पत्र प्राप्त हो रहे है।

अतः सैट-अप परिवर्तन के पश्चात् सम्बन्धित कार्मिक के बकाया एसीपी व वेतन एरियर सम्बन्धी भुगतान का आहरण माध्यमिक शिक्षा विभाग के स्तर पर ही किया जाना है। बकाया राशि के भुगतान से पूर्व सम्बन्धित कार्मिक की सेवा-पुस्तिका में अंकित प्रविष्टि की पूर्ण जाँच करें तथा सम्बन्धित कार्मिक का उक्त बकाया अवधि का जी.ए.-55 प्रारम्भिक शिक्षा विभाग से प्राप्त किया जाकर भुगतान किया जाना सुनिश्चित करें।

● **वित्तीय सलाहकार,** माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

3. शासन तंत्र के सभी स्तरों पर पारदर्शिता लाने, पहिचान एवं जवाबदेही सुनिश्चित करने की दृष्टि से पालनार्थ निर्देश।

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर ● परिपत्र

राज्य सरकार के प्रशासनिक एवं समन्वय विभाग के परिपत्र क्रमांक प.10(1) प्र.सु./सम./अनु-1/2012 दिनांक 18 मार्च, 2016 की पालना हेतु पूर्व में इस कार्यालय के समसंख्यक पत्र दिनांक 14.6.16 द्वारा निर्देशित किए जाने के बावजूद संबंधित स्तरों पर इसकी पूर्ण पालना नहीं की जा रही है। अतः इस संबंध में निर्देशित किया जाता है कि शासन तंत्र के सभी स्तरों पर पारदर्शिता लाने, पहिचान एवं जवाबदेही सुनिश्चित करने की दृष्टि से यह आवश्यक है कि समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा निम्नांकित निर्देशों की पालना अनिवार्य रूप से की जावें:-

1. समस्त अधिकारी/कर्मचारी एवं फील्ड में कार्यरत सभी कार्मिकों द्वारा अपने राजकीय कर्तव्य के निर्वहन के द्वारा प्रेषित/प्रस्तुत पत्रों, टिप्पणी, नोट एवं अन्य दस्तावेजों पर जब भी हस्ताक्षर किए जावें तो अपने हस्ताक्षर के नीचे अपना पूरा नाम, दिनांक एवं पदनाम आवश्यक रूप से अंकित किया जावे।
2. राजकीय पत्र व्यवहार करते समय, पत्र पर अपने हस्ताक्षर के नीचे तिथि, अधिकारी/कर्मचारी का नाम, पदनाम अंकित करने के साथ-साथ पत्र के आधार (Bottom) पर कार्यालय का पता, दूरभाष नम्बर, फैक्स नम्बर, विभागीय वेबसाइट, कार्यालय/अधिकारी की ई-मेल आई.डी. भी अंकित की जावें।
3. जिन प्रकरणों पर अधिकारी/कर्मचारी के दिनांकित हस्ताक्षर, नाम, पदनाम अंकित नहीं हो, उनकी पत्रावलियाँ उच्च अधिकारी द्वारा स्वीकार न की जाकर, संबंधित अधिकारी/कार्मिक को लौटाने की प्रक्रिया अपनाई जावें।

अनुपालना की सूचना इस कार्यालय को प्रस्तुत की जावें।

● **(बी.एल. स्वर्णकार)** आई.ए.एस., निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

4. शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित 44वीं राज्य स्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता सत्र 2016-17 का आयोजन।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● कार्यालय आदेश ● शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित 44वीं राज्य स्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता सत्र 2016-17 का आयोजन शिविरा पंचांग में दी गई तिथियों के अनुसार निम्न स्तरों पर उनके नाम के सम्मुख अंकित अवधि में होगीः-

जिला स्तर पर चयन - दिनांक 08.12.2016 से 09.12.2016 तक
मण्डल स्तर पर चयन - दिनांक 14.12.2016 से 15.12.2016 तक
मण्डल स्तर पर प्रशिक्षण- दिनांक 19.12.2016 से 23.12.2016 तक
राज्य स्तरीय प्रतियोगिता- दिनांक 27.12.2016 से 30.12.2016 तक

निदेशालय इकाई का चयन दिनांक 14.12.2016 से 16.12.2016 तक एवं प्रशिक्षण 19.12.2016 से 23.12.2016 तक होगा।

राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के आयोजन का दायित्व उपनिदेशक (माध्यमिक) शिक्षा विभाग, जोधपुर का है जिसका आयोजन प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बालोतरा (बाड़मेर) के तत्वाधान में दिनांक 27.12.2016 से 30.12.2016 तक होगा। इस प्रतियोगिता की समसत कार्यवाही पूर्व में निदेशालय द्वारा प्रसारित शिक्षा विभागीय कर्मचारी क्रीड़ा एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता नियमावली एवं मार्गदर्शिका तथा समय-समय पर हुए संशोधनानुसार सम्पादित होगी। उक्त प्रतियोगिता में बैडमिन्टन एवं टेबल टेनिस खेल हेतु चार-चार महिला खिलाड़ी सहित कुल 134 खिलाड़ियों से अधिक का चयन कर बालोतरा (बाड़मेर) नहीं ले जावें। जिला एवं मण्डल स्तर पर उक्तानुसार सम्भागी संख्या रहेगी। खेलानुसार एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत सम्भागियों की संख्या राज्य स्तरीय प्रतियोगिता हेतु निम्नानुसार होगी :-

खेल का नाम	खिलाडियों की संख्या	एथलेटिक्स में सम्भागी कुल खिलाड़ी			सांस्कृतिक कार्यक्रम	कुल खिलाड़ी
			40 वर्ष से अधिक	40 वर्ष से कम		
बास्केटबॉल	10	100 मीटर दौड़	02	02	सुगम संगीत	02
वॉलीबॉल	10	200 मीटर दौड़	02	02	एकाभिनय	02
टेबलटेनिस	0404 (महिला)	400 मीटर दौड़	02	02	एकलनृत्य	02
कैरम	04	800 मीटर दौड़	02	02	विचित्र वेशभूषा	02
शतरंज	02	4 गुणा 100 मीटर दौड़	04	04	हारमोनियम	01
बैडमिन्टन	0404 (महिला)	4 गुणा 400 मीटर दौड़	04	04	तबला वादन	01
कबड्डी	10	ऊँची कूद	02	02	ढोलक वादन	01
फुटबॉल	14	लम्बी कूद	02	02	झांझ वादन	
		त्रिकूद	02	02		
		तश्तरी फेंक	02	02		
		भाला फेंक	02	02		
		गोला फेंक	02	02		

राज्य स्तरीय प्रतियोगिता की सम्पूर्ण व्यवस्थाएं यथा खेल मैदान, उपकरणों, निर्णायक गण, आवास व्यवस्था, चिकित्सा एवं सुरक्षा व्यवस्था बिजली, पानी आदि की सुनिश्चितता प्रतियोगिता आयोजन के एक सप्ताह पूर्व आवश्यक रूप से की जावे। साथ ही प्रतियोगिता आयोजन विद्यालय द्वारा सम्भागी दलों को प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बालोतरा (बाड़मेर) पहुँचने हेतु रेल/बस मार्गों की सूचना प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बालोतरा (बाड़मेर) द्वारा प्रसारित कर समस्त सम्भागी दलों हेतु मण्डल अधिकारियों एवं निदेशालय को प्रेषित की जावें।

● **(बी.एल. स्वर्णकार)** आई.ए.एस. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/खेलकूद-1/35107/ 2016-17/05 दिनांक 23-11-2016

शिविरा पञ्चाङ्ग सत्र 2016-17

दिसम्बर 2016					
रवि		4	11	18	25
सोम		5	12	19	26
मंगल		6	13	20	27
बुध		7	14	21	28
गुरु	1	8	15	22	29
शुक्र	2	9	16	23	30
शनि	3	10	17	24	31

दिसम्बर 2016 ● कार्य दिवस-19, रविवार-4, अवकाश-8, उत्सव-2 ● 1 दिसम्बर-विश्व एड्स दिवस (SIERT), विश्व एकता दिवस (उत्सव)। **3 दिसम्बर**-विश्व विकलांगता दिवस का आयोजन (समावेशित शिक्षा के उन्नयन हेतु)। **8 से 9 दिसम्बर**-राज्य स्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता हेतु जिला स्तर पर चयन। **10 दिसम्बर**-मानव अधिकार दिवस (उत्सव)। **10 से 23 दिसम्बर**-अर्द्ध वार्षिक परीक्षा का आयोजन। **13 दिसम्बर**-बारावफात (अवकाश-चन्द्र दर्शनानुसार)। **14 से 21 दिसम्बर**-राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण सप्ताह का आयोजन। **15 से 16 दिसम्बर**-राज्य स्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता हेतु मण्डल स्तर पर चयन व दल गठन। **19-25 दिसम्बर**-राज्य स्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता हेतु मण्डल स्तर पर प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन। **24 दिसम्बर से 7 जनवरी**-शीतकालीन अवकाश (25 दिसम्बर को क्रिसमस डे), राज्य कर्मचारियों के हितकारी निधि के वार्षिक अंशदान को दिसम्बर के वेतन से निर्धारित दर पर कटौती की कार्यवाही करना। **24 से 26 दिसम्बर**-राज्य स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता हेतु प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन। **28 से 30 दिसम्बर**-राज्य स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता। **27 से 30 दिसम्बर**-राज्य स्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन। **नोट:-1.** माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व उन्नयन एवं कौशल विकास शिविर का आयोजन (शीतकालीन अवकाश के दौरान)। **2.** 10 दिसम्बर से पूर्व केजीबीवी बालिकाओं को आधारभूत वार्षिक सामग्री का वितरण करना (गर्म कपड़े/स्टेशनरी सहित)।

जनवरी 2017					
रवि	1	8	15	22	29
सोम	2	9	16	23	30
मंगल	3	10	17	24	31
बुध	4	11	18	25	
गुरु	5	12	19	26	
शुक्र	6	13	20	27	
शनि	7	14	21	28	

जनवरी 2017 ● कार्य दिवस-20, रविवार-5, अवकाश-6, उत्सव-5 ● 1 से 7 जनवरी-शीतकालीन अवकाश। **5 जनवरी**-गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती (अवकाश-उत्सव)। **12 जनवरी**-1. स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (राष्ट्रीय युवा दिवस-उत्सव), केरियर डे का आयोजन (माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय) 2. विद्यालय स्तरीय/जिला स्तरीय व्यावसायिक शिक्षा कौशल विकास प्रतियोगिता (RMSA)। **14 जनवरी**-मकर संक्रान्ति (उत्सव)। **15 से 31 जनवरी**-केजीबीवी में शैक्षिक किशोरी मेलों का आयोजन करना। **16 से 18 जनवरी**-राज्य स्तरीय 'जीवन कौशल विकास' बाल मेला का आयोजन (उच्च प्राथमिक कक्षाओं हेतु) (SIERT)। **23 जनवरी**-सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती, देश प्रेम दिवस (उत्सव)। **26 जनवरी**-गणतंत्र दिवस (उत्सव अनिवार्य, अवकाश)। **27 जनवरी (अमावस्या)**-समुदाय जागृति दिवस। **30 जनवरी**-शहीद दिवस (प्रात: 11.00 बजे दो मिनट का मौन)। **नोट:- 1.** माध्यामिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा विद्यार्थियों के लिए सृजनात्मक प्रतियोगिता का जिला स्तरीय आयोजन। **2.** माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा शिक्षकों के व्यावसायिक कौशल उन्नयन की राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं का आयोजन। **3.** तृतीय योगात्मक आकलन का आयोजन (जनवरी के तृतीय सप्ताह में) (SIQE /CCE संचालित विद्यालयों में)।

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम

माह : **दिसम्बर, 2016**

प्रसारण समय : **दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक**

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
01.12.2017	गुरूवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		विश्व एड्स दिवस एवं एकता दिवस
02.12.2016	शुक्रवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
03.12.2016	शनिवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
05.12.2016	सोमवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
06.12.2016	मंगलवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
07.12.2016	बुधवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
08.12.2016	गुरूवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
09.12.2016	शुक्रवार			अर्द्धवार्षिक पूर्व तैयारी अवकाश		
10.12.2016	शनिवार			अर्द्धवार्षिक परीक्षा 10 दिसम्बर से 23 दिसम्बर तक		
24.12.2016	शनिवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		

चरित्र निर्माण

शिक्षा व्यवस्था और मूल्यपरकता

❒ विजय सिंह माली

निर्माणों के पावन युग में हम
चरित्र निर्माण न भूलें ,
स्वार्थ साधना की आँधी में वसुधा
का कल्याण न भूलें ।। धु।।
शील विनय आदर्श शिष्टता तार
बिना झंकार नहीं है,
शिक्षा क्या स्वर साध सकेगी
यदि नैतिक आधार नहीं है,
कीर्ति–कौमुदी की गरिमा में संस्कृति का
उत्थान न भूलें। वसुधा का.....

शिक्षा मनुष्य जीवन के परिष्कार एवं विकास की प्रणाली है। जीवन के प्रत्येक अनुभव को शिक्षा कहा जाता है। जो कुछ भी व्यवहार मनुष्य के ज्ञान की परिधि को विस्तृत करे, उसकी अन्तर्दृष्टि को गहरा करे, उसकी प्रतिक्रिया का परिष्कार करे, भावनाओं और क्रियाओं को उत्तेजित करे अथवा किसी न किसी रूप में उसको प्रभावित करे, वह शिक्षा है। शिक्षाशास्त्र में व्यक्तित्व के संतुलित एवं सम्पूर्ण विकास को शिक्षा का लक्ष्य माना गया है। शिक्षा मनुष्य की आन्तरिक शक्तियों का सर्वांगीण अर्थात शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का विकास है। शिक्षा का सम्बन्ध जितना व्यक्ति से है उससे अधिक समाज से है। मानव जीवन में जो कुछ भी अर्जित है वह शिक्षा का परिणाम है। व्यक्ति का चरित्र, व्यक्तित्व, संस्कृति, चिंतन, सूझबूझ, कुशलताएँ, आदतें तथा जीवन की छोटी से छोटी बातें शिक्षा पर निर्भर हैं। वास्तव में शिक्षा प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानव शिशु सब प्रकार से विकसित होकर समाज में उपयुक्त स्थान ग्रहण करता है। शिक्षा के माध्यम से ही वह अपनी राष्ट्रीयता और संस्कृति ग्रहण करता है। शिक्षा का माध्यम शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास होता है। शिक्षा के द्वारा उसके चरित्र का निर्माण होता है उसका सामाजीकरण होता है और वह मनुष्य की संज्ञा पाने योग्य बनता है। शिक्षा के माध्यम से प्रत्येक पीढ़ी के साथ समाज की प्राचीन निधि का संरक्षण, संवर्द्धन एवं हस्तान्तरण होता रहता है। यदि शिक्षा न हो तो 'समाज' का जन्म ही नहीं हो।

भारतीय संस्कृति में शिक्षा को पवित्रतम प्रक्रिया माना गया है। गीता में श्री कृष्ण ने ज्ञान को पवित्रतम घोषित किया है, नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते महाभारत में कहा गया है– 'नास्ति विद्या समं चक्षु अर्थात विद्या के समान कोई दूसरा नेत्र नहीं है। शिक्षा एक प्रकाश है। अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाना शिक्षा का प्रमुख कार्य है। डा. अनंत सदाशिव अल्तेकर ने प्राचीन भारतीय शिक्षा के संदर्भ में ठीक ही लिखा– 'प्राचीन भारत में शिक्षा अन्तर्ज्योति और शक्ति का स्रोत मानी जाती थी, जो शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक शक्तियों के संतुलित विकास से हमारे स्वभाव में परिवर्तन करती है तथा उसे श्रेष्ठ बनाती है। इस प्रकार शिक्षा हमें इस योग्य बनाती है कि हम समाज में एक विनीत और उपयोगी नागरिक के रूप में रह सकें। यह प्रत्यक्ष रूप में हमें इहलोक और परलोक दोनों आत्मिक विकास में सहायता देती है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार ' शिक्षा व्यक्ति निर्माण की प्रक्रिया है जो बच्चे को संस्कार देती है और उस में उपस्थित दिव्यता का प्रकटीकरण करती है।' महर्षि पाराशर ने शिक्षा को परिभाषित करते हुए कहा है– 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात शिक्षा वह है, जो हमें अज्ञान से मुक्त करे। हमारे यहाँ समग्र शिक्षा का विचार है। भारतीय शिक्षा का यह उद्देश्य कभी नहीं रहा कि बालक का केवल शारीरिक विकास हो या बालक के मस्तिष्क को जानकारियों से भर दे या किसी विषय विशेष की एक कला के बारे में जानकारी दें जो आगे चलकर उसे आजीविका प्राप्त करने में सहायक हो अपितु हमारी शिक्षा का उद्देश्य रहा–आत्मज्ञान प्राप्त करना। अत: हमारे ऋषियों ने ऐसी शिक्षा प्रणाली दी है जो उम्र के साथ साथ बालक का विकास करती है, जिससे वह चिंतन के द्वारा स्वयं को जान सके, आत्मज्ञान प्राप्त हो और उसमें विश्व कल्याण की भावना विकसित हो और वह 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का पक्षधर बने।

हमारी इस शिक्षा प्रणाली को सबसे पहले उत्तर– पश्चिमी सीमा से प्रवेश करने वाले आक्रमणकारियों ने बहुत हानि पहुंचाई तथापि भारतीय शिक्षा का कल्पवृक्ष लहलहाता रहा। सारे विश्व के लोग यहाँ शिक्षा पाने आते रहे, नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला विश्वविद्यालय पर हमे गर्व बना रहा। देश में तो सभी लोग पूर्णत: शिक्षित होते थे। ब्रिटिश शासन के भारत में प्रस्थापित होने के बाद तक यह स्थिति थी। 19 वीं सदी के प्रारम्भ में अंग्रेजों ने भारतीय शिक्षण व्यवस्था को बदलने का विचार किया। तब वस्तुस्थिति का पता करने के लिए 1823 में ब्रिटिश कलेक्टरों द्वारा तीनों प्रेसिडेन्ट बंगााल, मद्रास और बॉम्बे में विस्तृत सर्वेक्षण कराया गया। सर्वेक्षण के तथ्य विस्मयकारी हैं। महात्मा गाँधी के शिष्य डॉ. धरमपाल ने लंदन से इंडिया हाउस से जो मूल दस्तावेज प्राप्त किए उनमें इस सर्वेक्षण की रिपोर्ट भी थी। 'भारतीय शिक्षा का रमणीय वृक्ष' नामक इस पुस्तक में डॉ. धरमपाल ने इसे पूर्वरूपेण जस का तस दिया था। इसके अनुसार ब्रिटिश शिक्षा पद्धति के लागू होने से पूर्व हमारे देश में शिक्षा का प्रसार सर्वव्यापी था। लार्ड मैकाले ने 2 फरवरी 1835 को ब्रिटिश संसद में भारत के बारे में कहा 'मैं पूर्ण भारत में घूमा और मैंने एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं देखा जो चोर हो, भिखारी हो। मैंने इस देश में इतना धन, ऐसे उच्च नैतिक मूल्य, ऐसे उच्च कलेवर के लोग देखे हैं कि मैं समझ नहीं पाता कि हम कभी देश को जीत सकेंगे, देश की रीढ़ की हड्डी कौन तोड़े जो उसकी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत है। इसलिए मेरा सुझाव है कि हमें उनकी प्राचीन शिक्षा पद्धति व संस्कृति को अपनी शिक्षा प्रणाली से प्रतिस्थापित करना होगा; क्योंकि मैकाले प्रणीत अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली ने हमे मानसिक गुलाम बना दिया, हम भारतीय जीवन मूल्यों से कट गए। ब्रिटिश हाउस ऑफ कॉमन्स के सदस्य जॉन ब्राइट ने 1853 में सदन

मे गर्वोक्ति की–''हमने भारतीय सुन्दर शिक्षण व्यवस्था को पूरी तरह नष्ट कर दिया। सारा भारत निर्धनता दरिद्रता में जी रहा है। 2 करोड़ 90 लाख पौण्ड हम वसूल करते है और केवल 66 लाख पौण्ड वापस देते हैं।'' धीरे धीरे भारतीय केवल रक्त रंग से भारतीय रहा लेकिन स्वाद, विचार, नीति और बुद्धि से अंग्रेज बन गया। देश के स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान पूज्य बापू जब 1931 मे गोलमेज सम्मेलन मे भाग लेने लंदन गए तो 20 अक्टूबर 1931 को रॉयल इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल अफेयर द्वारा आयोज्य 'भारत का भविष्य' विषयक व्याख्यान में कहा था कि अंग्रेजों ने भारत में प्रचलित शिक्षा व्यवस्था की देखभाल करने के स्थान पर इसे समूल नष्ट करने का बीड़ा उठा रखा है संकल्प ले रखा है। अंग्रेजों ने भूमि खोदकर भारतीय शिक्षा पद्धति रूपी विशाल वृक्ष की जड़ों को खोदना प्रारम्भ किया और इन जड़ों को खुला ही छोड़ दिया। देखते ही देखते यह सुन्दर वृक्ष नष्ट होने लगा।

15 अगस्त 1947 को देश स्वतंत्र हुआ, शासन की बागडोर हमारे अपने लोगों के हाथो में आई। देशवासियों ने सोचा अब तो भारत का भाग्योदय होगा, शिक्षा के दिन फिरेंगे हमारी अपनी शिक्षा प्रणाली होगी, भारत केन्द्रित शिक्षा होगी।

शिक्षा की सम्यक दृष्टि से होगा समग्र
परिवर्तन परिवर्तन शुभ परिवर्तन
शिक्षा से अज्ञान मिटेगा,
भेदभाव का तिमिर हटेगा
शिक्षा की आलोक किरण से,
मिथ्या रूढिबंध कटेगा
पावन सुखद सुमंगल वेला,
दृढ संकल्प भरा होगा मन
परिवर्तन शुभ परिवर्तन

लेकिन अफसोस, स्वतंत्रता के पश्चात् देश का शासन ऐसे लोगों के हाथों में आया जो मार्क्स–मैकाले के मानस पुत्र थे, जो भारत केन्द्रित नहीं यूरोप केन्द्रित विचार के अनुगामी थे। जो इस देश का सत्य राम, कृष्ण, सूर, तुलसी, रसखान मे नहीं मिल्टन, वर्डसवर्थ, शेक्सपियर मे ढूंढ़ते थे। फलत: विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग माध्यमिक शिक्षा आयोग भारतीय शिक्षा आयोग का गठन कर रिपोर्ट प्रस्तुत तो करवाई पर उन्हें पूर्ण रूपेण अमली जामा नहीं पहना पाए इन रिपोर्टों के मूल तत्व 'मूल्यपरकता' को हम विस्मरण कर बैठे जिसका खामियाजा इस पीढ़ी को उठाना पड़ रहा है।

शिक्षा समाज का दर्पण है और मूल्य उसके प्रतिबिम्ब। व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को एवं समाज कल्याण तथा सामाजिक समायोजन को कार्यान्वित करने वाले मार्गदर्शक तत्वों को मूल्य कहते हैं। जिन तत्वों एवं गुणों द्वारा व्यक्ति समाज एवं सम्पूर्ण विश्व में आपसी सुसंवाद होकर सभी का विकास होता हैं। वे तत्व मूल्य कहलाते हैं। किसी देश काल परिस्थिति में जनसामान्य की उदात्त मान्यताएँ ही मानव मूल्य होती है। जिनका ध्येय व्यापक लोककल्याण है। जिससे व्यक्ति का उदारीकरण हो। मिल्टन ने ठीक ही लिखा है–जीवन मूल्य ओस की बूंदों सदृश नहीं हैं जो मौसम के अनुसार दिखाई दे इनकी जड़ें प्रत्येक प्राणी में बहुत गहरी होती है तथा उनका वास्तविकता से घनिष्ठ सम्बन्ध हैं। डॉ. एकनाथ गावंडे के अनुसार "It is a such adjusted behaviour which is conductive to the development of himself society, nation and internation understadind." सचमुच मूल्य वह व्यवहार है जिसके द्वारा व्यक्ति अच्छे बुरे कर्मो की पहचान कर एक जिम्मेदार व्यक्ति बन सकता है। मूल्य शब्द संस्कृत के मूल धातु रूप से बना होने के कारण इसका अर्थ मूल में जड़ से है, जो बीज रूप में वृक्ष में विद्यमान है, जो मूलभूत आधार तत्व है। इसका अंग्रेजी पर्याय Value है जो ऑक्सफॉर्ड आंग्ल शब्दकोश में लैटिन के Valere शब्द से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है जिसकी कीमत बहुत है अर्थात् Value शब्द का अर्थ कीमत, दर्जा, व्यक्ति के गुण विशेष , पात्रता आदि होता है।

मूल्य, श्रेष्ठ जीवन की तलाश हैं। मूल्य अह्म; (मैं) से वयम्; हम तक पहुँचने के मार्ग के पथ पर प्रदर्शक हैं। हम जिन गुणों को व्यवहार में वरीयता देते हैं, वे मूल्य हैं। हमारा सहज और प्राकृत व्यवहार सामान्य व्यवहार है। पर जब हम अपने व्यवहार को श्रेष्ठ बनाते हैं, उस समय जिन गुणों को हम वरीयता देते हैं, वे मूल्य हैं। डॉ. नगेन्द्र के शब्दों में मानव विश्व का सर्वश्रेष्ठ रूप है, उसकी अस्तित्व रक्षा ही जीवन का प्राथमिक मूल्य है, किन्तु मानव जैविक घटक मात्र नहीं है वह सम्पूर्ण बौद्धिक रागात्मक तथा ऐन्द्रिय विभूतियों से सम्पन्न व्यक्तित्व का नाम है। जो सामाजिक परिवेश में अपना विकास करता है और इसी विकास का नाम जीवन है, अत: मानवत्व ही मूल्य है और जीव ही चरममूल्य है।

मूल्य के अर्थ एवं परिभाषाओं के आलोक में मूल्य की निम्नलिखित विषेशताएँ दृष्टि गोचर होती हैं

1. मूल्य जीवन के मानक रूपी मान दंड हैं।
2. मूल्यों को समाज द्वारा स्वीकृति दी जाती हैं।
3. मूल्यों को आकांक्षाओं के रूप में धारण करते हैं।
4. मूल्यों की प्रकृति व्यावहारिक होती हैं।
5. मूल्यों का सम्बन्ध धर्म एवं संस्कृति से होता है।
6. मूल्यों का सम्बन्ध भावनाओं से होता है।
7. मूल्यों में नैतिक विषयों का पालन किया जाता है।
8. मूल्यों का विकास अनुकरण से होता है।
9. जीवन के प्रति दृष्टिकोण को मूल्य मानते है।
10. मूल्यों का संदर्भ बिन्दु समाज होता है, इसका सम्बन्ध भावात्मक पक्ष से अधिक होता है।
11. मूल्य व्यक्ति की इच्छाओं और अभिवृतियों पर निर्भर होते हैं। अभिवृत्तियों की गहनता ही मूल्यों का रूप होती है।
12. मूल्यों के अनुपालन करने में व्यक्ति को आनंद तथा संतोष मिलता है। मूल्यों का बोध आचरण से होता है।
13. मूल्यों का विकासक्रम ज्ञानात्मक पक्ष से आरम्भ होता है तथा भावना पक्ष को विकसित करके क्रियात्मक पक्ष में प्रदर्शित होता है।
14. मूल्यों के आचरण से धर्म, समाज, संस्कृति तथा राष्ट्र की पहिचान होती है। सभी राष्ट्र तथा समाज मूल्यों पर बल देते हैं तथा उनकी रक्षा भी करते हैं।

वास्तविक रूप में मूल्य निर्माण की प्रक्रिया बहुत धीमी व संयुक्त होती है। व्यक्ति ने

मूल्यों को अर्जित किया है तभी कहा जा सकता हैं जब उसके वर्तन में परिवर्तन हुआ हैं। मूल्य निर्माण की प्रक्रिया नीचे दिए गए रेखा चित्र में प्रदर्शित है-

जानकार → ज्ञान → अभिरुचि → अभिवृत्ति → मूल्य → कृति

प्रसिद्ध शिक्षाविद् जे.एस. राजपूत के अनुसार मूल्य अर्जन की प्रक्रिया निम्न प्रकार से होती हैं-

मूल्यों की जानकारी → मूल्यों का स्पष्टीकरण एवं मूल्यांकन → मूल्यों का चुनाव → मूल्यबद्ध एवं प्रबलीकरण → बार बार निग्रह से कृति

मूल्य कई प्रकार के होते हैं। युग परिवर्तन के साथ साथ मूल्य बदलते हैं। अर्थ और काम प्रवृतिपरक मूल्य हैं तो धर्म और मोक्ष निवृत्ति मूल्य। भारतीय मूल्य का मेरुदण्ड निवृत्तिपरक प्रवृत्ति है। सर्वसामान्यत: मूल्यों का वर्गीकरण इस प्रकार किया जाता है- 1. व्यक्तिगत मूल्य 2. सामाजिक मूल्य 3. राष्ट्रीय मूल्य 4. पर्यावरण मूल्य स्वावलम्बन, स्वच्छता, श्रमप्रतिष्ठा, निर्भयता, विज्ञाननिष्ठा, खिलाड़ी वृत्ति, प्राणी-दया, अनुशासन प्रियता, इत्यादि व्यक्तिगत मूल्य है। समता, बंधुत्व, सर्वधर्म सहिष्णुता, न्याय प्रियता, सौजन्य, आदरभाव, सत्यप्रियता, अहिंसा, मानवता, निःसर्गप्रेम सामाजिक मूल्य हैं। देशभक्ति राष्ट्रीय मूल्य है तो पर्यावरण संरक्षण, संवर्धन व पर्यावरण चेतना पर्यावरण मूल्य है। डॉ. धर्मपाल मैनी ने मूल्यों के व्यक्तित्व, भौतिक, आर्थिक, नैतिक, सामाजिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक प्रकार बताए हैं। यदि मूल्यों के प्रकार की समीक्षा की जाए तो लम्बी सूची बन जाती है। दार्शनिक मूल्य मीमांसा में नैतिक मूल्य सौन्दर्यानुभूति मूल्य सामाजिक मूल्य और धार्मिक मूल्य ऐसे चार प्रकार बताए हैं अर्थात मावन जीवन के बौद्धिक, सामाजिक, राजकीय, आर्थिक, भौतिक, सांस्कृतिक व सौन्दर्य विषयक अंगों के सम्बन्ध में नैतिक, समाज मान्य, उत्कृष्ट, श्रेयस, प्रेयस है वही मूल्य है।

भारत में मूल्यपरकता वैदिक काल से ही रही है। ऋग्वेद में कहा गया है-एकं सत् विप्र: बहुता वदन्ति। (सत्य एक ही है, विद्वान उसकी कई प्रकार से व्याख्या करते है)

नार्यमणं पुण्यति नो सखाय केवलाद्यो भवति केवलादी (जो देवता और पोष्य वर्ग को खिलाए बिना अकेला खाता है,वह पाप स्वरूप है।)

माँ काकम्बरम उदुवहो वनस्पतिम् अशाजीर्वि हि बीजथ:। (यह मनुष्य को परामर्श है कि वृक्षों की कष्ट नहीं देना चाहिए, नहीं उन्हें नष्ट करना चाहिए क्योंकि वे कई पक्षियों एवं कीटों को आश्रय देते है।)

अर्थर्ववेद में कहा गया है-

माता भूमि: पुत्रोअहं पृथिव्या। (भूमि माता है, मैं पृथ्वी का पुत्र हुँ)

रमन्तो पुण्यां लक्ष्मीर्या पापीस्ता अनीनशम् (पुण्य की कमाई मेरे घर की शोभा बढ़ावे। पाप की कमाई मैने नष्ट कर दी है।

महाभारत में कहा गया है-

'अश्व मेघ सहसाद् हि सत्यमेव विशिष्यते (सत्य बोलना हजार अश्वमेध यज्ञ से भी श्रेष्ठ है)

अहिंसा परमोधर्म: (अहिंसा ही परम धर्म है)
नास्ति सत्यात् परं दानं नास्ति सत्यापरं तप:
नास्ति सत्यात् परो धर्मो नानृतात पातकं
परम्!!

(सत्य से बढ़कर न दान है, न तप। सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है झूठ से बढ़कर कोई पाप नहीं है) उपनिषद के तीन द द द स्वर हमें दमन, दान, दया को जीवन मूल्यों के रूप में अपनाने की शिक्षा देते हैं। तैतरिय उपनिषद के प्रसिद्ध वचन है - मातृ देवो भव:, पितृ देवो भव:, आचार्य देवो भव:, अतिथि देवो भव:। स्वाध्यायन्म प्रमद:। बृहदारण्यकोपनिषद में कहा गया है -'असतो मा सद्गमय। कठोपनिषद कहता है- 'न वित्तेण तर्पणीयो मनुष्य:। (मनुष्य को धन से कभी भी तृप्त नहीं किया जा सकता है।)

श्रीमद्भगवत्गीता में कायिक (शारीरिक), वाचिक व मानसिक तपों का उल्लेख है-

कायिक तप-ईश्वर,विद्वान महापुरुष तथा गुरुजनों का पूजन, ब्रह्मचर्य व अहिंसा

वाचिक तप-प्रीतीकर, सत्य, प्रिय और हितकारी वाक्य,स्वाध्याय का अभ्यास

मानसिक तप-प्रसन्नमन, एकता, सौम्यत्व, मितभाष्यण, आत्मसंयम, विचारों व भावों की पवित्रता।

मनु महाराज ने धृति, क्षमा, दान, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्य, अक्रोध को धर्म के दस लक्षण बताये है। पंतजलि ने आध्यात्मिक विकास के लिए अष्टांग योग की प्रस्तुति दी। जैन दर्शन में पंच महाव्रत (सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचय), त्रिरत्न (सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शक, सम्यक चरित्र), अणुव्रत बौद्ध दर्शन का अष्टांगिक मार्ग, गुरुनानक समेत कई संत-संन्यासियों की वाणियां, पंचतत्र, हितोपदेश अन्य संस्कृत ग्रंथों के सुभाषित तथा महात्मा गाँधी के एकादश व्रत-सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह, अभय, अस्पृश्यता, निवारण कायिक श्रम, सर्वधर्म समभाव, विनम्रता आदि मूल्य ही है।

भारत का चिर वैभव फिर से
लाने को हम सिद्ध हुए हैं।
विद्याव्रत में साधक बन हम
'भा' में रत भारत करते है।
संयम तप और त्याग क्षमामय
जीवन का आचार सिखाती
आत्मनिष्ठ और आत्मरूप बन
मर्त्य जगत को अमृत बनाती
जगदुद्धारिणी धर्मसम्पदा
का नित सेवन हम करते हैं।

मूल्य शिक्षा से व्यक्तित्व विकास होता है। बुद्धि कुलीनता, इन्द्रियनिग्रह, अध्ययन पराक्रम, मितभाषण, दान और कृतज्ञता यह आठ गुण मानव को चमकाते हैं। राष्ट्र व्यक्ति पर निर्भर करता है। व्यक्ति स्वस्थ, स्फूर्तिवान, उद्यमी, त्यागी होता है। तब देश महान् बनता है। स्वार्थी, अनैतिक, आलसी व भ्रष्ट व्यक्ति देश के लिए क्लेश का कारण होता है। वह देश के विकास में रोड़ा उत्पन्न करता है। मूल्य शिक्षा से स्वस्थ व्यक्ति को व्यक्तित्व विकसित करने में योगदान मिलता है। मानवीयता, शील तथा अच्छा आचरण ही शिक्षा है। इससे उसका स्वभाव बनता है, जो उसका जीवनभर साथ निभाता है। उसके जीवन में भारतीय परम्परा के आधार पर आध्यात्मिक मूल्य का बीज बोने से जीवनांकुर होगा व जीवन में प्रेम, आत्मीयता मिलने से व्यक्तित्व विकसित होगा।

आज का मानव भौतिकवाद में अधिक विश्वास रखता है, वह भौतिक पदार्थो की प्राप्ति

के लिए, प्रकृति के तत्वों को वश में करने के लिए व परमाणु से लेकर विशालकाय ग्रहों व नक्षत्रों के रहस्य को जानने के प्रयत्न में जीवन के सच्चे सुख और शांति से दूर जा रहा है। आज भौतिक प्रगति हो रही है परन्तु मानसिक प्रगति का ह्रास हो रहा है। आज हमें दैवीय लक्षण व महान् चरित्र के मनुष्य ढूँढ़ने पड़ते हैं। भारत ने मूल्यों के आधार पर स्वतंत्रता प्राप्त की पर आज मूल्यह्रास के कारण यह स्वतंत्रता परतत्रंता में बदल गई है। व्यक्तिगत जीवन उभारने के लिए, सामाजिक समता साधने के लिए, राजकीय भ्रष्टाचार रोकने के लिए भी मूल्यधिष्ठित शिक्षा का महत्व है।

आज हमारा भारत देश सामाजिक कुरीतियों से जकड़ा हुआ है, संस्कृति के प्रति गर्व का भाव नही रहा, भाषावाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद, साम्प्रदायिकता, अलगाववाद व आतंकवाद के चंगुल में हम फंसते जा रहे हैं। समाज के लोगों में एक दूसरे से प्रेम, स्नेह, सहानुभूति, सहयोग, ईमानदारी, सहिष्णुता, उदारवादिता, आत्मसम्मान, कर्तव्यनिष्ठा, विवेकशील, विनम्रता, आदर, आत्मानुशासन में कमी दिखाई देने लगी है। अनैतिक आचरण करने से लोगों का परहेज धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा है। हिंसा हमारे जीवन में प्रवेश कर चुकी है, बाहुबल सम्पन्न दानव संस्कृति व मूल्यों को कुचलने का कुचक्र रच रहा है। दूसरों का हिस्सा छीनकर स्वयं ले लेने, हराम का या हेराफेरी का या दो नम्बर का पैसा बटोरना उन्हें भाता है, भ्रष्टाचार का बोलबाला है, पड़ोसी की भूख, प्यास, कठिनाइयों, कष्टों, बीमारी व अशिक्षा से उन्हें कोई सरोकार नही हैं, ऐसे में शिक्षा में मूल्यपरकता की आवश्यकता बढ़ जाती है।

आधुनिक भारतीय समाज को अगर नई ऊँचाई पर लेकर जाना है, नए शिखर पर ले जाना है, तो शिक्षा में मूल्यों का होना आवश्यक है, इससे हम अपने जीवन आदर्श और अपने अस्तित्व को जान सकते हैं। मूल्य परक शिक्षा ही आदर्श शिक्षा का मूलमंत्र है और आज के उभरते भारत को इस शिक्षा की आवश्यकता दृष्टिगोचर होती है। तत्व बिना राजकारण, श्रम बिना सम्पति, नीति बिना व्यापार, चारित्र्य बिना शिक्षा सद्‌विवेक, बुद्धि बिना विकास, मानवता बिना विज्ञान, त्याग बिना पूजा यह सामान्य सप्तदोष मूल्य रहित जीवन का परिणाम बताती है। मूल्याधारित शिक्षा ही Head, Hand, Heart and Health का विकास कर सकती है, जो गाँधीजी के अनुसार सच्ची शिक्षा है।

महात्मा गाँधी ने कहा था कि ज्ञान का अंतिम लक्ष्य चरित्र निर्माण है। स्वामी रामकृष्ण परमहंस का विचार था- चरित्रवान बनो, जगत अपने आप मुग्ध हो जाएगा। स्वामी विवेकानन्द ने नव विवाहित अमेरिकन दम्पति को बताया था कि आपके देश में दर्जी किसी भी व्यक्ति को सभ्य और सुसंस्कृत बनाता है, भारत में उदात चरित्र ही किसी भी व्यक्ति को सुसंस्कृत बनाता है। भारतीय समाज में विद्वान से ज्यादा चरित्रवान का महत्व है। वर्तमान में विश्व में चरित्र का संकट है। If wealth is lost nothing is lost, If health is lost something is lost But character is lost everything is lost. चरित्र मूल्य शिक्षा के बिना संभव नही है। चक्रवर्ती राजगोपालाचारी का विश्वास था कि विद्याथियों का चरित्र नैतिक शिक्षा से ही संभव है। प्राचीनकाल से धार्मिक व नैतिक शिक्षा चरित्र निर्माण में अपनी भूमिका आई है। राधाकृष्णन विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग, मुदालियर माध्यमिक शिक्षा आयोग, कोठारी राष्ट्रीय शिक्षा आयोग, नई शिक्षा नीति में भी नैतिक शिक्षा की बात कही गई है।

महर्षि अरविन्द ने शिक्षा को परिभाषित करते हुए लिखा है - ''हर व्यक्ति में दिव्यता का अंश है, शिक्षा का उद्देश्य है उसे खोजे, विकसित करे और प्रयोग में लाये।'' गाँधीजी के अनुसार सच्ची शिक्षा छात्र के मस्तिष्क को सूचनाओं से भर देना या परीक्षा पास करना नहीं हैं अपितु चरित्र का सही विकास करना है'' स्वामी विवेकानन्द भी मानते थे कि मनुष्य पशुता, मानवता एवं दिव्यता का समन्वित रूप है। मानवीयता और दिव्यता को जागृत करने के लिए मूल्यशिक्षा की आवश्यकता है। छात्र ही भविष्य के विचारक, शिक्षक, शोधार्थी, व्यवसायी, नेता, सामाजिक कार्यकर्ता, पारिवारिक, सदस्य एवं नागरिक बनेंगे इन्हें ही मानवीय गरिमा के मूल्य न होंगे तो ये भारत की विविध समस्याओं का निराकरण कैसै करेंगे? अतएव शिक्षा मे मूल्यपरकता अनिवार्य एवं अपरिहार्य है।

मूल्य अपनी प्रकृति और स्वरूप में सात्विक और मंगलकारी होते हैं। लोक कल्याण की भावना और विचारों में उदारता मूल्यों की कसौटी समझी जा सकती है। मूल्य हमारे लिए और मानवता के लिए महत्वपूर्ण है। जीवन मूल्यों का मूल आधार लोक कल्याण की चेतना है। मूल्यविहीन समाज लम्बे समय तक अपने को एकता के सूत्र में बाँध कर नहीं रख सकता। सामाजिक संस्थाएँ ध्वस्त होने पर 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' का प्रेरक विचार धराशायी हो जाएगा। मूल्यों के महत्व को इस बात से समझा जा सकता है कि विचारक जीवन मूल्यों को भाषा विकास से भी अधिक महत्व का मानते हैं। डॉ.बी.एस. डागार का विचार है कि नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास को बच्चों की पाठ्यचर्या का अत्यन्त महत्वपूर्ण क्षेत्र माना गया है संभवत् भाषा विकास से भी अधिक महत्वपूर्ण। गाँधीजी की दृष्टि में व्यक्ति को साक्षर करने वाली शिक्षा की अपेक्षा जीवन मूल्यों का महत्व मनुष्य के जीवन में अधिक है। यदि शिक्षा में मूल्य को सम्मिलित नहीं किया गया तो शिक्षा व्यक्ति को व्यक्तिगत या सामाजिक कल्याणकारी उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित नहीं कर सकती, वस्तुतः मूल्यहीनता की स्थिति में शिक्षा को शिक्षा कहना ही व्यर्थ है। यही कारण है कि 1938 में गठित वर्धा योजना से लेकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 तक सभी आयोगों के प्रतिवेदनों व अनुशंषाओं में किसी न किसी रूप में मूल्यशिक्षा पर जोर दिया गया है। संसद द्वारा गठित एस.वी. चव्हाण समिति ने मूल्यों की शिक्षा के सबंध में कहा आमतौर पर यह महसूस किया गया कि ऐतिहासिक, भौगोलिक और सामाजिक विभिन्नताओं के बावजूद कुछ सामान्य तत्व है जो पूरे देश को जोड़ते हैं। प्राचीनकाल से ही यहाँ विभिन्न धर्म, पंथों के महान ऋषि और चिंतक होते रहे हैं। इन सब ने कुछ शाश्वत मूल्यों की बात कही। ये मूल्य हमारे बच्चों को सिखाए जाने चाहिए। आचार्य महाप्रज्ञ व डॉ.ए.पी.जे. अबुल कलाम ने ठीक ही कहा आर्थिक विकास एवं सैन्यशक्ति के आधार मान पर राष्ट्र उन्नत नहीं होगा, इसके मूल्यपरक समाज जीवन का वातावरण तैयार हो, ऐसी नीति की आवश्यकता है। पूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गाँधी ने भी देश की शिक्षा को मूल्यपरक बनाने की कही। उनके शब्दों में भारत में शिक्षा के लिए

आवश्यक है कि वह हमारे मूल्यों की पुनर्स्थापना करे चाहे ये मूल्य प्रजातंत्र और धर्मनिरपेक्षता के हो अथवा समाजवाद के ।

आज सर्वत्र नकारात्मकता दिखाई पड़ती है, उत्कृष्ट आदर्शों के प्रति अनास्था, बढ़ता वैश्विक आतंकवाद तथा धार्मिक संकीर्णता व कट्टरता, भ्रष्टाचार, कन्या भ्रूण हत्या, घरेलू हिंसा, बढ़ती अश्लीलता व बलात्कार की घटनाएं , नशे की प्रवृत्ति, माता-पिता-गुरुजनों की अवहेलना, अन्य भयंकरताएँ हमें संकेत कर रही है कि हम पशुता की ओर जा रहे है, मूल्यों का तिरस्कार कर हमने मानवी संस्कृति का दहन किया है घर-घर रावण तैयार हो रहे है मेगस्थनीज व ह्वेनसांग द्वारा भारतीयों के उच्च चरित्र का वर्णन भूतकाल की बात हो गई है शिक्षा का स्तर बिगड़ता जा रहा है। इसका उपचार केवल मूल्यपरक शिक्षा से ही हो सकेगा। महर्षि अरविन्द का सपना था आत्मिक समाज कि स्थापना हो, महात्मा गाँधी रामराज्य की स्थापना करवाना चाहते थे, विनोबा भावे सर्वोदय चाहते थे। ये सभी अवधारणाएँ मूल्यपरक शिक्षा पर आधारित समाज का निर्माण करने से सम्बन्धित है।

इन परिस्यितियों में हमें पुनः हमारी मूल्यपरक शिक्षा व्यवस्था को पुनर्जीवित करना है जो हमारी संस्कृति, आदर्श एवं सत्यविचारों से ओत प्रोत थी जिसमें मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् अर्थात हे प्राणी मनुष्य वन, फिर दिव्यजन का निर्माण कर ही उद्देश्य था। अंत में इतना अपनी लेखिनी को विराम देना चाहूँगा-

भारतीय शिक्षा का दर्शन-अमृत है छलकाएंगे
संस्कार में प्रखर दिव्यता-जगती में प्रगटाएंगे
अमृत है छलकाएंगे
शिक्षा तप है साधक हम
गुण विकसाएँ उत्तमोत्तम।
संयमयुत सादाजीवन
श्रमनिष्ठा अर्पित तन मन।
यज्ञ सुगन्धित नव आभा में देवध्वजा
फहराएंगे।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
मगरतलाव, देसूरी (पाली)
मो:-9829285914

शैक्षिक चिन्तन

कर्त्तव्यपालन

❒ डॉ. मिट्ठू लाल पुरोहित

स्वतन्त्रता संग्राम में जूझते हुए राणा प्रताप वन-पर्वतों में अपने छोटे परिवार सहित मारे-मारे फिर रहे थे। एक दिन ऐसा अवसर आया कि खाने के लिए कुछ भी न रहा। जंगली अनाज को पीस कर उनकी धर्मपत्नी ने जो रोटी बनाई थी, उसे भी वन बिलाव उठा ले गया। छोटा बच्चा भूख से व्याकुल होकर रोने लगा। राणा प्रताप का साहस टूटने लगा। वे इस प्रकार बच्चों को भूख से तड़पते देखकर विचलित होने लगे। एक बार मन में आया, शत्रु से संधि कर ली जाए और आराम की ज़िंदगी जिया जाए। उनकी मुख मुद्रा गंभीर विचारधारा में डूबी हुई दिखाई दे रही थी।

रानी को अपने पतिदेव की चिंता समझने में देर न लगी। उसने प्रोत्साहन भरे शब्दों में कहा, ''हे नाथ कर्त्तव्यपालन मानव जीवन की सर्वोपरि संपदा है। इसे किसी भी मूल्य पर गंवाया नहीं जा सकता, सारे परिवार के भूखों या किसी भी प्रकार मरने के मूल्य पर भी नहीं। सच्चे मनुष्य न कष्टों से डरते हैं और न आघातों से। उन्हें तो अपने कर्तव्य का ही ध्यान रहता है। आप दूसरी बात क्यों सोचने लगे।''

प्रताप का उतरा हुआ चेहरा फिर चमकने लगा। उन्होंने कहा, ''प्रिये तुम ठीक ही कहती हो। सुविधा का जीवन तुच्छ जीव भी बिता सकते हैं, पर कर्त्तव्य की कसौटी पर तो मनुष्य ही कसे जाते हैं। परीक्षा की इस घड़ी में हमें खोटा नहीं खरा ही सिद्ध होना चाहिए।'' राणा वन में से दूसरा आहार ढूँढ़कर लाए और उन्होंने दूने उत्साह से स्वतंत्रता संग्राम जारी रखने की गतिविधियाँ आरंभ कर दी।

जोधपुर के राजा जसवंतसिंह की मृत्यु के बाद उनका अबोध बालक अजीतसिंह गद्दी पर बिठाया गया। राज्य व्यवस्था का काम दुर्गादास करने लगे। उन दिनों राजा का स्थान किसी प्रकार ग्रहण करना ही उस राज्य को प्राप्त कर लेने के लिए पर्याप्त होता था। जनमत का विकास नहीं हो पाया था। राजा को मारकर सिंहासन पर आरुढ़ हो जाने के कुचक्र प्रायः राजमहलों में चलते रहते थे। अबोध बालकों के लिए तो ये दुरभिसंधियाँ और भी उग्र रूप से चलती थीं।

दुर्गादास पर औरंगजेब ने डोरे डालने आरंभ किए। उन्हें किसी बहाने मिलने के लिए बुलाया। बड़ी आवभगत की और विदाई के समय आठ हजार स्वर्ण मुद्राएँ भेंट स्वरूप प्रस्तुत की। इतने बड़े उपहार को देखकर दुर्गादास सन्न रह गए। उन्हें यह समझते हुए देर न लगी कि यह प्रलोभन किस भूमिका का संपादन करने के लिए उन्हें दिया जा रहा है।

दुर्गादास ने कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा ''राजन! हमें स्वर्ण मुद्राएँ नहीं आपकी सद्भावना चाहिए। हम लोग स्वल्प साधनों से भी अपना कर्त्तव्य पालन करते रहेंगे। इन मुद्राओं को अभी सरकारी खजाने में ही रहने दिया जाए। जरूरत पड़ी तो आप से और भी बड़ी सहायता माँगेंगे।

औरंगजेब निरुत्तर हो गया। उसने देखा प्रलोभन ही सबसे बड़ी चीज नहीं है। दुनिया में ऐसे आदमी भी रहते है। जो कर्त्तव्यपालन के आगे हर प्रलोभन को ठुकराने का साहस कर सकें।

जो मनुष्य अपनी तृष्णाओं पर जितना अंकुश लगा सकेगा, उसके लिए उतनी ही तत्परता के साथ कर्त्तव्यपालन संभव हो सकेगा। संयम के आधार पर संभव हुई बचत से ही कर्त्तव्यपालन के आवश्यक साधनों को लगाया जा सकना संभव होता है।

अर्थात्-''महत्त्वाकांक्षाओं-त्रिविध दुष्प्रवृत्तियों का दमन करने के उपरांत ही परमार्थ हो सकना संभव है।''

प्रधानाचार्य
रा.आ.उ.मा.वि. बड़ोदिया,
चित्तौड़गढ़
मो: 9950268862

बाल सुभाषित

लहरों से डर का नौका पार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।।

बाल मनोविज्ञान

बच्चों का विकास और मनोविज्ञान

❐ उर्मिला नागर

डॉ. गीता सर्राफ के अनुसार ''आज की बदलती हुई महानगरीय जीवन शैली ने, प्रदूषण और तनाव के साथ-साथ कई प्रकार की सामाजिक और व्यावहारिक समस्याओं को जन्म दिया है।'' भयंकर प्रदूषण/तनाव/खान-पान की गलत आदतों के कारण बच्चों में भी कई प्रकार की बीमारियाँ उत्पन्न हुई हैं। अतः वर्तमान में सभी तनाव एवं शारीरिक मानसिक असंतुलन से ग्रसित हैं। साईकोलॉजी शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के शब्द से हुई है।

वर्तमान शिक्षक अध्यापन के समय मनोविज्ञान को भूलते जा रहे हैं। मैक्डूगल के अनुसार-'मनोविज्ञान आचरण और व्यवहार का यथार्थ विज्ञान है।' वाट्सन एवं जेम्स ड्रेवर भी इसे क्रमशः व्यवहार का विज्ञान एवं व्यवहार का शुद्ध विज्ञान मानते हैं।' आजकल इसे चेतना का विज्ञान माना जाता है। ऑलपोर्ट ने साईकोलॉजी के आधार पर सर्वप्रथम व्यक्ति से संबंधित गुणों का विश्लेषण किया।

बच्चे की परिपक्वता सम्बन्धी क्षमता पर, वंशानुक्रम तथा वातावरण का प्रभाव पड़ता है। शैशवावस्था से ही वातावरण बालक के विकास को प्रभावित करता है। स्वच्छ एवं उत्तम वातावरण में रहने वाले बच्चों का सभी प्रकार का विकास तीव्र गति से होता है। अकेले बालक को पारिवारिक वातावरण में खेलने का उचित अवसर प्राप्त नहीं होता। माता-पिता का प्यार/स्वास्थ्यप्रद जलवायु भी बच्चों के विकास को प्रभावित करते हैं। 0 से 6 वर्ष की आयु के बालक को 12 घंटे नींद लेना जरूरी है। अन्यथा उसका विकास अवरुद्ध हो जाएगा। अपर्याप्त सुरक्षा भावना, आत्मविश्वास की कमी, पौष्टिक एवं संतुलित भोजन का अभाव भी उसके विकास को प्रभावित करते हैं। बच्चों की सक्रियता उन्हें मानसिक तनाव से दूर रखती है। शारीरिक विकास के लिए प्रोटीन/कैल्शियम/विटामिन आदि का प्रयोग आवश्यक है। इसके अभाव में वे अस्वस्थ हो जाएँगे।

बालक के सिर में चोट लगने से उसका मानसिक विकास अवरुद्ध हो जाता है। तीव्र बुद्धि बालक का बौद्धिक विकास तीव्र गति से होता है। वह बहुत जल्दी बोलने और चलने लगता है। आठ वर्ष की अवस्था तक बालक के मस्तिष्क का पूर्ण विकास हो जाता है। शारीरिक सफाई का ज्ञान भी बच्चों को देना जरूरी है। शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से स्वस्थ बालक ही समाज में अपना उचित एवं सम्मानजनक स्थान बना पाते हैं।

निद्रा एवं विश्राम के अभाव में बालक स्वस्थ नहीं रह सकता। अतः छोटे बच्चों को पर्याप्त समय तक सोने दिया जाना चाहिए। विश्राम से बालक की क्रियाशीलता में वृद्धि होती है। थकान उसके शारीरिक विकास में बाधक है। आज के बच्चे के पास ज्ञान तो है, पर वह उसको जब तक व्यवहार में नहीं लाएगा, तब तक उसमें परिवर्तन नहीं आएगा। बच्चे के व्यवहार का अध्ययन करना भी जरूरी है, ताकि वे अनुकरण द्वारा अच्छी बातें सीख सकें। अनुकरण द्वारा बालक एक-दूसरे से बहुत कुछ सीख सकते हैं।

अवसाद/मानसिक बीमारियाँ और हृदयरोग का मुख्य कारण एट्रीट्यूड समस्या है। चिकित्सा विशेषज्ञों के अनुसार यह स्थिति उचित नहीं है, क्योंकि यह असुरक्षा को जन्म देती है। हमारी तरह बालक भी अपने जीवन की समस्याओं से जूझते हुए, अपने अन्दर की क्षमता को प्रकट करने का प्रयास करते हैं। कभी-कभी वे परिस्थितियों के सामने झुककर, अपना आपा खोने लगते हैं और मानसिक तनाव के शिकार हो जाते हैं।

माता-पिता के अनुचित व्यवहार से भी बालक डर जाते हैं। बच्चों के सामने डरावनी आकृति बनाकर न रहे। अन्यथा रात के समय सपने में वे डर जाएंगे। अतः उन्हें भयपूर्ण वातावरण से दूर रखना उनके लिए लाभप्रद है। उनका शारीरिक/मानसिक और संवेगात्मक विकास उचित रूप से होने पर, स्वतः ही उनका डर दूर हो जाएगा।

चरित्र निर्माण में स्थायी भावों का सर्वोच्च स्थान है। प्रेम/घृणा आदि स्थायी भाव हैं। बच्चों के भाव सम्बन्धी पक्ष पर, ध्यान न देने से उनके संवेगों का विकास रूक जाता है। एक या दो वर्ष की अवस्था में बालक अपने पूर्व अनुभवों से डरने लगता है। निराश होने पर भी वह डरता है। माता-पिता की मनोवृत्ति का प्रभाव उसके मानसिक संवेगात्मक तथा सामाजिक विकास पर पड़ता है। यदि माता-पिता का व्यवहार उसके प्रति, संतोषप्रद है तो उसका सामाजिक और मानसिक विकास संतुलित रूप से होता रहेगा।

अभिभावकों का अत्यधिक स्नेह भी बच्चों को बिगाड़ देता है, लेकिन आवश्यकता पड़ने पर बालक की प्रशंसा करना भी उनकी संकल्प शक्ति के विकास में लाभप्रद है। शिशु अवस्था में बालक की जिज्ञासाएं काफी बढ़ी हुई होती है। उनकी जिज्ञासाएं शान्त करना जरूरी है। जिज्ञासा की इस प्रवृत्ति के द्वारा ही वह, नवीन अनुभवों को सीखता है, जिसके कारण उनकी मानसिक शक्तियों का विकास होता है।

कलहयुक्त परिवार के बच्चे सामाजिक विकास में पिछड़ जाते हैं। क्रोधी बालकों की अपेक्षा संयमी और हँसमुख बच्चों का सामाजिक विकास जल्दी और अधिक होता है। अत्यधिक भावुक बच्चा सदा भावुक ही रहता है। अत्यधिक भावुकता के कारण वह अपने जीवनकाल में किसी प्रकार का कोई विकास नहीं कर सकता। मानसिक तनाव से ग्रसित बच्चे अत्यधिक बीमार ही रहते हैं। अतः उनको यथासंभव हर समय सक्रिय रखना चाहिए। उनके समुचित विकास में, सुरक्षा भावना भी अपना महत्व रखती है। सुरक्षा एवं आत्मविश्वास के अभाव में उनका विकास रुक जाता है। अभिभावक/शिक्षक उन्हें सोच-समझकर, कार्य करने की शिक्षा दें। उन्हें यह सिखाया जाना चाहिए कि वे स्वयं अपने उत्तरदायित्वों को समझें। अपने विवेक से निर्णय करें।

नवजात शिशु सुख-दुख की अभिव्यक्ति क्रमशः हँसकर तथा रोकर करता है।

जब वह दो वर्ष का हो जाता है तो समूह के बीच खेलना चाहता है। कभी-कभी दूसरों से सहायता प्राप्त करने का प्रयास भी करता है। छोटी आयु में बच्चों की रुचि, कहानियों तथा परी कथाओं में अधिक होती है। इसके अतिरिक्त वे नाटक/मेले आदि भी अधिक पसन्द करते हैं। उनके सोने, खेलने, खाने, पढ़ने का समय भी निर्धारित होना जरूरी है। कभी-कभी उनके साथ खेलना भी उनके सामाजिक विकास में सहायक होता है। उनकी अभिव्यक्ति का उचित विकास, खेलों के द्वारा ही संभव है। तैरना तथा मैदानों में घूमना उन्हें अच्छा लगता है। रोचक कथाओं द्वारा शिक्षा देने पर बालक खेल खेल में ही सीख लेता है।

बाल्यावस्था में वह समूह में रहना, अधिक पसन्द करता है। अधिकांश समय वह अपनी आयु के बच्चों के साथ, व्यतीत करना चाहता है और अपने मन से समूह की आज्ञाओं/आदेशों का पालन करता है। सांस्कृतिक विकास भी व्यक्ति का विकास का महत्वपूर्ण घटक है। छोटे बच्चों में संग्रह प्रवृत्ति अधिक होती है। विभिन्न शिविरों में भाग लेने पर वे दूसरों की सहायता करना/आपस में मिलना-जुलना तथा मित्रता करना सीखते हैं।

कभी-कभी शिक्षक बच्चों के अभिभावकों के समक्ष, उनके गुणों-अवगुणों की चर्चा भी करें, ताकि उनमें आवश्यक सुधार हो सके, कुछ परिवर्तन हो सके। सभी शिक्षक अपने विद्यार्थियों को सुयोग्य नागरिकता एवं सुदृढ़ व्यक्तित्व की विशेषताएं प्रदान करते हुए अपना दायित्व निभाएं, तभी बालक राष्ट्र की आकांक्षा के अनुरूप जीवन के विविध क्षेत्रों में अप्रतिम कार्य कर देश का सम्मान बरकरार रख सकेंगे।

एक विश्लेषण के अनुसार-'यदि दुनियाँ के सारे देश अपनी सैन्य सेवाओं पर होने वाला खर्च, केवल एक सप्ताह तक कम कर दें तो, उस धन से दुनियाँ की शिक्षा व्यवस्था द्वारा बच्चों को जागरूक/मेहनती/मधुरभाषी/व्यावहारिक और निडर बनाया जा सकता है ताकि वे अपनी योग्यता और मेहनत के बल पर कामयाबी हासिल कर सकें।

शिक्षक
रा.उ.मा.वि. केसरपुर
(अजमेर) राज.

शिक्षण

विद्यालयों में हिन्दी भाषा शिक्षण

❒ रामगोपाल 'राही'

भाषा शिक्षण से पूर्व हम सब यह जान लें कि भाषा क्या है ?

भाषा के संदर्भ में कई दृष्टिकोण है। समझा जाता है कि भाषा का संबंध मनुष्य के अंतर से हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसे अपने विचार विनिमय की आवश्यकता होती है इस कार्य को वह कई प्रकार से सम्पन्न करता है, बोलकर, इशारों से, स्पर्श से और ध्वनि उत्पन्न करके समझाने से भाषा का आभास होता समझा जाता है। प्लेटो के अनुसार ''विचार आत्मा की मूक या अध्वन्यात्मक बातचीत है, यही ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है उसे भाषा कहते है।'' भाषा के संदर्भ में भारतीय विचारकों के अनुसार-''भाषा एक विकसनशील विश्लेषण सापेक्ष यादृच्छिक ध्वनि मूलक सार्थक व्यवस्था है।'' विचारक कार्डीनर के शब्दों में ''विचाराभिव्यक्ति के लिए व्यक्त ध्वनि संकेत ही भाषा है।'' डॉ. भोलानाथ तिवारी कहते है, ''विचारों के आदान-प्रदान हेतु उच्चारण अवयवों से उच्चरित ध्वनि को भाषा मानते है।'' मुख्य रूप से हम समझ सकते है कि अभिव्यक्ति जरूरी है अभिव्यक्ति भाषा से सहज समझ में आ जाती है।

भाषा संदर्भो में और भी भारतीय दृष्टिकोण रहे है। इनमें भौतिक दृष्टि कोण के अन्तर्गत भाषा ध्वनियों का समूह मात्र है, ध्वनि किसी न किसी अर्थ की प्रतीक है। सामाजिक दृष्टिकोण के अन्तर्गत मनुष्य सामाजिक प्राणी है, वह अकेला नहीं रह सकता उसे आदान-प्रदान के लिए सुविधा की दृष्टि से ध्वनि अभिव्यक्ति को समझने के लिए लिपि चिह्न की जरूरत होती है। सांस्कृतिक दृष्टिकोण के अन्तर्गत भाषा एक सांस्कृतिक वस्तु है, जिसे हम परम्परा से प्राप्त करते हैं। संस्कृति में परिवर्तन होता रहता है उसी तरह भाषा में भी परिवर्तन होते है इसी दृष्टिकोण के अन्तर्गत समझा जाता है, भाषा कोई स्थिर वस्तु नही, अपितु संस्कृति के समान गतिशील तत्त्व है।

निष्कर्ष रूप मे हम समझ सकते हैं, भाषा एक सांकेतिक साधन है। मनुष्य के जीवन में भाषा का महत्व सर्वोपरि है। वस्तुतः भाषा मानव को विधाता का सर्वश्रेष्ठ वरदान है। भाषा न हो तो मानव की क्या दशा हो स्वयं सोचा जा सकता है। भाषा पशु पक्षियों की भी होती है। गाय रोटी पाकर रोज आपके द्वार पर आ गर्दन हिलाती। मुँह ऊँचा नीचा करती है, यह उसकी आपको समझाने की भाषा है। कहते हैं, 'खग जाने खग ही की भाषा'-पेड़ों की भी भाषा होती है। उनके सूखते हुए पत्ते समझाते हैं, उन्हें पानी की जरूरत है। यहाँ तक जड़ पदार्थो की भी भाषा होती है। हम पर्वतराज हिमालय को ही लें। किसी कवि की कल्पना से व्यक्त होता, ''खड़ा हिमालय बता रहा है डरो न आँधी पानी में, डटे रहो तुम अपने पथ पर कठिनाई तूफानों में।''

साहित्य समाज का दर्पण है। यह भाषा से ही निर्मित होता है। अच्छा साहित्य अच्छी भाषा के बिना निर्माण नहीं हो सकता है। हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय जीवन में भाषा का महत्त्व सर्वोपरि है। सच भाषा अभिव्यक्ति के मूंगे, भाषा बिन सब ही गूँगे है।

बात करें विद्यालयों में भाषा शिक्षण की, विद्यालय स्तर पर भाषा के दो रूप समझे जाते है, उच्चरित भाषा व लिखित भाषा। उच्चरित भाषा का प्रयोग बोलचाल में होता है और लिखित रूप आवश्यकता अनुसार लिखना हो, लिखके भिजवाना हो साहित्य सृजन हो।

विद्यालयों में हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य-

मनोवैज्ञानिकों व भाषाशास्त्रियों के द्वारा भाषा शिक्षण के मापदण्ड/उद्देश्य निश्चित है। प्राथमिक शिक्षा में भाषा शिक्षण के मापदण्ड इस प्रकार समझे जाते है कि छात्र छात्राओं को पाठयक्रम में निर्धारित शब्दावली के आधार पर सामान्य गति से बोली उच्चरित भाषा को ठीक तरह से समझ सके, बोल सके, इस कारण प्राथमिक स्तर पर बारम्बार अभ्यास कराया जाता है। इसमें उच्चारण शुद्ध होना अपेक्षित होता है। इसी के तदन्तर प्रवाह का ध्यान रखते

हुए सस्वर वाचन ठीक तरह से कराया जाता है। जिसमें छात्र छात्राओं में मौन वाचन की क्षमता आती है। इससे छात्र-छात्रा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देना सीखते हैं। उन्हें अभ्यास से आत्मज्ञान होने लगता है कि वह स्वयं वाक्य बना सके, बोल सके।

आजकल विद्यालयों में इन निश्चित मापदण्डों व धारणाओं के विपरीत देखने को मिलता है। यहाँ तक सुना जाता है प्रायः विद्यालयों में सस्वर वाचन, वर्तनी सुधार सुलेख, ये सब हिन्दी भाषा शिक्षण की कड़ियाँ थीं, हिस्सा थीं, समझा जाता है अब ये विलुप्त सी हैं। परिणाम सामने है, हिन्दी भाषा शिक्षण की नींव कमजोर हुई है। छात्र-छात्राओं का हिन्दी अध्ययन स्तर गिरा है।

पढ़ाई की नींव कमजोर - स्तर घटेगा ही घटेगा। इस बात को सब महसूस भी करने लगे हैं। निरीक्षण के समय ये बात सामने आती रही है। बालक-बालिकाओं को मात्राओं का पर्याप्त ज्ञान तक नहीं होता। हिन्दी की वर्ण लिपि को कल के युवा आज के बच्चे भूल रहे हैं। हिन्दी के अंकों का तो पूर्ण ह्रास हो चुका। यह दुख की बात है, मगर सोचे कौन? दरअसल हिन्दी उत्कर्ष प्राथमिक स्तर पर औंधे मुँह गिरा नजर आता है। इससे हिन्दी भाषा को आघात पहुँच रहा है। अध्यापन के गिरते स्तर की बात कौन नहीं स्वीकारता। अक्सर यही सुनते आ रहे हैं कि स्तर गिर रहा है। हिन्दी अध्यापन स्तर सुधारने के लिए अथक प्रयास व सुधारों की जरूरत है। गिरते स्तर में कमियाँ कहाँ और क्यों हो रही हैं। इस तथ्य से विभाग अनजान है, अगर इस कमी से अधिकारी वर्ग अनजान है, तो अधिकारियों का होना व्यर्थ है।

शिक्षक वर्ग जो इस तथ्य को नहीं जान सकता तो उसका शिक्षक होना व्यर्थ है। छात्रों का दोष नहीं वह तो ज्ञान पिपासु है, छात्र आता ही इसलिए है कि अच्छा अध्यापन उसे मिले। गिरता स्तर उठाने की जिम्मेदारी संबंधित वर्ग समझे तो, यह राष्ट्र को अनमोल सर्वोपरि सहयोग होगा। कल के युवा आज के बच्चे देश का भविष्य व देश की तस्वीर है। देश व देश का भविष्य संवारने में क्या आप सुधारों के लिए जिम्मेदार व सक्रिय है? किस स्तर पर आप अपना कर्तव्य निभा रहे है? सभी आदरणीय आत्म विश्लेषण करें और पूछे अपने आप से कि सुधारों में कितने सक्रिय है? आप कहाँ किस स्तर पर खड़े हैं? आत्म विश्लेषण करें व आत्म चिंतन कर पूछें अपने आपसे।

विद्यालय में हिन्दी भाषा शिक्षण के अन्तर्गत बात करें। माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा स्तर पर हिन्दी शिक्षण की माध्यमिक कक्षाओं में हिन्दी का शिक्षण अध्यापन राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रति व देश की धड़कन व आत्मा हिन्दी के प्रति आत्म चेतना को जागृत करना है गति देना है। पाठ्यक्रम में इन्हीं कक्षाओं में सामान्य गति उतार-चढ़ाव के साथ बोल समझने की क्षमता की वृद्धि होती है। विद्यार्थी सस्वर व मौन वाचन में समर्थ हो जाता है, जो उसने पढ़ा है, जो उसे पढ़ाया गया है उसे समझने की उसकी अपनी क्षमता में स्वतः वृद्धि हो जाती है। अपठित अवतरण को भी समझने की चेतना आ जाती है वे शिष्टाचार युक्त संबोधनों के साथ पत्र इत्यादि स्वज्ञान से बोल सकें, इस योग्य बनते है साथ ही छात्र-छात्राएँ निबंधात्मक विचार व्यक्त करने योग्य बन जाते हैं। इस स्तर पर हिन्दी भाषा समझने का छात्र-छात्रा का स्तर हर तरह से बोली गई भाषा व उसे समझने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेते हैं। बात खुद शुद्धभाषा में कर सके, लिखने में अल्पविराम, पूर्ण विराम व उच्चारण में दोष स्वयं समझ सके, ऐसी क्षमता छात्र-छात्रा में विकसित हो जाती है। इतना ही नहीं देखी-सुनी घटनाओं को स्वयं लिखने की क्षमता आ जाती है। इतना ही नहीं अपने विचार स्वयं संक्षेपीकरण कर सकते हैं।

समुचित हिन्दी अध्यापन ऐसी क्षमता बढ़ाता है। विद्यालयों में भाषा अध्ययन के अपने मापदण्ड हैं ये मनोवैज्ञानिक विषय विशेषज्ञ एवं व्याकरणाचार्यों द्वारा निश्चित किए समझे जाते हैं। पाठ्यक्रम भी ये लोग बनाते हैं, विद्यालय में हिन्दी भाषा शिक्षण पाठ्यक्रम अनुसार ही कराया जाना चाहिए। हिन्दी भाषा सहज-सरल भाषा है, इसके अध्यापन में इसके समझने समझाने में दिक्कत नहीं है, बावजूद इसके बोर्ड की दसवीं, बारहवीं में हजारों-लाखों छात्र-छात्रा हिन्दी में अनुतीर्ण होते हैं। यह विडम्बना का विषय है। यह व्यवस्था व समुचित अध्यापन की कमी दर्शाता है। वस्तुतः यह छात्र-छात्राओं का अनुतीर्ण होना नहीं बल्कि शिक्षक का अनुतीर्ण होना होता है। हिन्दी शिक्षण में शिक्षक अनुतीर्ण होता है, मगर सजा विद्यार्थी को मिलती है। करे कौन, भरे कौन। सीधे-सरल विषय में अनुतीर्ण विद्यार्थी हताश-निराश व अवसाद के शिकार हो जाते हैं। वस्तुतः हिन्दी शिक्षण में सुधारों की आवश्यकता है ताकि छात्र छात्रा हिन्दी में अनुतीर्ण न हो हिन्दी भाषा का अध्ययन राष्ट्र एवं राष्ट्र की आत्मा का अध्ययन है। समझा जाता है विद्यालयों में हिन्दी उत्थान उपेक्षा का शिकार है। विडम्बना यह भी है अंग्रेजी विदेशी भाषा छात्रों के लिए जी का जंजाल है, ट्यूशन करें, कोचिंग जाएँ फिर भी लाखों के लाखों अनुतीर्ण हो जाते हैं। इससे छात्र-छात्रा का भविष्य बिगड़ जाता है। कइयों की पढ़ाई छूट जाती है। अतः अंग्रेजी की अनिवार्यता उपयुक्त नहीं। इसकी अनिवार्यता समाप्त कर देने से हिन्दी का स्तर स्वतः ऊँचा उठेगा। आज विदेशों में विद्यालय में हिन्दी उत्कर्ष है। हमारे यहाँ विद्यालयों में हिन्दी के प्रति उपेक्षा मिलती है। वस्तुतः हिन्दी शिक्षण पर सभी जिम्मेदार लोगों को ध्यान देने की आवश्यकता है।

(सेवानिवृत्त व्याख्याता)
लाखेरी-323615 बून्दी **मो. 9982491518**

आवश्यक सूचना **'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा- नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ। कुछ रचनाकार एकाधिक रचनाएँ एक साथ भेजने पर एक रचना के साथ ही उक्त सूचनाएँ संलग्न कर दायित्वपूर्ति समझ लेते हैं। अतः अपनी प्रत्येक रचना के साथ अलग से पृष्ठ लगाकर प्रपत्रानुसार अपना विवरण अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचना के छपने एवं उसके मानदेय भुगतान में असुविधा होती है। कतिपय रचनाकार अपने एकाधिक बैंक खाता लिखकर भिजवा देते हैं और उक्त खाते का उपयोग समय-समय पर नहीं करने के कारण वह बंद भी हो चुका होता है। परिणामस्वरूप उक्त मानदेय खाते में जमा नहीं हो पाता। जिसकी शिकायत प्राप्त होती है। किसी रचनाकार के एकाधिक खाते हैं तो रचनाकार अपने SBBJ बैंक खाते को प्राथमिकता देकर अद्यतन व्यक्तिगत जानकारी उपर्युक्तानुसार प्रत्येक रचना के साथ अलग-अलग संलग्न करें।** -वरिष्ठ संपादक

मनोविज्ञान

तनाव से मुक्ति

❒ डॉ. गिरीशदत्त शर्मा

हमारा वर्तमान भौतिकता से आवृत है। लोकेषणा, पुत्रेषणा और वित्तेषणा ये तीन ऐसी कामनाएँ है जिनके वशीभूत व्यक्ति धन-संपत्ति एवं भौतिक वस्तुओं के संग्रह में चिन्तित है, व्यथित है तथा संलिप्त है। यही उसका धर्म है, यही उसका आदर्श है। आज जिसके पास दौलत है, सम्पत्ति है, भौतिक वस्तुओं का अम्बार है उसके पास मान-सम्मान है, पद है, सामाजिक प्रतिष्ठा है। 'सर्वे गुणाः कांचनयाश्रयन्ति' के आधार पर व्यक्ति करोड़ों की सम्पत्ति, बहुमूल्य वस्तुओं का संग्रह तथा विलासिता के वातावरण की संरचना में लगा रहता है, बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाता है, महत्त्वाकांक्षी स्वप्न देखता है और काल्पनिक संसार में सुख की अनुभूति करता है। परन्तु भीतर कभी झांक कर देखा है कि ये कितने दुःखी, टूटे और व्यथित हैं। कितनी चिन्ताएँ, बाधाएँ, कुण्ठाएँ, तनाव, व्याधियाँ इन्हें घेरे रहती हैं। इनकी कल्पना करना, इनका अनुमान लगाना दुष्कर है। सिर दर्द, अनिद्रा, पक्षाघात, हृदयाघात, दौरे, डिप्थीरिया आदि अनेक ऐसे रोग हैं जो बाह्य रूप से तो शारीरिक जान पड़ते हैं परन्तु जिनका संबंध मानसिक अवस्था से है। विश्व के लगभग 90 प्रतिशत लोगों में उपर्युक्त व्याधियाँ मानसिक असंतुलन, तनाव, घुटन आदि के कारण ही जन्म लेती हैं परन्तु मनुष्य मन की गहराई में न उतर कर उनसे मुक्ति पाने के लिए अनेक प्रकार की टेबलेट, कैप्सूल, ट्रांक्यूलाइजर्स, टॉनिक एवं पेय लेने का आदी हो जाता है। इनसे क्षणिक शान्ति तो अवश्य मिल जाती है परन्तु स्थायी प्रभाव नहीं पड़ता। परिणाम यह होता है कि कभी-कभी मनुष्य इतना भावुक एवं तनावग्रस्त हो जाता है कि हत्या, आत्महत्या जैसे अनेक जघन्य अपराध कर बैठता है, अनेक दुर्व्यसनों में फंस जाता है, उसकी जिन्दगी अशान्त, नीरस और दूभर हो जाती है। इन सबके निवारणार्थ कुछ ऐसे सुझाव प्रस्तुत हैं जिनके यथार्थ चिन्तन से मनुष्य को इन व्याधियों से मुक्ति मिल सकती है और वह सुख

शान्ति से अपना जीवन दीर्घ समय तक व्यतीत कर सकता है।

प्रायः जब भी कोई व्यक्ति कार्य आरम्भ करता है उससे पूर्व ही कार्य की सफलता और मनोनुकूल परिणाम की धारणा बना लेता है। अतः उसकी अवधान की तकनीक, उसके सम्पन्न होने एवं उपायों पर केन्द्रित न होकर फल पर टिक जाता है। परिणामस्वरूप अपेक्षित केन्द्रित अवधान के अभाव में कार्य भली भाँति सम्पन्न नहीं हो पाता और फल प्रतिकूल निकल जाता है। व्यक्ति इससे दुःखी निराश होकर टूट जाता है। उसमें अनेक मानसिक एवं शारीरिक विकार आ जाते हैं। इस अवस्था से बचा जा सकता है, यदि व्यक्ति अपना ध्यान परिणाम पर केन्द्रित न कर उसके संपादन, उसकी पूर्णता एवं उसकी तकनीक पर करे। सूर्य की किरणें जब तक चारों ओर बिखरी रहती हैं उनमें जलाने की क्षमता नहीं आती परन्तु जब इन्हीं किरणों को नतोदर शीशे के माध्यम से किसी एक बिन्दु पर केन्द्रित कर दिया जाता है तब वहाँ जलन, अग्नि पैदा हो जाती है। कार्य के सम्पादन में हमारी इसी प्रकार की शैली होनी चाहिए। अतः फल की आसक्ति छोड़ कर समग्र भाव से कार्य करना चाहिए। फिर न कोई पछतावा होगा, न कोई घुटन।

महाभारत में एक स्थान पर मनुष्य को निर्देश दिया गया है-''प्रत्यहं प्रत्यवेक्षते नरश्चरितमात्मनः'' अर्थात मनुष्य को दिन में किए गए अपने समस्त कार्यों की समीक्षा इस दृष्टिकोण से करनी चाहिए कि कितने कार्य हमारी आत्मा और भावना के अनुरूप मानवीय थे तथा कितने अमानवीय एवं पशु समान। अपने कृत्यों को इस प्रकार सर्वेक्षण एवं समीक्षा व्यक्ति को सदैव गलत कार्य करने से रोकती है। 'प्रभाते कर दर्शनम्' अर्थात प्रातः काल उठते ही अपने दोनों हाथों का दर्शन करने में यही भावना दिखाई देती है जो इस बात की प्रेरणा देती है कि मनुष्य अपने हाथों को देखते हुए समीक्षा करे कि इन हाथों से कितने अवांछनीय कार्य हुए हैं तथा भविष्य में इनसे कोई अनिष्ट कार्य न हो। स्वाभाविक है कि इन भावनाओं से किए गए कार्य सदैव सुखद और कल्याणकारी होंगे। इनमें न किसी पश्चाताप की गंध होगी और न आत्मा की कचोट। इससे तनाव, हिंसा, द्वेष, ग्लानि आदि दुर्भावनाएँ तो दूर होगी ही, साथ ही व्यक्ति में आत्मसंतोष, आत्मविश्वास, निर्भीकता एवं दृढ़ संकल्प भी उत्पन्न होगा।

दिन के आरम्भ में किसी कार्य को करने से पूर्व यदि व्यक्ति अपना कुछ समय ईश्वरीय शक्ति या अपने किसी इष्ट के चिंतन-मनन में समायोजित करे तो जीवन की अनेक समस्याओं से मुक्ति मिल सकती है। यह एक सामान्य बात है कि व्यक्ति अवांछित एवं अप्रिय घटनाओं, कृत्यों एवं विचारों को दूसरों के सम्मुख प्रकट करने से कतराता है। इससे मानसिक तनाव उत्पन्न होता है, हृदय में विकलता आती है, घुटन होती है; परन्तु जब चिन्तन, प्रार्थना, पूजा-पाठ आदि में अपने भाव ईश्वर के सम्मुख छोड़ देता है तब हृदय से एक बोझ हट जाता है और व्यक्ति सहज और सरल हो जाता है। दूसरे,जब हम कार्य को ईश्वराधीन छोड़ देते हैं तब दायित्व बोध से मुक्त हो जाते हैं, अनावश्यक दबाव में राहत मिलती है। तीसरे, ईश्वरीय शक्ति में आस्था रखने वाले व्यक्ति को हर क्षण धर्म-भीरुता बनी रहती है। इसलिए वह पाप, श्राप और दुःख के भय से गलत कार्य करते हुए डरता

है। दूसरों को सताने, अनैतिक कार्य करने में संकोच अनुभव करता है और उसमें आत्मसंयम का विकास होता है। ऐसे व्यक्तियों को मानसिक तनाव आदि की शिकायत नहीं रहती।

व्यक्ति के जीवन में तनाव का एक कारण भौतिक वस्तुओं का संग्रह और अर्जन भी है। मनुष्य की इच्छाएँ अनन्त और अपरिमित हैं परन्तु जीविका के साधन सीमित हैं। अतः इच्छाओं की पूर्ति के लिए उसे आत्मा की आवाज के विरुद्ध अनेक अनैतिक एवं भ्रष्ट उपायों को अपनाना पड़ता है। इससे उसे संतुष्टि के स्थान पर पिपासा और बढ़ती जाती है क्योंकि- 'न जातु कामः कामानाम् उपभोगेन शाम्यति,' हविषा कृष्णावतेर्भवभूयः एवामिवर्धते।' अर्थात् जिस प्रकार यज्ञ में घी की आहूति देने पर अग्नि की लपटें शान्त होने की अपेक्षा और तीव्र हो जाती हैं उसी प्रकार का संबंध धन और सम्पत्ति का है। इसे जितना प्राप्त किया जाता है उतना ही और अधिक प्राप्त करने की इच्छा बलवती होती जाती है। फलतः जीवन भर हम दौलत के पीछे भागते हुए अपना समस्त सुख चैन खो देते हैं; परन्तु जब संसार से विदा होते हैं तब खाली हाथ जाते हैं। अतः इच्छाओं की पूर्ति में आत्म नियंत्रण की प्रेरणा अनेक व्याधियों एवं तनाव से मुक्ति प्रदान करती है।

4/82, चौटाला रोड, वार्ड-23,
संगरिया (राज.)
मो. 8561096369

शैक्षिक चिन्तन

शिक्षक के महनीय कार्य

❒ प्रकाश वया

क्रूर, अत्याचारी और बर्बर नन्द वंश का मूलोच्छेदन कर देने का संकल्प जिस राष्ट्रपुरुष ने लिया, वो निश्चित रूप से तत्कालीन काल खण्ड का युगद्रष्टा होकर सही मायने में राष्ट्र निर्माता था। मगध सम्राट घनानन्द द्वारा विष्णुगुप्त को सोने के कापा (सिक्के) देने की पेशकश को उनके द्वारा ठुकराये जाने पर उस राज सभा में उस महान शिक्षक का उपहास व अपमान किया गया तब उसने अपनी शिखा को खोलकर उसे तब तक नहीं बाँधने की हुंकार भरी और कहा कि जब तक मैं इस दंभी और क्रूर नन्द वंश का नाश नहीं कर दूँगा, शिखा में गाँठ नहीं लगाऊँगा। चाणक्य जैसा उद्भट महामानव दृढ़ इच्छा शक्ति से लबरेज होकर एक ऐसे शिष्य की खोज में निकल पड़ा जो उसके इस महायज्ञ में अपनी आहुति देकर इस महान और गौरवशाली राष्ट्र की अस्मिता को बचाने में समर्थ हो। ऋषि पुत्र नचिकेता की तरह चरैवेति... चरैवेति जैसा अमिय मंत्र अपने अन्तस में लेकर निकल पड़ा। वह इतिहास पुरुष, चलना जिसकी नियति बन चुका था, उसकी मंजिल, उसका लक्ष्य उसके चरण चूमता है, उसके पीछे दौड़ता है। विष्णु गुप्त के इस धराधाम पर आर्विभाव के वक्त की घटना बड़ी अनूठी और विलक्षण है, तपोनिष्ठ साधक चणक और उनकी भार्या चणेश्वरी देवी की पावन कुक्षी से होनहार बालक का जन्म निश्चित रूप से 'माँ भारती' के लिए वरदान साबित हुआ है, जब इस नर पुंगव का जन्म हुआ तो कुछ जैन साधु उसको आशीर्वाद देने के लिए 'चणक के घर पधारे, जैन साधु अन्तर्द्रष्टा और भविष्य द्रष्टा थे, बालक को जब इन साधुओं ने अपनी गोद में लेकर देखा तो आश्चर्य में पड़ गये, क्योंकि उन्हें नवजात के मुँह में एक दाँत दिखाई दिया तो उन्होंने भविष्यवाणी की कि यह बालक चक्रवर्ती सम्राट बनेगा, परन्तु पिता चणक और मातु श्री चणेश्वरी को अच्छा नहीं लगा वो तो चाहते थे हमारा लाडला बड़ा होकर जैन साधु

बनकर आत्म कल्याणी श्रेय मार्ग की ओर प्रशस्त हो। जैन साधुओं ने माता-पिता की आकांक्षाओं को समझकर उसका वह दाँत उखाड़ फेंका और उसके भविष्य का रूपान्तरण कर दिया जिसने तत्कालीन युगधारा को बदलकर राष्ट्र को नई दिशा दी- चणक का वह लाड़ला अर्थशास्त्र के प्रणेता 'चाणक्य' के रूप में सदा-सदा के लिए कालजयी बनकर प्रतिष्ठित हो गया। राजधर्म, राजनीति और अर्थशास्त्र के जो सूत्र कौटिल्य (चाणक्य) ने दिये आज भी प्रासंगिक होकर समसामयिक हैं। एक प्रजा वत्सल राजा और राज्य के गुणों का प्रतिपादन अपनी 'चाणक्य नीति' के माध्यम से कर विष्णुगुप्त सदा-सदा के लिए अमर हो गया। क्रूर और अत्याचारी घनानन्द के नन्दवंश का मूलोच्छेदन करने के लिए चाणक्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य को अपने शिष्य के रूप में तराश कर भारतीय इतिहास को नई और सकारात्मक दिशा देने का महनीय कार्य किया। एक शिक्षक, एक गुरु समाज के लिए क्या अवदान कर सकता है? उसका जीता जागता उदाहरण विष्णुगुप्त है, जिसने अपने बुद्धि कौशल से राष्ट्र को विद्रूपताओं से बचा लिया, सच्चाई यह भी है कि एक स्वाभिमानी शिक्षक ही राष्ट्र और समाज के लिए अतुलनीय अवदान कर सकता है, आज भी जिस तरह से व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्रजीवन अनेकानेक समस्याओं और विद्रूपताओं से जूझ रहा है उनके सापेक्ष शिक्षक को अध्ययन अध्यापन से ऊपर उठकर विद्यमान समस्याओं से दो-दो हाथ करने के लिए भी मध्यस्थ होना पड़ेगा क्योंकि तटस्थ रहने वाले

राष्ट्र और समाज का ज्यादा भला नहीं कर सकते। चाणक्य जैसे उद्‌भट शिक्षक को शिक्षक की क्षमता और सामर्थ्य को पहचान कर बोलना पड़ा कि समय के सापेक्ष उसमें सृजन और प्रलयंकारी दोनों विरोधाभाषी शक्तियाँ मौजूद हैं, राष्ट्र कल्याण के लिए यदि उसे अपनी शिखा को खोलकर संकल्पित होना पड़े तो आसुरी वृत्तियों के विरुद्ध खमठोक कर खड़ा हो जाना चाहिए, यही उसका युग धर्म है। इतिहास के पृष्ठ साक्षी हैं कि जब जब सद्‌गुरु और पात्र शिष्य सम्मुखीन हुए हैं इतिहास ने करवट ली है। चाहे कृष्ण और अर्जुन, चन्द्रगुप्त और चाणक्य, शिवा सरदार और समर्थ गुरु रामदास, विवेकानन्द और रामकृष्ण परमहंस, गुरु गोविन्द सिंह और बन्दा बैरागी जैसे अनेकानेक गुरु शिष्यों के मिलन ने राष्ट्र की तकदीर और तस्वीर बदलकर रख दिया।

चाणक्य ने राष्ट्र जीवन के लिए जो मानदण्ड स्थापित किए हैं निश्चित रूप से सर्वकालिक होकर सर्वग्राह्य हैं किसी भी राष्ट्र का सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और साँस्कृतिक ढाँचा कैसा हो उस पर गहरा और सम्यक चिन्तन उनके 'अर्थशास्त्र' में जो कि एक अमृत कलश है में प्रकट हुआ। एक गुरु, एक शिक्षक, व्यक्ति और समाज को व्यष्टि से समष्टि की ओर, असत्य से सत्य की ओर, तमस से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से जीवन की ओर ले जाने का महनीय कार्य करने की क्षमता रखता है तथा उसके अन्तस में लोक कल्याण, चिन्तन की अजस्र पावन धारा के झरने का प्रवहण वास्तव में स्व और पर के लिए शुभंकर होता है। सच्चाई तो यह है कि एक समर्थ और स्वाभिमानी शिक्षक किसी भी राष्ट्र की साँस्कृतिक विरासत, परम्पराओं और मर्यादाओ को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संप्रेषित कर उसकी अस्मिता और पहचान को बनाये रखने के साथ ही युग सापेक्ष वाँछित परिवर्तनों का भी वाहक होता है। यदि हम एक शिक्षक की गरिमा, महिमा और सामाजिक उपादेयता को समझना चाहते हैं तो हमें चाणक्य को पढ़ लेना चाहिए। हकीकत तो यह है कि नामधारी शिक्षक होना आसान है लेकिन असल में शिक्षक होकर जीना बड़ा मुश्किल है। चाणक्य जैसे पुरोधा ने परिवार, समाज और राष्ट्र जीवन में शुचिता और पारदर्शिता के साथ ही सुनियोजित प्रबन्धन के जो प्रतिमान प्रतिस्थापित करने का महनीय कार्य कर सकल मानव जाति को उपकृत किया है, ढाई हजार वर्षो के बाद भी 'चाणक्य नीति' एक प्रकाश स्तम्भ की तरह हमारे पथ को आलोकित करती हुई नजर आती है, शासन व्यवस्था के सुचारु संचालन में साम, दाम, दण्ड और भेद जैसे सूत्रों को आत्मसात करना आज भी प्रासंगिक है। सच्चाई तो यह है कि 'चाणक्य' ने शिक्षकीय जीवन के जो प्रतिमान और मानक स्थापित किए हैं वो शिक्षक के लिए शाश्वत मूल्य बन कर उसके शिक्षकत्व का आधार बन गए हैं। शिक्षक तप, त्याग और समर्पण के उदात्त वैचारिक धरातल पर आरुढ़ होकर राष्ट्र की मनीषा के लिए शुभंकर साबित हो सकता है, निस्पृह भावमना शिक्षक अपनी सकल अन्तश्चेतना का निवेश समष्टि के कल्याणार्थ कर अपने शिक्षकत्व की गरिमा को अभिवर्धित करता है। शिक्षक समाज के लिए चिराग है, चिराग को अहर्निशं प्रदीप्त रहने के लिए ज्ञान रूपी तेल का होना नितान्त आवश्यक है, इसलिए शिक्षक का स्वाध्यायी और चिन्तनशील होना भी आवश्यक है, असल में एक शिक्षक मानवीय गुणों का धारक, ज्ञान प्रदाता और व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र का नियामक है, एक शिक्षक जब अपनी ज्ञान सम्पदा से राष्ट्र की संतति को तराशकर उसकी अन्तर्निहित प्रतिभा को प्रकट करने का महनीय कार्य करने के उपरान्त जब अपनी नश्वर देह का विसर्जन करता है तो उसके अन्तस में विलक्षण आत्मतोष होता है। एक शिक्षक के आत्मतोष को महाकवि 'सनेही' जी ने यों अभिव्यक्त किया है-

''बुझने का मुझे कुछ दुःख नहीं, पथ सैंकड़ों को दिखा चुका हूँ।'' शिक्षक एक अमृत कलश है और जो कोई उस घट में विद्यमान सुधारस को छक लेता है उसका इहलोक और परलोक सुधर जाता है। मृतिका मौजूद है लेकिन उसे 'घट' के रूप में आकार देने वाले सुधि कुंभकार की अपेक्षा रहती है, संत प्रवर रज्जब जी की वाणी मुखरित हुई कि-

''गरु ग्याता परजापति,सेवक माटी रूप।
रज्जब रज सूँ फेरिकै, घड़ ले कुंभ अनूप।।

एक कुंभकार गीली मिट्‌टी के लौंदे को सुन्दर और सुघड़ घड़े का आकार देने के लिए अपने हाथों का अतिशय कुशलता से उपयोग करता है, इसीलिए महाकवि रज्जब ने गुरु को 'ज्ञाता' और 'प्रजापति' की संज्ञा से निरुपित कर उसे स्रष्टा माना है, निर्माता माना है।

हे शिक्षक!

ऐसे सत्य सिखाना जग को
अनाचर जग से मिट जाए
मिटे स्वर्ग की असत् कल्पना
शाश्वत सत्य भूमि पर आए
तुम भू के भगवान
तुम्हारे चरणों में ईश्वर मिलते हैं
तुम अन्तर के माली,
तुम से फूल जिंदगी के खिलते हैं।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के शब्दों में एक जलता हुआ दीपक दूसरे दीपकों को प्रदीप्त कर सकता है, ठीक उसी तरह से एक प्रबुद्ध शिक्षक ही व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए शुभंकर साबित हो सकता है। इतिहास के पृष्ठ साक्षी हैं कि समय और परिस्थितियों के सापेक्ष विद्यमान विद्रूपताओं, समस्याओं और चुनौतियों से दो-दो हाथ करने में उस राष्ट्र के शिक्षक की अहम् भूमिका रही है। राष्ट्र जीवन में मौजूद अनाचार और दुराचारों को मिटा कर शाश्वत सत्य कर प्रति स्थापन करना भी तो उसकी नियति है।

तो आइए! हम शिक्षक चाणक्य जैसे उद्‌भट रणनीतिकार शिक्षक के दिल, दिमाग और जज्बों को हृदयंगम कर शिक्षकीय जीवन जीने का अभ्यास करेंगे तभी सार्थक और सकारात्मक भूमिका का निर्वहन कर सकेंगे, यह महान और विशाल राष्ट्र आपकी ओर आशा भरी निगाहों से निहार रहा है, इस अपेक्षा से शिक्षक को अपनी अहमियत समझकर कर्तव्यपथ की ओर अग्रसर होना पड़ेगा, अस्तु!

सेवानिवृत्त प्राध्यापक (हिन्दी)
(लेखक राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान प्राप्त)
रामपोल बस स्टेण्ड, नृसिंह वाटिका के
सामने भीण्डर (उदयपुर)-313603
मो. 9413208719

पर्यावरण

पर्यावरणीय जागरुकता

❒ डॉ. कल्पना शर्मा

पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ है- परि+आवरण अर्थात् हमारे चारों ओर उपस्थित आवरण ही पर्यावरण कहलाता है। पर्यावरण मुख्यतया दो घटकों से मिलकर बना होता है- जैविक और अजैविक। जैविक घटक में समस्त जीव-जन्तु और पादप सम्मिलित किए गए हैं जबकि अजैविक घटक में से उस स्थान विशेष की मृदा, जल, ताप, वर्षा, आर्द्रता व प्रकाश आदि सम्मिलित किए गए हैं। वृहद् रूप से सभी सजीव-निर्जीव वस्तुएँ मिलकर पर्यावरण का निर्माण करती हैं। पर्यावरण के इन विभिन्न घटकों तथा मानव में अनवरत क्रियाएँ-प्रतिक्रियाएँ होती रहती हैं। भौतिक पर्यावरण (अजैविक घटक) के बदलने से जैविक पर्यावरण (जैविक घटक) का सन्तुलन भी बिगड़ जाता है।

पिछले कुछ वर्षों में मानव निजस्वार्थो की पूर्ति करने के उद्देश्य से प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर अन्धाधुन्ध दोहन में व्यस्त है। वनों की अन्धाधुन्ध कटाई, अवैध खनन, औद्योगीकरण और नगरीकरण, अधिक मात्रा में जल का दोहन, कल-कारखानों व वाहनों से निकलता धुआ, गन्दे पानी का जल स्त्रोतों में बहाव, ध्वनि प्रसारण यंत्रों का उपयोग आदि अनेक ऐसे कारण हैं जिन्होंने अनेक प्रकार की पर्यावरण समस्याओं को उत्पन्न कर भूदृश्यों को विकृत कर दिया है। आज आधुनिकता के नाम पर पर्यावरण को अत्यधिक आघात पहुँच रहा है।

ऐसी परिस्थितियों में यह नितान्त आवश्यक किया गया है कि समाज का प्रत्येक वर्ग पर्यावरण के प्रति जागरूक होकर अपने उत्तरदायित्वों का निवर्हन करे। पर्यावरण के प्रति समाज में बदलाव लाने व सबसे सशक्त माध्यम है- विद्यार्थी। विद्यार्थी हमारे राष्ट्र की धरोहर है। वे हमारा भविष्य हैं। शिक्षक विद्यालय की धुरी होता है। शिक्षक को कक्षा शिक्षण में निपुण होने के साथ-साथ प्रयोगात्मक मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए बालक को संवेदनशील बनाना चाहिये। बाल्यावस्था से ही शिक्षकों को बालकों में देश और पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्व की भावना का विकास करना होगा। देश के इन नोनिहालों के माध्यम से समाज में पर्यावरण जागरूकता और जन-चेतना निम्नानुसार उत्पन्न की जा सकती है -

(1) हरे वृक्षों की रक्षा हेतु तत्पर – शिक्षक विद्यार्थियों को यह बतलाए कि मनुष्यों की तरह ही पौधों में भी अपनी किस्म का जीवन होता है। वृक्ष हमें फल व छाया देने के साथ ही अनेक प्रकार के उत्पाद देते हैं। प्रत्येक विद्यार्थी का यह नैतिक कर्त्तव्य है कि वह अपने देश की वन सम्पदा को नष्ट होने से बचाए तथा यदि कोई व्यक्ति हरा-भरा पेड़ काटता है तो उसे ऐसा करने से रोके। आज आवश्यता इस बात की है कि बचपन से ही बालकों को वृक्षों के प्रति संवेदनशील बनाने में शिक्षक अपनी भूमिका निभाएँ। जब विद्यार्थी संवेदनशीलता के इस रहस्य को समझ लेंगे तो वे निश्चित रूप से हरे वृक्षों के रक्षक बन जाएँगे।

(2) वृक्षारोपण हेतु प्रेरित करें- शिक्षक, विद्यार्थियों को वृक्षारोपण हेतु प्रेरित करें। विद्यालय में प्रत्येक सत्र के आरम्भ में (जुलाई, अगस्त माह में) विद्यालय परिसर, खेल मैदान के चारों ओर, छात्रावास, खेत-खलिहान, घर व अन्य सार्वजनिक स्थलों पर ज्यादा से ज्यादा वृक्षारोपण करने से पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता विकसित होगी। साथ ही विद्यार्थी अपने घर-परिवार व समाज को वृक्षारोपण की जानकारी देकर वृक्षारोपण को जन-जन का मिशन बनाएँगे।

(3) वृक्षों की सार संभाल हेतु संकल्पवान बनाएँ- शिक्षक, विद्यार्थियों को वृक्षारोपण के साथ-साथ पौधों की सार-संभाल हेतु संकल्पवान भी बनाएँ। प्रत्येक विद्यार्थी को 'एक व्यक्ति-एक पेड़' का नारा देकर, कम से कम अपने जीवन में एक वृक्ष को गोद लेकर उसे पाल-पोसकर बड़ा करने हेतु जिम्मेदार बना सकते हैं। ऐसे संकल्पवान विद्यार्थी इस पुनीत कार्य में समाज की अधिकाधिक भागीदारी प्राप्त करने हेतु जागरूक बन सकेंगे।

(4) पर्यावरण स्वच्छता के प्रति जागरूक बनाएँ- शिक्षक, विद्यार्थियों को पर्यावरण स्वच्छता के प्रति भी जागरूक बनाने में अपनी भूमिका निभाएँ। बालकों को यह बतलाना चाहिए कि पंचतत्वों से हमारे शरीर का निर्माण हुआ है। प्रकृति के सभी तत्वों को साफ-सुथरा रखने का नैतिक दायित्व विद्यार्थियों का है क्योंकि प्रकृति के ये तत्व यदि साफ-सुथरे रहेंगे तो हमारे शरीर में किसी प्रकार की बीमारी नहीं होगी। विभिन्न प्रकार के प्रदूषण यथा- जल, वायु, भूमि व ध्वनि आदि के कारणों को आमजन को भली-भाँति समझाकर प्रदूषण की रोकथाम के उपाय समझाए जाने आवश्यक हैं। विद्यार्थी अपने घर-परिवार के वातावरण, विद्यालय पोषाहार एवं शौचालय की स्वच्छता का जितना अधिक ध्यान रखेंगे उतना ही रोग के कीटाणुओं को पनपने का मौका नहीं मिलेगा। धीरे-धीरे विद्यार्थियों का यह स्वभाव बन जाएगा कि वे घर और विद्यालय परिसर को साफ-सुथरा रखेंगे। शिक्षकों को चाहिए कि वे पॉलीथीन उन्मूलन हेतु व्यापक प्रचार-प्रसार करावें एवं पुनःचक्रित किया जा सकने वाला कचरा अलग इकट्ठा कर उसे पुनः उपयोग में लेने हेतु छात्र-छात्राओं को जागरूक बनाएँ।

(5) जल संरक्षण हेतु अग्रणी बनाएँ- शिक्षक, विद्यार्थियों को जल का किफायत से उपयोग करने, जल-प्रदूषण न होने देने हेतु जागरूक बनाएँ। बालकों को जल के विवेकपूर्ण ढंग से उपयोग करना सिखलावें। ताकि जल सभी के लिए उपलब्ध हो सके। घरों व विद्यालय में पानी को शुद्ध करने के फिल्टर संयंत्र का पानी भी साफ-सफाई अथवा पादपों को सींचने हेतु उपयोग किया जावे। विद्यालय पेयजल की स्वच्छता के लिए फिटकरी, लाल दवा ($Kmno_4$) आदि समय-समय पर पानी की टंकी में डलवाने हेतु विद्यार्थियों में रुझान

विकसित करना चाहिए।

(6) विद्युत रखरखाव हेतु समझ विकसित करें– शिक्षक, विद्यार्थियों को विद्युत के सीमित उपयोग हेतु समझ विकसित करें। विद्यालय की भित्तियों पर बिजली के रखरखाव, उपयोग न होने पर बिजली का स्विच बन्द करने संबंधी निर्देश, स्लोगन, पोस्टर आदि के माध्यम से जागरूकता लाई जा सकती है। रेफ्रिजरेटर, सी.एफ.एल. एवं ट्यूबलाइट्स आदि से निकलने वाली हानिकारक गैसें, वायुमण्डल की ओजोन परत को नुकसान पहुँचा रही है। अतः विद्यार्थी आम नागरिकों को यह बताएँ कि इन लाइट्स के उपकरणों को फ्यूज होने पर भूमि में गाड़ कर नष्ट करें ताकि जलीय जीवों, वनस्पति व मानव में हानिकारक रसायनों का प्रवेश रोका जा सके व कैन्सर जैसी गंभीर बीमारियों से बचा जा सके।

(7) निरीह पशु–पक्षियों के प्रति संवेदनशील बनाएँ– शिक्षक, विद्यार्थियों को इको क्लब द्वारा एवं जीव दया मण्डल के सक्रिय संचालन द्वारा निरीह, मूक पशु–पक्षियों हेतु संवेदनशीलता विकसित करें। विद्यार्थियों को समूचे में बाँट कर बस स्टेण्ड, रेल्वे स्टेशन एवं अन्य सार्वजनिक महत्त्व के स्थानों पर दाने–पानी हेतु परिण्डे एवं पशुओं के लिए जलपात्र की व्यवस्था करना बड़े उपकार का कार्य है। इससे विद्यार्थियों में जीव मात्र के प्रति आत्मीय भाव पैदा होंगे। स्काउट–गाइड ग्रुप, एन.एस.एस. द्वारा भी भारतीय समाज में इस पुनीत कार्य में जनचेतना लाई जा सकती है।

(8) सह शैक्षिक गतिविधियों द्वारा जागरूकता लाएँ– शिक्षक, विद्यार्थियों में सह शैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से भी पर्यावरण के प्रति जागरूकता विकसित कर सकते हैं। विज्ञान क्लब, इको क्लब आदि के माध्यम से विभिन्न साहित्यिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, प्रदर्शनी, पोस्टर, स्लोगन आदि प्रतियोगिताओं के आयोजन द्वारा विद्यालय में पर्यावरणीय चेतना लाई जा सकती है। विश्व पर्यावरण दिवस, विश्व ओजोन दिवस, अक्षय ऊर्जा दिवस आदि अनेक अवसरों पर रैलियाँ निकाली जानी चाहिए। वैज्ञानिकों की जयन्ती के अवसर पर पर्यावरण संबंधी संगोष्ठी आयोजित कर पर्यावरण संरक्षण क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करने वाले विद्यार्थियों को विद्यालय द्वारा समुचित प्रोत्साहन व पारितोषिक दिया जाना चाहिए ताकि उनका मनोबल बढ़ सके।

वर्तमान में पर्यावरण असंतुलन की समस्याएँ रोकने के लिए यदि समय रहते जागरूकता एवं सजगता उत्पन्न नहीं की गई तो सम्पूर्ण संसार विनाश के कगार पर पहुँच जाएगा। अतः पृथ्वी को जानने और उसके विभिन्न क्रियाकलापों को समझने, प्राकृतिक संसाधनों के बुद्धिमतापूर्ण उपयोग करने, प्रदूषण से बचाने तथा उसे कम करने, ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोत तलाशने आदि मुद्दों पर हर सम्भव प्रयास किए जाने आवश्यक है। इन प्रयासों के पीछे उद्देश्य यही है कि हर स्तर के, हर आयु वर्ग के लोगों को पर्यावरण के बारे में मूलभूत जानकारी मिल सके।

विद्यालय में विद्यार्थियों के हृदय में प्रकृति के प्रति लगाव की भावना का विकास करना होगा ताकि उनमें प्रकृति प्रेम उदय और जीव मात्र के प्रति आत्मीय भाव उत्पन्न हो सकें।

'पेड़ हमें देते आबोहवा,
आशियाना और मुस्कान
पेड़ों से ही आती वर्षा,
आबाद होता ये जहान।
मिलजुल कर सब जतन करें,
विकट राह बने आसान
पेड़ लगाओ, ये तो हैं
समृद्ध भारत की पहचान।'

प्रधानाचार्या
रा.बा.उ.मा.वि. माण्डलगढ़
भीलवाड़ा
मो: 9414838145

रपट

शिक्षा मंत्री ने किया 101 शिक्षकों का सम्मान

अजमेर सम्भाग के सबसे बड़े छात्र विद्यालय राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय राजेन्द्र मार्ग भीलवाड़ा की स्थापना के 75 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर प्लेटिनम जुबली के तहत माननीय शिक्षा मन्त्री महोदय श्री वासुदेव जी देवनानी के मुख्य आतिथ्य में पूर्व छात्र परिषद द्वारा विद्यालय में कार्यरत रहे शिक्षकों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि माननीय शिक्षा मंत्री ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि राजेन्द्र मार्ग स्कूल संभाग का ही नहीं, सम्पूर्ण राज्य व देश का सर्वश्रेष्ठ राजकीय विद्यालय बने, इसके लिए उन्होंने विद्यालय परिवार को शुभकामना भी दी। उन्होंने अगले शिक्षा सत्र से विद्यालय में संस्कृत विषय प्रारम्भ करवाने की घोषणा की। कार्यक्रम के प्रारम्भ में प्रधानाचार्य डॉ. महावीर कुमार शर्मा ने सभी अतिथियों का स्वागत व अभिनन्दन करते हुए विद्यालय की उपलब्धियों की जानकारी दी। पूर्व छात्र परिषद के अध्यक्ष डॉ. संतोष आनन्द गारू एवं सचिव श्री काश्मीर भट्‌ट ने अपने उद्‌बोधन में पूर्व छात्र परिषद के गठन एवं इसके तहत आयोजित की गई गतिविधियों की जानकारी दी। समारोह की अध्यक्षता श्री सुभाष बहेड़िया, सांसद, भीलवाड़ा ने की। उन्होंने विद्यालय में शौचालय ब्लॉक निर्माण हेतु सांसद कोष से पाँच लाख रुपये देने की घोषणा की। विशिष्ट अतिथि श्री दामोदर अग्रवाल, भाजपा जिला अध्यक्ष एवं श्री जीवराज जाट, उपनिदेशक (माध्यमिक शिक्षा) थे। समारोह में शिक्षा मंत्री श्री वासुदेव देवनानी द्वारा विद्यालय में पूर्व में रहे सर्व श्री भंवर सिंह चौधरी, रामप्रसाद भदादा, जगदीश पुरोहित, सांवरलाल शर्मा, तखत सिंह कानावत, गुमान सिंह पीपाड़ा, सत्यनारायण पारीक, जगदीश जाट व हीरालाल टेलर सहित 101 शिक्षकों को शॉल ओढ़ाकर एवं स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। इससे पूर्व शिक्षा मंत्री ने विद्यालय परिसर में स्थित स्वामी विवेकानन्द जी की मूर्ति का अनावरण किया एवं बायोमेट्रिक मशीन का शुभारम्भ किया। कार्यक्रम के मध्य में प्राध्यापक श्री भवानीशंकर भट्‌ट द्वारा स्वच्छता अभियान पर तैयार की गई लघु नाटिका प्रस्तुत की गई। इस अवसर पर पार्षद श्री गणपत पारीक, पार्षद प्रतिभा माली, विद्यालय विकास समिति सदस्य सर्व श्री गोविन्द प्रसाद सोडानी, राधेश्याम शर्मा, जिला शिक्षा अधिकारी घीसालाल शर्मा एवं मदन मोहन पारीक पूर्व छात्र परिषद् के संतोषानन्द गारु, काश्मीर भट्‌ट, मुकेश मंगल, अभिलाश मोदी सहित कई अभिभावक संस्था प्रधान स्टॉफ के सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री चन्द्रप्रकाश मारू ने किया। विकास समिति सदस्य श्री गोविन्द प्रसाद सोडानी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

–डॉ महावीर कुमार शर्मा, प्रधानाचार्य, राउमावि राजेन्द्रमार्ग भीलवाड़ा **मो.9414615855**

अर्थव्यवस्था

कृषि प्रधान देश में शिक्षा

❒ डॉ. लीला मोदी

हम वैश्वीकरण के युग में जी रहे हैं। भारत विकासशील राष्ट्र से विकसित राष्ट्र बनने की होड़ में अग्रणी है। चिंतन की बात है भारत कृषि प्रधान देश है और आज भी हमारे गाँव पिछड़े हुए हैं। उनमें नए युग की क्रांति और जागृति नजर नहीं आती है। वे आज भी अभिशप्त जीवन भोग रहे हैं। इसका प्रधान कारण है कि वहाँ शिक्षा का प्रचार और प्रसार नहीं हो रहा है। हमारी शिक्षा और उसका पाठ्यक्रम गाँव की समझ में आज तक इजाफा नहीं कर सके हैं। ज्वलंत ग्रामीण समस्याओं के समाधान में कोई ठोस योगदान नहीं निभा सके हैं। आखिर गाँवों का विकास हो तो कैसे? कैसे देश की अस्सी प्रतिशत जनसंख्या देश की उन्नति में सहायक सिद्ध हो? गाँव केवल पिछड़े हुए ही नहीं हैं, अपितु रुढ़िवादिता, अंधविश्वास, पारम्परिक संघर्ष आदि के कारण लोकतांत्रिक चेतना के लाभ भी नहीं उठा पा रहे हैं। अस्वस्थ राजनीति ने उनको और पंगु बना दिया है। स्वतंत्रता के बाद से गाँवों को उनका हिस्सा नहीं मिल सका। शहर तथा महानगर का विकास गाँवों का शोषण करके किया है।

कृषि के क्षेत्र में भारत ने बहुत कुछ किया है। किन्तु मध्यवर्गीय खेतिहर को मुनाफे का हिस्सा नहीं मिल पाया है। दूसरी ओर शहरोन्मुख प्रवृत्ति ने खर्चे पहले से भी अधिक बढ़ा दिए हैं। प्राकृतिक प्रकोप निरन्तर अकाल, बाढ़ आदि के आक्रमणों से इस वर्ग की सक्रियता को गहरा धक्का पहुँचा है। यदि हम अपनी पंचवर्षीय योजनाओं का गहराई से अध्ययन करें तो यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि गाँवों को उसकी उत्पादन क्षमता के अनुसार हिस्सा नहीं मिल सका है। राजनीतिज्ञ उस गरीब के साथ ऊपरी सहानुभूति जताकर मतों को एकत्र करने के उद्देश्य में लगे रहे हैं। इसका फल यह हुआ कि उद्योगपतियों को विकास के पूरे अवसर मिले और उन्होंने उन अवसरों का पूरा-पूरा लाभ उठाया। यद्यपि अनेक वायदे और सिद्धांतों को प्रस्तुत कर शहरी संपत्ति पर एक निर्णायक बंधन

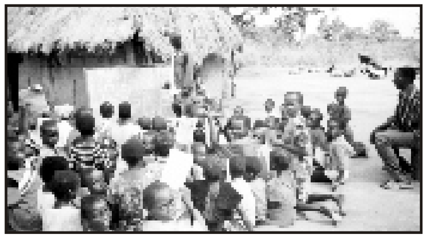

लगाया गया था। वह राजनीति के चक्रव्यूह में कार्यान्वित नहीं हो सका। जमींदारी उन्मूलन हुआ और उसके साथ-साथ समाजीकरण की ओर निर्णय लिया गया। यह सब इसलिए होता रहा कि शिक्षा को प्रभावी, अधिक समीचीन तथा उपयुक्त नहीं बनाया जा सका। इसके विपरीत शिक्षा में जल्दी-जल्दी अनेक परिवर्तन किए और उन परिवर्तनों के परिणाम आने से पूर्व ही उनको बदल दिया गया। साथ ही निरन्तर शिक्षा को शहर केन्द्रित किया जाता रहा। कोई निश्चित शिक्षा योजना ग्रामीण क्षेत्र की समस्याओं को केन्द्र में रखकर तैयार नहीं की गई। फलतः ग्रामीण जनों में जो शिक्षित भी हुए वे ग्रामीण परिवेश से बाहर चले आए। उनका लाभ भी ग्रामीण क्षेत्रों को नहीं मिला। मिलता भी कैसे? उन्होंने जिस प्रकार की तालीम हासिल की थी, वह तालीम उन्हें अपने हालात एवं परिवेश से बाहर चले जाने का निमंत्रण देती थी। एक बात मैं और कहना चाहूँगी। वह तालीम उन्हें ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले ग्रामीणों के शोषण की दिशाएँ सुझाती थी। सोचिए जो शिक्षा अपनी जमीन से दूर ले जाने की मनोवृत्ति को जन्म देने का कार्य करती हो वह शिक्षा राष्ट्रीय कैसे कही जा सकती है।

हमने लोकतांत्रिक जीवन व्यवस्था को संविधान द्वारा स्वीकृति प्रदान की है। सह-जीवनीय आस्थाओं को अंगीकार किया है। यह सब संविधान में हुआ है। आम जीवन में खास तौर से ग्रामीण जीवन में सामूहिक उत्तरदायित्व की व्यक्तिपरक व्यवस्था का प्रभाव परिलक्षित नहीं हुआ है। जब तक किसी व्यवस्था विशेष की क्रियान्विति में वह समग्र समाज अनुरत नहीं हो जाता है तब तक उस व्यवस्था विशेष का कोई महत्त्व नहीं रह जाता है। हालाँकि 'पास एजुकेशन' की व्यवस्था की योजनाओं को तेजी से लागू किए जाने का प्रचार शीर्ष पर है। उसकी कार्यान्विति में आस्थाहीन लोगों के होने से उसका कोई खास असर सिवाय आँकड़ों को इकट्ठा करने के नजर नहीं आ रहा है। समाजवादी दृष्टिकोण को सामने रखकर हमने जिस समाज की परिकल्पना की थी, वह आजादी के 69 साल बाद भी नजर नहीं आ रहा है।

आखिर क्यों? क्या हमने जो संकल्प लिए थे और जिन आदर्शों को जी लेने की पेशकश की थी वे केवल दिखावा थे? आज राष्ट्रीय चरित्र को क्षत-विक्षत होता हुआ पाकर जिस पीड़ा की अभिव्यक्ति आंदोलनात्मक रूप से की जा रही है, क्या उसमें आंतरिक स्वीकृति का लेशमात्र भी है या रुपये गटकने की योजना का यह भी एक हिस्सा ही है। एक अहम सवाल बारम्बार हमारे राष्ट्रीय नेताओं से लेकर जनप्रतिनिधियों के सामने आ खड़ा होता है और वे इसके उत्तर में जो कुछ कहते हैं वह भी सर्वविदित तथ्य है।

शिक्षा का सम्यक् गठन होना चाहिए था, वह नहीं हुआ। क्या इससे ऐसा नहीं लगता कि आजादी प्राप्त करने के पीछे जो भावना थी, वह-जनाकांक्षाओं की अनुपूर्ति करने की न होकर मात्र सत्तात्मक सुख की सम्प्राप्ति की थी। यही कारण है कि आजादी प्राप्त करने के बाद से आजादी से पूर्व का तपोनिष्ठ चरित्र द्रुतगति से ह्रासोन्मुख होता गया। उस महान दृष्टि को नजरअंदाज करता गया जिसके स्वप्न दिखाकर आम जनता को आजादी की लड़ाई में शामिल किया गया था।

वह सतेज और निर्लोभी चेतना पथभ्रष्ट हो गई। शिक्षा के माध्यम से यह कार्य क्रांतिकारी ढंग से चल सकता था। परंतु शिक्षा को ही पंगु बना दिया गया और शिक्षित बेरोजगारी के साथ-साथ शिक्षित की शापित मानसिकता का

हौआ खड़ा कर दिया गया। ग्रामीण क्षेत्र के लिए शिक्षा के अर्थ-अनर्थ की अभिव्यक्ति करने लगे, क्योंकि शिक्षित मुलाजिमों का कार्य व्यवहार चरित्रहीनता का प्रतीक सिद्ध होने लगा। ऐसा इसलिए हुआ कि पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में आस्था रखने वाले सेठ-साहूकर वर्ग को लोकतांत्रिक समाजवाद की व्यूह रचना को तोड़कर अपने लिए खास स्थान बनाये रखना था। उसका मतलब यह हुआ कि उन्होंने समाजवादी कवच पहनकर पूँजीवादी हथियारों से जनता पर धावा बोल दिया। ऐसे इरादों का सम्बल लेकर चलने वाला कार्यक्रम कदापि ग्रामीण जन शिक्षा की अंदरुनी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार नहीं किया जा सकता था, और ऐसा ही हुआ।

शिक्षा के विभिन्न मुद्दों को लेकर अनेक आयोग बिठाए गए। अनेक उपाय ढूंढ़े गए-जैसे बहुउद्देश्य शिक्षा यह उपाय जन्म के साथ ही, कुछ दिन सरक कर दम तोड़ गया। उनके पीछे भी औद्योगिकीकरण की भावना थी। कहीं ग्रामीण शिक्षा की बात सामने नहीं लाई गई। अगर आरम्भ से ही शिक्षा ग्रामीण अंचल की मूलभूत समस्याओं को लेकर उनके समाधान की दिशा में प्रयत्नशील होती तो आज का मानवीय संकट सामने न होता।

औद्योगिक अर्थशास्त्र के अध्ययन ने विद्यार्थी को यह मौका ही नहीं दिया कि वह ग्रामीण अर्थशास्त्र का अनुचिंतन कर सके। ग्रामीण सहजीवनीय विसंगतियों की सही जानकारी के अभाव में तालीमयाफ्ता तबका ग्रामीण क्षेत्रों के साथ न्याय नहीं कर सका और कुल मिलाकर सोचना यह पड़ गया कि तालीमयाफ्ता तबका उस अभागे ग्रामीण तथा गरीब जन के कानूनी शोषण के लिए तैयार किया गया है जो सदियों से जीवनीय आजादी की एक बूँद को तरसता आ रहा है। परिणाम वही हुआ उपेक्षित और उपेक्षित हुआ, गरीब और गरीब हुआ। शोषक मजबूत हुआ। शहर बढ़े। उनका सम्मोहन फैला और गाँव अंधकार की चपेट में आ गए। वहाँ भी नवजमींदारी वर्ग सक्रिय हो गए। ट्यूबवेल लगे परंतु चले उनके लिए जो सम्पन्न ग्रामीण थे। नहर से खेतों को पानी मिला, लेकिन उनको मिला जो सम्पन्न थे। कारण उनकी ऊपर तक 'अप्रोच' थी। नहर उन दिनों प्रायः बन्द रहने लगी या तब तक बंद रहने लगी जब तक सामान्य खेतिहर को पानी लगाने की जरूरत थी। यही बात बिजली के 'कट' की शुरु हो गई। सामान्य खेतिहर को उत्कोच देने के लिए विवश होना पड़ा। इसके पीछे सत्ताधारी राजनीति ने अपना जुगाड़ बिठा लिया। परिणामतः सामान्य किसान की हालत सुधारने के नाम पर जो कुछ हुआ, उसका लाभ अमीर किसानों के हाथ आया। ग्रामीण अर्थशास्त्र के जरिए इन मुद्दों पर गम्भीरता से विचार किया जा सकता था उसके लिए उपाय भी तलाश किए जा सकते थे। परंतु ऐसा नहीं होने दिया गया।

आज जनसंख्या शिक्षा के लिए कार्यक्रम बन रहा है। 'यूनेस्को' इसके लिए पर्याप्त पैसा और साधन जुटा रही है। यह बहुत पहले सोचा जाना चाहिए था कि तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या पर काबू नहीं किया जा सका तो देश की अर्थव्यवस्था डगमगा जाएगी और अर्द्धविकसित देश को भारी संकट में से गुजरना पड़ जाएगा। आज उसे आंदोलनात्मक रूप में लिया जा रहा है। ग्रामीण तबके में जनसंख्या शिक्षा की बहुत जरूरत थी। यदि उसे आज से बहुत पहले पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाता तो जनसंख्या की वृद्धि दर में पर्याप्त रोकथाम हो सकती थी और ग्रामीण क्षेत्रों में, इस समस्या से निपटा जा सकता था। लेकिन उसे आज तक (यद्यपि पाठ्यक्रम में लाने की तैयारी हो रही है) पाठ्यक्रम में नहीं लिया गया। उसे वास्तविक समस्याओं से बहुत दूर रखा गया।

जनसंख्या शिक्षा को ग्रामीण अर्थशास्त्र के अंतर्गत लेकर उसके विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला जा सकता है। लेकिन यहाँ तो ग्रामीण अर्थव्यवस्था को तरजीह ही नहीं दी गई। ग्रामीण समस्याओं के निदान की ओर ध्यान नहीं दिया गया। शिक्षा यदि ग्रामोन्मुखी होती तो समग्र भारत का विकास अत्यन्त तेजी से होता और आम आदमी की औसत आय में इजाफा होता। योजना बनाने वाले प्रायः शहरी हैं। उनका ग्रामीण क्षेत्र की ओर विशिष्ट ध्यान नहीं है। मतों की राजनीति करने वाले अपने 'मेनीफेस्टो' में ग्रामीण क्षेत्रों की बात डटकर उठाते हैं और उनका मन बहला देते हैं। हकीकत में उनके प्रति उनका कोई खास ध्यान नहीं होता है।

अब मूल बात यह है कि वर्तमान में शिक्षा में क्या होना चाहिए? कैसे शिक्षा को जनोन्मुख बनाया जाए और कैसे ग्रामीण जन की समस्याओं के निराकरण में शिक्षा को सक्रिय किया जाए? इसके लिए निम्न बिंदुओं पर ध्यान दिया जा सकता है-

1. सामाजिक ज्ञान में ग्रामीण अर्थशास्त्र को स्थान दिया जाए या 'ग्रामीण अर्थशास्त्र' नए विषय के रूप में पढ़ाया जाए।
2. जनसंख्या शिक्षा को भी पाठ्यक्रम में लिया जाए तथा उसके प्रभावी कार्यक्रम के महत्त्व को समझाया जाए। उसकी सामाजिक तथा आर्थिक उपयोगिता का सटीक विश्लेषण किया जाए।
3. ग्रामीण विकास के लिए सरकारी, सहकारी आदि सभी प्रयत्नों तथा उनसे मिलने वाली सुविधाओं का अध्ययन कराया जाए। उनके व्यावहारिक पक्ष से परिचय कराया जाए।
4. ग्रामीण जनों में शिक्षा के माध्यम से यह चेतना लानी अत्यंत आवश्यक है कि वे कैसे अपना विकास कर सकते हैं?
5. समग्र ग्रामीण परिवेश का व्यावहारिक तथा वैज्ञानिक अध्ययन तुलनात्मक ढंग से कराया जाए।

उपर्युक्त बिंदुओं के द्वारा ग्रामीण चेतना को समाजोन्मुख किया जा सकता है और राष्ट्रीय विकास में सार्थक योगदान लिया जा सकता है। श्रम तथा उत्पादन, पूँजी और पुनः नवीनीकरण आदि को लेकर ग्रामीण आर्थिक समस्याओं का अध्ययन उनके सामाजिक परिप्रेक्ष्य में सविस्तार समझाया जा सकता है ताकि ग्रामीण शिक्षित उस क्षेत्र में सक्रियता व आत्मविश्वास से काम कर सके। यह निश्चित है कि जब तक ग्रामीण अंचल के अनुरूप संक्रांति शुरू नहीं हो जाती तब तक राष्ट्रीय स्तर पर कामयाबी नहीं मिल सकती।

सारांश यह है कि भारत कृषि प्रधान देश है, जो कि मुख्यतया गाँवों का देश है, का विकास तथा उसकी आत्मनिर्भरता गाँवों पर आधृत है। यह कार्य शिक्षा नीति को आमूलचूल सुधारे बिना संभव नहीं हो सकता। हालाँकि शिक्षा आयोग ने इस बात को बराबर रेखांकित किया है तथापि तदनुरूप शिक्षा योजना में आज तक परिवर्तन नहीं हुआ है। ऐसा क्यों हुआ है? यह विषय विचारणीय है। ऐसा करना नितांत आवश्यक है।

291, मोती स्मृति, टिपरा, कोटा

रपट

स्मार्ट सिटी के राजकीय विद्यालय भी स्मार्ट

❒ वसुधा शर्मा

प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी व राजस्थान की माननीया मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे के डिजिटल इण्डिया व स्मार्ट सिटी के सपने का पहला सोपान (कदम) अजमेर शहर में स्मार्ट सिटी की घोषणा के साथ ही शिक्षा राज्यमंत्री श्री वासुदेव देवनानी जी के अथक प्रयास से पूरा होने जा रहा है।

शिक्षा विभाग द्वारा राजकीय विद्यालयों को निजी विद्यालयों के समकक्ष लाने के अथक प्रयास विभिन्न योजनाओं के माध्यम से किए जा रहे है। इस क्रम में मंत्री जी द्वारा पिछले सत्र में भामाशाहों के माध्यम से अजमेर शहर के राजकीय विद्यालयों में लाखों रुपये के फर्नीचर का वितरण नि:शुल्क करवा कर आदर्श योजना प्रस्तुत की थी। इसी क्रम में माननीय शिक्षा मंत्री महोदय का सपना है कि उनके राजकीय विद्यालय भी निजी विद्यालयों के समकक्ष हो तथा उनमे अध्ययनरत विद्यार्थी भी डिजिटलाइजेशन के माध्यम से विश्व में हो रहे सतत परिवर्तन के साथ जुड़े ताकि वो इस प्रतियोगी वातावरण में स्वयं को श्रेष्ठतम सिद्ध कर सके। इसके लिए मंत्री जी ने पुन: अजमेर शहर में एक आदर्श प्रस्तुत किया है।

माननीय शिक्षा मंत्री महोदय के प्रयासों से स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एंड जयपुर की सहायता से सामाजिक सरोकार के कार्यों के अन्तर्गत अजमेर शहर के 30 राजकीय विद्यालयों (माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, उच्च प्राथमिक) में स्मार्ट कक्षाकक्षों का निर्माण करवाया जा रहा है। इसके अन्तर्गत राजकीय विद्यालय के एक कक्षाकक्ष का पुनर्निर्माण करवाया जा रहा है, इसमें फर्श, टूटफूट, चुनाई, प्लास्टर, पुट्टी व रंग-रोगन का कार्य करके उसे भव्य रूप प्रदान किया गया है। स्मार्ट कक्षाकक्ष में काँच के दरवाजे, स्टील की सेमिनार कुर्सियाँ, कारपेट, फॉरसीलिंग, एलईडी लाइटिंग, नेट, इन्वर्टर इत्यादि से सुसज्जित किया गया है।

उक्त कक्षा-कक्ष में प्रोजेक्टर के माध्यम से छात्र-छात्राओं को शिक्षण कराया जाएगा। विद्यार्थियों को स्वस्थ वातावरण देने हेतु उनके इस स्मार्ट कक्ष में कमरे के आकार को ध्यान में रखते हुए एयर कंडीशनर की व्यवस्था भी की जा रही है। उक्त सभी कक्षा-कक्षों पर स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर के माध्यम से एक करोड़ की राशि का व्यय विभिन्न सामग्री के मदों में किया जा रहा है।

स्मार्ट क्लास में प्रोजेक्टर के माध्यम से तो विद्यार्थियों को पढ़ाने के साथ ही समय-समय पर इंटरनेट के माध्यम से विषय विशेषज्ञ भी गेस्ट व्याख्यान देकर विद्यार्थियों का ज्ञानवर्द्धन करेंगे। उक्त योजना से विद्यार्थियों को विषय आधारित ज्ञानवर्द्धन के अच्छे अवसर प्राप्त होंगे। स्मार्ट कक्षा-कक्ष की योजना एक ऐसा आदर्श नवाचार है, जो राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों को निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों से प्रतिस्पर्द्धा में श्रेष्ठ बनाएगा।

उक्त कार्य को समयबद्ध पूर्ण करने हेतु उपनिदेशक माध्यमिक शिक्षा के शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी श्री अमित शर्मा, अति. जिला शिक्षा अधिकारी श्रीमती दर्शना शर्मा, अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक (रमसा) श्री रामनिवास गालव, सहायक निदेशक (प्रा.शि.) श्री चन्द्रशेखर एवं वरिष्ठ उप जिला शिक्षा अधिकारी श्री निरंजन कुमार जिन्दल, योगेश पारीक शिक्षक उ.प्रा.वि. रातीडांग, अजमेर का दल गठित किया गया है। स्मार्ट कक्षा-कक्षों का निर्माण कार्य अपने अन्तिम चरण में है। माननीय शिक्षा राज्यमंत्री महोदय श्री वासुदेव देवनानी द्वारा केन्द्रीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय पुरानी मण्डी में स्वयं जाकर उक्त कक्षा-कक्ष के निर्माण कार्य का अवलोकन कर मार्गदर्शन दिया है।

विद्यालय जिनमें स्मार्ट क्लास विकसित की जा रही है-

1. राजकीय सावित्री बाउमावि, अजमेर
2. राजकीय केन्द्रीय बाउमावि पुरानी मण्डी, अजमेर
3. राजकीय जवाहर उमावि, अजमेर
4. राजकीय उमावि पुलिस लाईन, अजमेर
5. राजकीय मोइनिया इस्लामिया उमावि स्टेशन रोड़, अजमेर
6. राजकीय उमावि माकड़वाली, अजमेर
7. राजकीय मावि लोहाखान, अजमेर
8. राजकीय मॉडल बाउमावि, अजमेर
9. राजकीय ओसवाल जैन उमावि, अजमेर
10. राजकीय बाउमावि फॉयसागर, अजमेर
11. राजकीय उमावि सिंधी देहलीगेट, अजमेर
12. राजकीय उमावि सिंधी खारीकुई, अजमेर
13. राजकीय उमावि रामनगर, अजमेर
14. राजकीय उमावि मीरशाहअली, अजमेर
15. राजकीय उमावि वैशाली नगर, अजमेर
16. राजकीय उमावि हाथीखेड़ा, अजमेर
17. राजकीय उमावि अजयसर, अजमेर
18. राजकीय बाउमावि क्रिश्चियनगंज, अजमेर
19. राजकीय मावि चौरसियावास, अजमेर
20. राजकीय मावि कोटड़ा, अजमेर
21. राजकीय बामावि लोहाखान, अजमेर
22. राजकीय उप्रावि दातानगर, अजमेर
23. राजकीय उप्रावि पंचशील जनता कॉलोनी, अजमेर
24. राजकीय उप्रावि घी मण्डी नागफणी, अजमेर
25. राजकीय उप्रावि बोराज, अजमेर
26. राजकीय उप्रावि रातीडांग, अजमेर
27. राजकीय उप्रावि खरेखड़ी, अजमेर
28. राजकीय मावि सुभाष गंज, अजमेर
29. राजकीय उमावि सोमलपुर, अजमेर
30. राजकीय बाउमावि सराधना, अजमेर

वस्तुत: स्मार्ट कक्षा-कक्ष योजना अजमेर के राजकीय विद्यालयों के शैक्षिक विकास में मील का पत्थर सिद्ध होगी।

राबाउमावि देवली (टोंक)
मो. 9214932035

पुस्तक समीक्षा

अनछुए अहसास

नीता चौबीसा **प्रकाशक** : बोधि प्रकाशन, जयपुर **संस्करण** : 2016 **पृष्ठ संख्या** : 144 **मूल्य** : ₹ 200

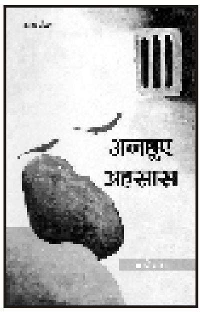

अनछुए अहसास नीता चौबीसा का दूसरा काव्य संग्रह है। इस संग्रह को पढ़ते हुए अहसास हुआ कि यह नारी मन के कोमल भावों की कविताएँ हैं, जो बतौर लेखिका 'पराजय की हताशा के बीच दिगन्त से ऊर्जा संश्लिष्ट कर रिश्तों के पुल बनाती, सँवारती मेरी रागात्मक संवेदना, जब वैचारिक संवेदना में परिणत हो जती है, तो अहसासों के ये चित्र स्वतः ही शब्दों में ढलकर कागजों पर कविताओं के रूप में उतरते हैं।

इस संग्रह में आठ अलग-अलग अहसास, प्रेम, यादें, दर्द, आस, जज्बा, ज़िन्दगी और कविता, खण्डों में 64 कविताएँ हैं। जीवन के तमाम खुले-अधखुले अहसासों से परिचय करवाती इन कविताओं को पढ़ते हुए कहा जा सकता है कि 'तुम पूछते हो/कविता क्या है?/मैं कहती हूँ-/अंतस के रिक्त को भरने का/एक छोटा सा प्रयास।

दरअसल कविता क्या है? यह प्रश्न शाश्वत है और इसकी व्याख्या अलग-अलग तरीके से की भी गई है। एक पाठक के लिए कविता वही है जो उसे अपने साथ बहा ले जाए। जिसमें वह खोकर अपने अन्तस तक पहुँच जाए। यदि इस दृष्टि से देखें तो इस संग्रह की कविता कहीं-कहीं सफल दिखलाई पड़ती है। अपने अन्तस की यात्रा को व्यक्त करती हुई कवयित्री एक 'चेलेंज' रख देती है-तुम बूझोगे मेरी कविताओं के अर्थ/ढूँढ़ते रहते हो तुम केवल इनके सन्दर्भ/तुम तलाशते रहते हो मेरे शब्दों की देह/छंद, पद, यति, गति के नियम/वर्णो के अनुशासन/तुम लगे रहते हो इसकी दैहिक मीमांसा में/और मेरे शब्द/कविता की आत्मा से गुज़र जाते हैं।'' वैसे साहित्य की प्रत्येक विधा का अपना अनुशासन होता है। अपनी रीत होती है। कविता को उन्हीं कसौटियों में परख कर ही जाँचा जा सकता है।

प्रस्तुत कविता संग्रह में कविताएँ अहसासों की ऊष्मा से सराबोर होकर 'अहसास' खण्ड में मौसमी परिंदे के बन्द हुई अठखेलियों को महसूसती है तो कभी अपने आँगन की तुलसी को देखती है। अहसासों की धार में बहती हुई कभी नदी का अस्तित्व ढूँढ़ती है तो कभी अनुबंधित नदी बन वक्त के बहके दरिया को सुधारने को आतुर नज़र आती है। मृग की प्यास के बहाने से उन्मादग्रस्त समय के बीच प्यार और विश्वास के हारसिंगार को ढूँढ़ती है।

नारी मन के भीतर निरंतर उमड़ते-घुमड़ते प्यार, प्यास और संघर्ष के विविध रंगों का मुखर रूप इस कविता संग्रह के 'प्रेम' खण्ड में प्रेम के कोमल भाव भी देखे जा सकते हैं। अन्तर की पुकार में दिव्य प्रेम में पग कर अभिसार को आतुर होते जज्बात कह उठते हैं। अभिसार को आतुर/श्वासों की लहरें भी/निर्निमेष पुकार में/टूटा कल्पित-वज्र सारा है/अंतर में किलोल कर उठा/प्राण चातक प्यारा/आज फिर दिगन्तर से। इन कविताओं में प्रेम के इन शब्दों को पढ़कर दैहिक प्रेम के बहाने ढूँढ़े जा सकते है पर इन कविताओं में प्रेम क्या है? इसे समझने के लिए कविता के भीतर तक की यात्रा करनी पड़ती है। तब प्रेम सुधा में पगती हुई कवयित्री कह उठती है-स्व का विसर्जन है प्रेम/विश्वासों का अर्चन है प्रेम/प्रेम प्याली-भर खुमार नहीं/जो चढ़ी और उतर गई!... प्रेम कुछ और नहीं/एकात्म से सर्वात्म होना है।/सूरज से शबनम तक का/सफर तय करना है... प्रेम।

इस कविता संग्रह में प्रेमिल अहसासों के बादलों का यथार्थ के पहाड़ से टकराकर टूटने की वेदना को महसूस किया जा सकता है। दरअसल कल्पनाओं में भटकते हुए यथार्थ को भूल जाना मानव स्वभाव है। प्रणय राग में वे कृष्ण से कह उठती है 'प्रीत सदा ही विरह की सेज पर सोई है/आज फिर कोई राधा छुप-छुप के रोई है।

इस काव्य संग्रह में सर्द अहसास लिए कोमल संवेदनाएँ, समर्पण युक्त प्रेम, अपनी खामोशी की अभिव्यक्ति, विरह राग और अनेकानेक करुण भावों को स्पष्ट पढ़ा जा सकता है। जीवन में यादें नहीं हो तो शायद जीवन जीने का तरीका कुछ और हो। यादें हमें अपनी अतीत से बाँधे रखती हैं। संग्रह के 'यादें' खण्ड में यादों के समन्दर में हिलोरें लेती हुई कविताएँ 'उम्र भर के लिए' में अपनी कटु यादों को बताती है तो तुम्हारे जाने के बाद में अपने सूने आंगन में उदासी से बात करने लगती है। 'महक' कविता में महक बनकर समूची घुलने को याद करती है तो एक खत उनके नाम लिखती हुई अपने ज़ेहन की गुड़िया के यादों के नश्तर को भी अपने पास सजाए रखती है।

प्रस्तुत कविता संग्रह में प्रेम, यादों या कविताओं के मायने बताने वाली कविता ही नहीं है वरन् औरत होने के दर्द के शब्द चित्र भी दिखाई देते है। इन कविताओं में नारी विमर्श का शोर तो नहीं है पर होले से नारी विमर्श की धमक सुनी जा सकती है। इन कविताओं को पढ़कर कहा जा सकता है कि ये दुविधा की कविता है। जिनमें एक ओर तो वे अपने समर्पणजन्य प्रेम से अपने वज़ूद को समाप्त करती नज़र आती है-कुछ तो था/कहीं खो गया/जाने क्या से/क्या हो गया/तुम पूछते हो क्या?/मैं कहती हूँ मेरा वज़ूद। यहीं दूसरी ओर 'अहिल्या का आर्तनाद' के माध्यम से पूछ उठती हैं-शीलावती का शिला होना/कितना स्वाभाविक था?/ किसी ने सोचा/सबने देखा तारणहार/राम की चरण धूली ने/पाषाणों अहिल्या को तारा/पर किसी ने आज तक/यह न विचारा कि/राम के कदमों ने तो/कई पाषाणों को छुआ होगा/सभी तो प्राणवंत न हुए? संग्रह के दर्द भाव में लिखी गई अन्य कविताएँ औरत के दर्द को बखूबी से रखती है।

यह काव्य यात्रा यहीं विराम नहीं लेती है। दर्द के अनुभवों को सहेजती हुई उम्मीद का दामन थामें हुए 'आस' खण्ड में प्रवेश कर 'परिंदे की उड़ान' के बहाने से फिर एक साहस के साथ खड़ी होती है। नज़र बदलने की उम्मीद में बदलते मंजर में कह उठती है कि-वक्त का तूफान थम जाए/रब करे मंज़र बदल जाए। इस संग्रह का अगला खण्ड 'जज्बा' है। जहाँ आस के बाद लक्षण दिखाई देता है। जज्बा जगाती हुई संकल्प कविता कह उठती है-लो, ध्वस्त कर दिए हैं मैंने/तुम्हारे दिए दर्द के स्तूप।/स्वाभिमान की अलगनी पर झटक कर टाँग दिए हैं मैंने

तुम्हारे दिए तमाम छल-प्रपंच। कविताओं की इस यात्रा में कवयित्री जज्बा दिखाते हुए औरत के 'धर्मयुद्ध' का ऐलान करती हुई कहती है कि औरत के लिए तय की गई है/प्रति पग एक अग्नि परीक्षा/बस तब तय कर लेती हूँ मैं/नहीं हार मानूंगी/अभ्यस्त हो चुकी बदरंग सोच को/मैं नहीं बदल सकती, पर/खुद को मैं समर्थ बनाऊँगी/जीत ही लूँगी/एक न एक दिन यह धर्मयुद्ध/और कृष्ण की गीता रच जाऊँगी।

इस संग्रह की कविताओं में कवयित्री द्वारा अपने ढंग से किए गए शब्दों का चयन उल्लेखनीय है। कवयित्री द्वारा कठिन हिन्दी शब्दों के साथ-साथ उर्दू के शब्दों का बेहतरीन प्रयोग किया गया है। भाषा ही वह जरिया है जो अमूर्त भावों को चित्रित कर कविता को रचती है। इन कविताओं में भावानुरूप सधी हुई भाषा में अपनी मनगत को उजागर किया गया है। भाषा में तत्सम प्रधान शब्द जहाँ इसकी ताकत दिखाई देते हैं वहीं आम पाठक जो अपने जीवन की तमाम जटिलताओं में रूबरू होता हुआ इस संग्रह को पढ़ता है तो कुछ असुविधा महसूस कर सकता है। कहीं-कहीं जटिल शब्दावली ज्ञान बघारती हुई नज़र आती है।

आलोच्य संग्रह की समग्र बात करें तो इसकी कविताओं को किसी एक सांचे में नहीं बाँधा जा सकता है। कहीं वह छंद में बंधती हुई नज़र आती है तो कहीं विखण्डित होती छंद के बंद तोड़ कर स्वतंत्र होती नज़र आती है। दरअसल कविता में बात लय की ज़रूर होती है। इस लिहाज से देखा जाए तो कहा जा सकता कि कुछ एक कविताओं को छोड़ दे तो कविताएँ अपनी लय को नहीं तोड़ती है।

अभिव्यक्ति तब ही सफल हो पाती है, जब सृजन के उच्चतम प्रवाह को छू ले। नारी के जीवन अनुभव और सच्ची संवेदनाएँ इन कविताओं के माध्यम से कुछ इस तरह अभिव्यक्त होती हैं कि पाठक इनसे तादात्म्य स्थापित करने लगता है। हालांकि इन कविताओं का कोई एक सुर नहीं है। विविधताओं की बहुलताओं के चलते पाठक असहज हो सकता है।

अन्त में इस संग्रह से गुजरते हुए नारी मन की कोमल संवेदनाओं के कोमल पहलु से साक्षात्कार करवाती इसकी कविताओं को पढ़कर कहा जा सकता है कि साहित्य जगत नीता चौबीसा से उम्मीद रख सकता है। उनकी रचनाधर्मिता प्रभावी है और हमें आश्वस्त करती है। पुस्तक का आकर्षण आवरण और सुन्दर छपाई सहज आकर्षक का कारण भी बनती है।

-समीक्षक : **प्रमोद कुमार चमोली**
अनुसंधान अधिकारी
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर

हाला का प्याला

लेखक : तेजसिंह राठौड़ **संस्करण-प्रथम** : 2008
पृष्ठ संख्या : 128 **मूल्य** : ₹ 100

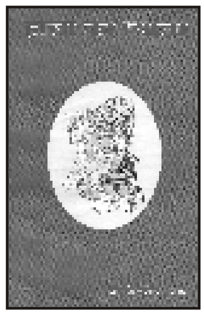

हाला का प्याला श्री तेज सिंह राठौड़ का कविता संग्रह है। इस कविता संग्रह में हाला, प्याला और सुरा को लेकर दो-दो पंक्तियों की रचना की गई है। वैसे पद्य, साहित्य की वह विधा है जिसके माध्यम से किसी कहानी या मनोभाव को कलात्मक रूप से किसी भाषा के द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है। समीक्ष्य संग्रह में छन्द के समस्त गुण यथा गति, यति, तुक और गण को देखकर कहा जा सकता है कि ये छन्द तो है किन्तु ना तो मात्रिक छन्द है न ही वार्णिक छन्द है। ये मुक्त छन्द की रचनाएँ है जो लय और तुक को साधते हुए पाठक को काव्यानुभूति देती है।

हाला का प्याला के माध्यम से कवि ने हाला की तारीफ नहीं की वरन् इसके दुर्गणों को व्यंग्यात्मक रूप से इंगित किया है। हाला का प्याला दरअसल कविता का प्याला है जिसे पढ़कर पढ़ने वाला मतवाला हो सकता है। इसके प्रथम छन्द में ही कवि ने यह लिखा है कि

जीवन के सातों रंगों से इसको मैंने है ढाला।
यह मेरी चाहत का प्याला पीजा होकर मतवाला।।

इस संग्रह में हाला के नाम को लेकर कवि प्रेम की कोमल अनुभूतियों को भी व्यक्त करता है। ऐसे समय में जब प्रेम के मायने स्थूल हो चुके हैं। जब प्रेम किताबों के पन्ने से निकल कर कम्प्युटर स्क्रीन और मोबाइल के डिस्पले पर चमकने लगा है। ऐसे समय में जब प्रेम, भाव से जिन्स का रूप लेने लगा है, ऐसे समय में प्रेम के इस निश्छल रूप को व्यक्त करने के लिए हाला का यह प्याला मतवाला होकर कह उठता है-

गर ऐसा हो जाए किसी दिन
बन जाऊँ मैं साकी बाला।
प्रियतम मेरे मदुआ बनकर
पीने आए मधुशाला।।

जीवन रूपी पौधा सुख की छाया और दुख की धूप में पक कर वृक्ष बनता है। जीवन के इन्हीं अनुभवों को कलात्मक रूप से कवि द्वारा हाला के प्याला में रखा गया है। यहाँ सुख की छाया में भी हाला का साथ दिखाई देता है, तो दुख की धूप में भी हाला का प्याला छाया बनकर खड़ा होता है। इस प्रकार के दोनों अनुभवों को इस संग्रह में देखा जा सकता है-

जीवन में संगीत बसा है,
प्रवेश द्वार है मधुशाला।
पीने से झंकृत होता है,
यह कहती है मधुबाला।।
अपने ही जब साथ छोड़ दें
अपनाती है मधुशाला।
अनजाने पथिकों की खातिर
मुस्काती है मधुशाला।।

आज भारतीय समाज जाति, धर्म, प्रान्त इत्यादि के खांचों में बंटा हुआ दिखाई देता है। समभाव केवल पुस्तकों के शब्दों में सीमित होकर रह गया है। ऐसे विचित्र समय में समीक्ष्य कृति के कवि आशावाद रखते हैं और मधुशाला में भेदभाव रहित वातावरण की बात बताकर इस समभाव की समाज की अपेक्षा करते हुए कहते है-

जाति बन्धन नहीं रहे अब,
सब पीने लगे हैं हाला।
एक समान ही सबका,
स्वागत करती मेरी मधुशाला।।

यह कहना गलत नहीं होगा कि इस संग्रह में कवि ने जीवन के दर्शन को भी हाला के प्याला के माध्यम से व्यक्त किया है। जीवन एक प्रतीति है। जिसका मुख्य प्रतिपाद इसका क्षण भंगुर होना है। यानि शाश्वत सत्य तो मृत्यु ही है, शेष सब मिथ्या है। इस संसार में चारों ओर मृत्यु फैली है। जिसने जीवन के इस क्षण भंगुर होने को समझ लिया, वही योगी है। वही परमात्मा से मिल सकता है। इस तरह की प्रतीति इस संग्रह के छन्दों में देखी जा सकती है-

अमर कौन होकर आया है, हर एक, जाने वाला।
जब कोई जाता है तो फिर, क्यों कहते पीने वाला।।

कुल मिलाकर इस संग्रह में हाला के बिम्ब

को रचते हुए कवि ने जीवन के तमाम पहलुओं को छूने का प्रयास किया है। ये दीगर बात है कि कहीं कहीं हाला का प्याला हल्का होकर गूढ़ ज्ञान की डगर को छोड़कर सांसारिक हाला का प्याला सा दिखाई देने लगता है।

समीक्ष्य संग्रह की एक अनुपम विशेषता यह है कि इसमें प्रत्येक छन्द का अंग्रेजी और राजस्थानी में अनुवाद दिया गया है। त्रिभाषिक पुस्तक बनाना अपने आप में एक श्रम साध्य कार्य है। इस हेतु लेखक के प्रयासों को सराहनीय कहा जा सकता है। इस संग्रह को पढ़कर कहा जा सकता है कि यह बच्चन जी की मधुशाला सरीखी नशीली तो नहीं मगर उस परम्परा का पुनर्जीवन अवश्य है। यह भी कहना गलत नहीं होगा कि कवि के अवचेतन मन में बच्चन जी की मधुशाला का नशा अवश्य रहा होगा।

–समीक्षक : **सुभाष माचरा**
शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर

जो बोया है

लेखक : डॉ. कमलाकान्त शर्मा, 'कमल' **प्रकाशक** : बोधि प्रकाशन, एफ-77, सेक्टर-9, 4511 करतारपुरा, जयपुर **संस्करण** : 2015 **पृष्ठ संख्या** : 180 **मूल्य** : ₹ 150

लेखक की समय-समय पर लिखी, विभिन्न अवसरों पर रची कविताओं का संग्रह मन को मोह लेता है। कविताओं की अपनी निजी भाषा है, संगठन है जो पृथक अपनी पहिचान बनाती है, प्रस्तुतीकरण भी अपना पृथक स्थान रखता है जो अन्य सामान्य लेखकों से पृथक दिखता है। कविताओं की भाषा मन को छूने वाली है इससे सामान्य पाठक भी गुनगुनाने को तत्पर हो सकता है, मानव हित में सोचने-समझने के लिए पाठक को समर्थ बनाती हैं। लेखक व्यवसाय से चिकित्सक तथा विभाग में विभिन्न पदों पर सेवाएँ देते हुए आयुर्वेद विभाग में उपनिदेशक के पद पर आसीन रहे है।

पुस्तक के आरम्भ में कृति को पूज्य माता-पिता को समर्पित किया है। इससे स्पष्ट होता है कि लेखक भारतीय संस्कृति का प्रशंसक ही नहीं अपितु मुक्त हृदय से पुजारी रहा है।

कहीं-कहीं लेखक ने जीवन में अभूतपूर्व साहस का परिचय दिया है। चलना मुझे अकेला है-कविता में लेखक के मन के

अमिट नाम हुआ है उसका जिसने संकट झेला है।
दुख से क्या घबराना साथी, यह जग दुख का मेला है।।

पृष्ठ 38

आगे चलकर कवि सतत परिश्रम के लिए आह्वान करता है। उसके शब्दों में-

तुम में शक्ति सागर की, चीर किनारे जाने की।
संकल्पित हो यदि चले तू, ताकत है नभ छूने की।।

पृष्ठ 39

इससे कवि को अपनी शक्ति का पूर्णतः ज्ञान है, जानकारी है और पाठकों को निरन्तर कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, सजग बनाना है। आगे चलकर कवि युवा शक्ति को ललकार कर कहता है-

चेतना खो कर पड़े हो, मूक दर्शक से खड़े हो।
सामर्थ्य निज की भूल कर, रोटियों हित ही लड़े हो।।

पृष्ठ 103

आगे इसी संदर्भ में

आतंक के बारूद पर भी सो रहे हो तुम अभी
शत्रुओं के बीच में भी, स्वप्न में डूबे सभी

पृष्ठ 109

कितनी आश्चर्यजनक पर साहस के साथ ललकार है युवा वर्ग को! बस आती नींद से जगने के लिए युवा वर्ग को यह आह्वान पर्याप्त नहीं लगता?

कवि को विश्वास है कि शत्रु दल का नाश होगा-वे मिटेंगे तथा अच्छे दिन फिर आयेंगे-

शान और गरिमा में आ सके, फिर से हम पहचान करें।
लहू शहीदों का है इसमें आओ इसको नमन करें।।

कवि को कितना दृढ़ विश्वास है? विश्वास के साथ कवि ललकारता है। साक्षरता की उपयोगिता रेखांकित करते हुए कवि कहता है

आओं बात करें पढ़ने की, भाई हो या बहना।
काका काकी दादी ताई, सबको अब है पढ़ना।।

पृष्ठ 93

सही मानव का विकास हो- इसे कवि ने कितने प्रभावी ढंग से सरल शब्दों में यों बताया है-

दुखियों का हम आधार बने,
जीवन का सुन्दर मील बने।
सरिता सी कलकल धारा में,
मंजिल की राह उदार बने।।

मानव का सही रूप में, सही ढंग से विकास हो- इसे इससे से अधिक और कितने प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जाये- निश्चय ही प्रस्तुतीकरण मन को छूने वाला है।

पुस्तक के उत्तरार्द्ध में ऐसा लगता है कि कवि अपना साहस भूल रहा है। सबल कर्म ही जीवन है- मूल मंत्र मानने वाला कवि एक जगह कहता है-

रूप सारे बिखर गये जो देखे थे हमने काफी।
ठोकर लगी नींद से जागे पवन शत्रुता की अभी।।

और भी-

फूलों की थी आशा सदा ही, कदम कदम पर थे कांटे।

अन्त से पूर्व

कवियों पर गिरी गाज तो आँखें कैसे भर भर आती

कविता मन को छूती है तथा निरन्तर कर्म पथ पर बढ़ने का संदेश देती है-प्रस्तुतीकरण प्रभावी बन पड़ा है। कवि का विश्वास देखिए- दृढ़ता के साथ शब्दों का संयोजन कितनी देखिए-

कुछ समय चाहे तो अपने भाग्य पर ऐंठ ले
गालियों को पचाने की जिसनें गजब की शक्ति चाहिए

पृष्ठ 145

अन्तर्निहित भावों की प्रस्तुति प्रभावी है तथा हृदय को छूने वाली। भाषा सरल, सहज एवं परिमार्जित है, प्रभावी है, मन को झकझोरने वाली है। प्रस्तुतीकरण निहायत मनभावन व सरल है। दिया जाने वाला संदेश पाठकों तक सहज ही पहुँचता है। पाठकों को यदि कहीं साफ-सफाई, स्वच्छता। वनौषधी या जड़ीबूटियाँ पद-कविताओं के मध्य लेखक का झुकाव लगे तो इसे लेखक की वृत्ति का न्यूनाधिक रूप से प्रभाव ही मानना चाहिए।

पुस्तक का कागज अच्छा है, छपाई-मुद्रण अच्छा है, आवरण पृष्ठ आकर्षक है। स्वामी जी ओमानन्द सरस्वती का आशीर्वचन मार्मिक, प्रेरणादायी तथा प्रभावी है। डॉ. देव कोठारी, डॉ. भगवती लाल व्यास तथा डॉ. इन्द्र प्रकाश श्रीमाली की टिप्पणियाँ इतनी प्रभावी लगती है कि पुस्तक की उपयोगिता रेखांकित करना समीक्षक के विचार क्षेत्र से परे मानना चाहिए। पुस्तक का मूल्य उपयुक्त है।

–समीक्षक : प्रो. डॉ. जमनालाल बायती
पूर्व प्राचार्य, बी-186, आर.के. कॉलोनी
भीलवाड़ा (राज.)-311001

अगाड़ी

लेखक : राजेन्द्र जोशी **प्रकाशक** : ऋचा (इण्डिया) पब्लिशर्स, बीकानेर **संस्करण** : 2015 **पृष्ठ संख्या** : 96 **मूल्य** : ₹ 200

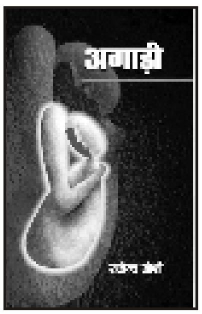

राजेन्द्र जोशी ने अपनी सद्य प्रकाशित राजस्थानी कथा-कृति 'अगाड़ी'में नारी की व्यथा-कथा बताने का प्रयास किया हैं। इनका पद्य सृजन जितना भावपूर्ण है उतना ही प्रवाहमय असरकारक गद्य लेखन भी है। गद्य कवियों की कसौटी मानी गई है और इस पर ये खरे उतरे हैं।

अगाड़ी कथा संग्रह में कुल 11 कहानियाँ 96 पृष्ठों में समायी हुई हैं। एक-एक पृष्ठ में नारी मन की परत-दर-परत उघाड़ कर उसके भीतर के दर्द को प्रकट किया है। एक सधे हुए कलाकार और मंजे हुए साहित्यकार की तरह सही-सही शुद्ध चित्र प्रस्तुत करते हुए अपनी कहानियों के पात्रों को हमारे सामने जीवंत बना दिया है।

एक कहानीकार का काम समाज की समस्याएँ प्रस्तुत करना और उनका समाधान सुझाना नहीं है। लेकिन कहानी में अपने समय की प्रस्तुति आ ही जाती है। संग्रह की सभी कहानियों का ताना-बाना आधी दुनिया को लेकर या उनकी समस्याओं को उजागर करते हुए बुना गया है। नौकरानियों के साथ उनके मालिकों की गिद्ध दृष्टि के अत्याचार उजागर करते हुए उस नारी को सबला के रूप में प्रस्तुत किया गया है। नारी कमजोर नहीं है, सशक्त है। वह उठ खड़ी हो तो धरा काँप उठेगी। इस विचार धारा को केन्द्र में रख कर सृजन किया गया है।

दहेज के लिए अनावश्यक रूप से टपकती लार को शांत करने के लिए युवा वर्ग को आगे आने की बात कह कर और लड़के के पिता द्वारा इस झूठी शान के लिए चली आ रही कुरीति का समाधान, संग्रह की शीर्ष कहानी अगाड़ी में ढूँढ़ा गया है। इस कुरीति के चलते बेमेल विवाह या गृहस्थी में तनाव बिखराव होते हैं।

मर्द-औरत के आपसी रिश्तों, प्रेम के बंधन में जात-पाँत, धन-दौलत समाजिक स्थिति से उबरने और उच्च भाव की ओर अग्रसर होने के संकेत इनकी कहानियों में मिलते हैं। प्रेम शाश्वत सत्य है जो सृष्टि को संचालित करता है। इसे गहराई से बताया है।

जातियों के पेचिदा प्रपंचों में हमारा देश हजारों वर्षों से अच्छी तरह उलझा हुआ रहा है। जिसके दुष्परिणाम हमने समय-समय पर भुगते हैं। कहानीकार ने इस कोढ रूपी मान्यता से मुक्त होकर सही राह ढूँढ़ने की ओर इंगित किया है।

अपना सारा जीवन कष्टों में बिताने वाली माँ, जिसने अपनी संतान को पालपोस कर बड़ा किया, वही संतान उससे दूर छिटक जाती है। इस प्रकार के अनेक द्वन्द्व जोशी जी की कहानियों में उभर कर सामने आए हैं।

आज के शहरी नारकीय जीवन, नैतिक पतन, भ्रष्ट आचरण को देखते हुए, गाँव में रह कर सारी सुविधाएँ जुटा कर सुखद जीवन जीने का संदेश देती हुई कहानी 'बडेरों री सीख' इस समस्या का अच्छा निराकरण प्रस्तुत करती है। देखादेखी में या शहरों की मृग मरीचिका से बचने का भाव अति सुंदर लगता है।

'अढ़ाई आखर रो रंग' कहानी के नायक महादेव को जीवन की उच्चतम ऊचाइयों को छूने में ही अपने जीवन की कोमलतम भावनाओं से अनजाना दिखाया गया है। मानवतावादी कहानीकार ने मानवीय मूल्यों, कोमलतम भावनाओं, अपनत्व पुरुष-नारी के संतुलित सामंजस्य से प्रसन्नता की कल-कल निनाद करती सरिता के बहने की बात कही है। नारी और पुरुष पात्र अपने हृदय के भाव प्रकट नहीं कर पाते हैं। इस कहानी में इन प्रतीकात्मक पात्रों के द्वारा कथाकार ने आज के अबोलेपन या मन के भावों को एक-दूसरे से साझा नहीं करने से प्रेम प्रसंग या वैवाहिक जीवन के अधूरे रह जाने की पीड़ादायक स्थिति का मार्मिकता से चित्रण किया है।

नारी मन की सरसता, अपनत्व, त्याग, सेवा भाव, समर्पण को लेखक ने मार्मिकता से प्रस्तुत किया है साथ में उस नारी को कठोर परिस्थितियों से जूझने, मजबूती से समस्या का मुकाबला करने और अपना हक प्राप्त करने में सक्षम बतलाया है। प्रतीकों, बिंबों से बात को स्पष्ट किया है।

इन कहानियों में धर्म-कर्म, नितनेम, राग-द्वेष, काम-क्रोध, सामाजिक सम्बन्धों की गरमाहट राजस्थानी जन-जीवन व परम्पराएँ आदि सब कुछ हैं। अलग-अलग स्थितियों में नारी जीवन की त्रासदी को दर्शाया है। ये कहानियाँ सामाजिक सरोकार को लेकर चलती हैं। समाजहित की बात कही गई है इसलिए कुछ हट कर अपनी अलग पहिचान बनाती हैं। ये नितान्त घरेलु समस्याओं को बड़े फलक पर पूरी संवेदना के साथ पारिवारिक गरिमा की बोलचाल की भाषा में लिखी गई सफल कहानियाँ हैं।

कथाकार की भाषा का सौंदर्य तो देखते ही बनता है। भाषा सहज, सरल है और इसमें कहावतें, लोकोक्तियाँ मोतियों की तरह पिरोई गई हैं। जिससे भाषा सौष्ठव बढ़ गया है। बीकानेर क्षेत्र की कस्बई व ग्राम्यांचलीय भाषा का सौंदर्य, मिठास देखते ही बनता है। भाषा के प्रवाह व अपनत्वभरी कथन शैली से ये सभी कथाएँ अपने आस-पास घटित होती प्रतीत होती हैं। पात्र जाने-पहिचाने लगते हैं इसलिए ये कहानियाँ पाठकों को अपनी सी लगती हैं। वह अपने को इनके बीच पाता है।

आधुनिक जीवन की समस्याओं तथा पारंपरिक राजस्थानी जीवन की समस्याओं को सुलझे हुए ढंग से देखा गया है। आधुनिक सोच के साथ-साथ राजस्थानी जीवन-मूल्यों को सजगता से जीनेवाले कथाकार की लेखनी से नारी मन को टटोलती कहानियों का यह कथा संग्रह 'अगाड़ी' निश्चित रूप से पाठकों को झकझोरने, सोचने के लिए बाध्य करेगा। कहानी के रचयिता कथाकर जोशीजी की कलम से और भी कहानियाँ पाठकों को समय-समय पर मिलती रहेंगी यह आशा है। इनके दीर्घ जीवन की कामना करता हूँ।

-समीक्षक : **मनोहर सिंह राठौड़**
421 ए, हनुवंत-ए मार्ग-3,
बी.जे.एस. कॉलोनी, जोधपुर-342006
मों. 9829202755, 7792093639

अमृत वचन

व्यक्तियों में जितना सामंजस्य उत्पन्न होगा; उतना ही प्रगति की ओर अग्रसर होना संभव होगा। व्यक्ति की अन्तःप्रेरणा जगा कर ऐसे कार्यों के लिए प्रेरित करने का अपना प्रयत्न होना चाहिए।

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

चतुर्दिक समाचार

बयासी वर्ष की आयु में भी नि:शुल्क सिखा रही हैं कलारीपायत्तू कला

कलारीपायत्तू भारतीय युद्ध-कला है। आज कल जूड़ो कराटे, कुंग-फू आदि के नाम से जो मार्शल आर्ट्स लोकप्रिय है वे इसी भारतीय युद्ध-कला से निकले हैं। बौद्ध-मत के प्रचार के लिये जो भारतीय बौद्ध जापान, चीन, विएतनाम आदि देशों में गये, वे अपने साथ कलारीपायत्तू को भी इन देशों में ले गये। भारत में यह कला धीरे-धीरे लुप्त सी होने लगी। दक्षिण भारत विशेषकर केरलवासियों ने अभी तक इस युद्ध कला को जीवित रखा है। अभी भी केरल में बड़ी संख्या में इसके साधक हैं।

ऐसी ही एक साधक हैं श्रीमती मीनाक्षी गुरुक्कल। इस समय उनकी आयु 72 वर्ष है और गत 36 सालों से वे बालक-बालिकाओं को उक्त विलक्षण युद्ध-कला का ज्ञान दे रही हैं। 6 साल की आयु से वे कलारीपायत्तू सीखने लगी थी। सोलह वर्ष की आयु में उनका विवाह हो गया और पति श्री राघवन के सहयोग से वतकरा नामक स्थान पर 'कदथनादन कलारी संगम' प्रारम्भ किया। शुरू से ही इसमें नि:शुल्क शिक्षा देने का विचार किया गया। वही परम्परा आज भी चल रही है। युद्ध-कला सीखने के बाद गुरु-दक्षिणा के रूप में शिष्य-गण जो कुछ भी देते हैं उसी से उक्त स्कूल और श्रीमती मीनाक्षी के परिवार का खर्च चलता है।

वर्ष 1949 में यह कलारी संगम प्रारम्भ किया गया था। गत 67 वर्षों से यह सफलतापूर्वक चल रहा है और माता मीनाक्षी बिना थके यह आत्म-रक्षा की कला सिखा रही है। उल्लेखनीय बात यह है कि वे आज भी साड़ी पहिन कर छात्रों को दाव-पेंच सिखाती हैं। पूरे केरल में वे उन्नीयार्चा के नाम से प्रसिद्ध हैं। पाँच सौ साल पहले केरल में ही उन्नीयार्चा नाम की एक महिला हुईं थीं। वे भी उक्त युद्ध-कला में निष्णात थीं। उन दिनों केरल तक अरबों के हमले होने लगे थे। हमलावर महिलाओं का अपहरण कर अपने साथ ले जाते थे। उन बर्बर हमलावरों से अपनी रक्षा के लिये उन्नीयार्चा ने लड़कियों को कलारीपायत्तू सिखाना शुरू किया। उनका गुरुकुल भी उस समय काफी प्रसिद्ध हुआ और हजारों महिलाओं को उन्नीयार्चा ने आत्म रक्षा के योग्य बनाया था। उन्हीं उन्नीयार्चा के जैसे नि:शुल्क प्रशिक्षण देने की परम्परा माता-मीनाक्षी निभा रही हैं। इस आयु में भी वे प्रतिदिन तीन घंटे खुद अभ्यास करती हैं और फिर शिष्यों को सिखाती हैं। अब उनका आहार तो कम हो गया है परंतु गुड़ उनके भोजन में बारह महीनों रहता है।

मकर संक्रान्ति का पर्व आता था 25 दिसम्बर को

यूरोप, अमरीका और पश्चिमी जगत में इस समय क्रिसमिस की धूम हैं। अधिकांश लोगों को पता नहीं कि यह क्यों मनाया जाता है। कुछ लोगों का मानना है कि इस दिन ईशदूत ईसा मसीहा का जन्मदिन पड़ता है।

विश्व-कोष में दी गई जानकारी के अनुसार पहला क्रिसमस त्यौहार 25 दिसम्बर सन् 336 में मनाया गया। विश्व-कोष में यह भी बताया गया है कि पहले इस दिन सूर्य-पूजा की जाती थी। क्रिसमस को 'बड़ा दिन' भी कहा जाता हैं। अर्थात् इस दिन से दिन बड़े होने शुरू हो जाते है। वास्तव में उस समय 25 दिसम्बर को 'मकर संक्रान्ति' पर्व आता था और पूरा यूरोप धूम-धाम से सूर्य की उपासना इस दिन करता था। सूर्य और पृथ्वी की गति के कारण मकर संक्रान्ति लगभग 80 वर्षों में एक दिन आगे खिसक जाती है। स्वामी विवेकानन्द का जन्म भी मकर संक्रान्ति को हुआ था, किन्तु उस दिन 12 जनवरी थी। अब तक मकर संक्रान्ति 14 जनवरी को आ रही थी, पर अब 15 जनवरी को आयेगी। दो-चार साल आगे पीछे होने के बाद कुछ सालों बाद मकर संक्रान्ति स्थाई रूप से 15 जनवरी को ही आयेगी।

संस्कृत की पहली एनिमेटेड फिल्म पुण्यकोटि

संस्कृत विश्व की सभी भाषाओं की जननी है। इसके साथ ही यह सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा है। कम्प्यूटर के लिये यह सबसे उपयुक्त भाषा मानी जाती है। अपने देश की तो यह आत्मा है अब तक केवल तीन फीचर फिल्में संस्कृत में बनी हैं, आदि शंकराचार्य, भगवद्गीताऔर प्रियमानसम्।

अब एक एनिमेटेड फिल्म भी संस्कृत में बनी है। एनिमेटेड फिल्मों में कोई पुरूष या महिला कलाकार नहीं होते, बल्कि मनुष्यों, पशु-पक्षियों आदि के चित्रों के माध्यम से कहानी कही जाती है।

पुण्यकोटि फिल्म में भी एक शेर और एक गाय की बात-चीत हैं। शेर गाय को खा जाना चाहता है और गाय कहती हैकि वह अपने बछड़े से मिल कर आयेगी, इसके बाद सिंह उसे अपना भोजन बना ले। फिल्म डेढ़ घण्टे की है तथा इसमें एक गीत भी है।

दुनिया बदलने वाले दस लोगों में भारत के उमेश सचदेव भी

अमरीका के प्रसिद्ध साप्ताहिक 'टाइम' ने ताजा अंक में दुनिया बदलने वाले दस लोगों की जानकारी दी है इनमें से एक भारत के उमेश सचदेवा भी है।

बाकी नौ लोगों में से तीन अमरीका के तथा जर्मनी, ब्रिटेन, लाइवेरिया, ब्राजील, कोरिया और आयरलैण्ड के एक-एक महानुभाव है।

तीस साल के उमेश ने ऐसा 'सॉफ्टवेयर' तैयार किया है जो दुनिया की 25 भाषाएँ और 125 बोलियाँ समझता है। वे कम्प्यूटर इंजीनियर हैं तथा अपने सहपाठी रहे अनिल सरावगी के साथ उक्त सॉफ्टवेयर तैयार किया है। इसी सॉफ्टवेयर की सहायता से आपका मोबाइल 25 भाषाओं में काम कर सकेगा तथा सवा सौ बोलियाँ समझ सकेगा। अभी तक भारत के मोबाइल फोनों में अग्रेंजी या हिन्दी का ही प्रयोग किया जा सकता है।

गोमूत्र में सोना खोजा वैज्ञानिकों ने

प्राचीनकाल से ही गाय भारत की अर्थ-व्यवस्था का आधार रही है। इसीलिये गाय को माता कहा गया है। देशी गाय का दूध अमृत समान होता है। उसमें कई रोगों का उपचार करने की क्षमता होती है। गो-मूत्र भी औषधियों का भण्डार माना गया है। गुजरात के जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों डॉक्टर बी.ए. गोलकिया और उनके सहयोगियों ने गोमूत्र में सोने के कण खोजे हैं। डॉक्टर गोलकिया के अनुसार गिर नस्ल की गायों के मूत्र में पाया गया स्वर्ण चिकित्सकीय गुणों से भरपूर है। उनके अनुसार एक लीटर गोमूत्र में 3 से 10 मिलीग्राम तक सोना होता है। यह सोना जैविक सोना है। जो कि चिकित्सा के लिये प्रत्युक्त होने वोले सामान्य स्वर्ण-भस्म से कहीं अधिक उपयोगी है। इससे पहले भी एक वैज्ञानिक शोध में बताया गया हैं कि भारतीय नस्ल की गाय के गोबर में कीटाणुओं का नाश करने की क्षमता है।

संकलन : **नारायण दास जीनगर,** प्रकाशन सहायक

शाला प्रांगण से

भामाशाहों के सहयोग से शिक्षा की अलख जगेगी : गुप्ता

श्रीमती नाथीबाई आदर्श राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रेवतड़ा भवन का लोकार्पण

जालोर-सायला तहसील स्थित निकटवर्ती रेवतड़ा ग्राम पंचायत मुख्यालय पर स्थित श्रीमती नाथीबाई आदर्श राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के नवीनीकरण विद्यालय भवन का लोकार्पण समारोह सिरे मन्दिर के गादीपति पीर गंगानाथ महाराज व लोट महन्त रणछोड़ भारती महाराज के पावन सान्निध्य में आयोजित हुआ। समारोह में साधु सन्तों के सान्निध्य में वैदिक मंत्रों के साथ भामाशाह वेदमुथा परिवार के सदस्यों व अतिथियों द्वारा फीता काट कर लोकार्पण किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए जिला कलक्टर श्री अनिल कुमार गुप्ता ने कहा कि भामाशाह परिवार ने गाँव में शिक्षा की अलख जगाने का बीड़ा उठाया है जो गाँव के लिए वरदान साबित होगा। भामाशाह परिवार की प्रशंसा करते हुए गाँव के विकास कार्यों में हर संभव सहयोग का आश्वासन दिया। भामाशाह व ग्रामीणों की माँग पर आदर्श राउमावि में मर्ज किए गए बालिका विद्यालय को पुनः अलग से संचालित करवाने का आश्वासन दिया। विधायक प्रतिनिधि एडवोकेट श्री बाबूलाल मेघवाल ने रेवतड़ा गाँव को धर्मनगरी बताते हुए कहा कि पूज्य गंगानाथ महाराज के चातुर्मास से ही गाँव में नवीन भव्य कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा है। भामाशाह वेदमुथा परिवार द्वारा विद्यालय भवन का नवीनीकरण करवाने के बाद विद्यालय आधारभूत सुविधाओं से युक्त बन गया है। ऐसे में यहाँ अध्ययन करने वाले विद्यार्थी निःसन्देह होनहार व संस्कारवान बनेंगे। प्रधान श्री जबरसिंह तूरा ने कहा कि भामाशाहों के सहयोग के बिना विकास की कल्पना नहीं की जा सकती है। रेवतड़ा में भामाशाह वेदमुथा परिवार द्वारा जीर्ण-शीर्ण भवन का नवीनीकरण करवाने के साथ उसे आधुनिक स्वरूप दिया गया है। जिससे लोगों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। समारोह को अतिरिक्त जिला कलक्टर श्री भामाशाह डूडी, पूर्व विधायक श्री रामलाल मेघवाल ने भी संबोधित किया। समारोह में प्रधानाचार्य श्री कानाराम पंवार ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इस दौरान सायला उपखण्ड अधिकारी श्री मोहनलाल प्रतिहार, जालोर उपखण्ड अधिकारी श्री हरफूल पंकज, सरपंच संघ अध्यक्ष श्री सुरेश राजपुरोहित, तहसीलदार श्री ताराचन्द वेंकट, विकास अधिकारी श्री भोपाल सिंह जोधा, बीईईओ श्री मोहनलाल परिहार, डिस्कॉम के अधीक्षण अभियन्ता श्री एम.एल. मेघवाल, श्री मदनलाल, श्री प्रवीण कुमार, श्री किशनलाल, श्री विक्रम कुमार जैन, श्री राजूभाई, श्री गजेन्द्र हिराणी, श्री जीतमल साफाडियां, श्री अशोक कुमार, श्री महावीर, श्री सुरेश कुमार, श्री जयन्तीलाल, श्री सुमेरमल जैन, पूर्व सरपंच श्री करताराम चौधरी, पंचायत समिति सदस्य श्री रमेश माहेश्वरी, श्री प्रकाश राजपुरोहित, सहायक अभियन्ता जलदाय विभाग श्री एस. के. शर्मा, भामाशाह प्रेरक श्री नृसिंहदास वैष्णव, श्री शान्तिलाल राजपुरोहित, श्री चम्पालाल प्रजापत, श्री महेन्द्र राव, श्री दुर्गासिंह, श्री रामसिंह, श्री हरिशंकर करताणी, श्री खिमराज सैन, श्री जितेन्द्र कुमार सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे।

झलकी संस्कृति : समारोह में भामाशाह वेदमुथा परिवार द्वारा राजस्थान की रंग-बिरंगी संस्कृति का प्रतीक सतरंगी साफा पहनाकर अतिथियों का सम्मान किया गया। साथ ही अतिथियों को स्मृति चिह्न भी भेंट किए गए। समारोह के बाद अहमदाबाद-हैदराबाद के कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गई।

कम्प्यूटर सैट की घोषणा : समारोह में भामाशाह परिवार के सदस्य श्री जोगराज जैन द्वारा विद्यालय में कम्प्यूटर सेट भेंट करने की घोषणा की गई। वहीं समारोह में अतिथियों के हाथों विद्यालय में अध्ययनरत बालक-बालिकाओं को स्कूल बैग व रैनकोट का वितरण किया गया।

सजाड़ा की गणेशी का राष्ट्रीय स्कूली सॉफ्टबॉल में चयन

जोधपुर-राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सजाड़ा (लूणी) की कक्षा बारहवीं की छात्रा गणेशी का चयन 62 वीं राष्ट्रीय स्तरीय सॉफ्टबॉल (छात्रा वर्ग) में हुआ है, यह प्रतियोगिता 21 नवम्बर से 25 नवम्बर 2016 तक औरंगाबाद (महाराष्ट्र) में आयोजित होगी। विद्यालय के शारीरिक शिक्षक व अन्तर्राष्ट्रीय कोच श्री शाकिर अली ने छात्रा खिलाड़ी को प्रशिक्षित किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री किशोर कुमार ने बताया कि 1954 में निर्मित इस विद्यालय से पहली बार छात्रा खिलाड़ी राष्ट्रीय स्तर प्रतियोगिता में भाग लेने जा रही है। चयनित छात्रा वर्तमान में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय डबलीवास प्रेमा (हनुमानगढ़) में प्रशिक्षण प्राप्त कर रही है। गणेशी की इस उपलब्धि पर विद्यालय स्टाफ श्री संजय कुमार मिश्रा, श्री जालाराम, श्री श्याम नरेश, श्री दौलतराम, श्री भारत सिंह, मो. हारून खान, श्री विनोद सोयल, श्री पोकरराम भाटी, श्री आदिल खान, श्री ललित कुमार, श्रीमती कान्ता शर्मा, श्रीमती बबीता मीणा, श्रीमती नोमिता लिखी, श्रीमती उमा पाण्डे ने प्रसन्नता व्यक्त की। साथ ही विद्यालय विकास प्रबन्धन समिति के अध्यक्ष श्री नत्थाराम, श्री जब्बर सिंह राजपुरोहित, श्री छैल सिंह, श्री तेजसिंह, श्री झुंझार सिंह, श्री माधोसिंह, श्री भंवर सिंह, श्री आसूराम देवासी, श्री तुलसीराम, श्री मनी सिंह, श्री हासम खाँ सहित ग्रामवासियों ने छात्रा के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

भंवरसिंह का अभिनन्दन

हैण्डबाल में लगातार 17 वर्षों से सीकर जिले में विजेता बनने का इतिहास रचा

सीकर- राजकीय माध्यमिक विद्यालय सांवलोदा लाडखानी की हैण्डबाल 17 वर्ष छात्रा वर्ग में लगातार 17 वर्षों से सीकर जिले में विजेता बनने का इतिहास रचने पर विद्यालय के शारीरिक शिक्षक भंवर सिंह का माला व साफा पहनाकर अभिनन्दन किया गया तथा विजेता छात्राओं को 500-500 रु. का नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधानाध्यापक श्री फूलसिंह भास्कर ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रामावि. सिंगादड़ा के प्रधानाध्यापक श्री अर्जुनलाल शर्मा थे।

संकलन : **नारायणदास जीनगर**
प्रकाशन सहायक
मो. 9414142641

हमारे भामाशाह

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। **-वरिष्ठ संपादक**

हनुमानगढ़

रा.आदर्श उ.मा.वि., अरड़की तह. नोहर में श्री विनोद गोस्वामी द्वारा तीन लाख रुपये की लागत से विद्यालय प्रवेश द्वार, 1,75,000 रुपये की लागत से जलघर मय वाटर कूलर और जल शुद्धी हेतु R.O., 1,50,000 रुपये की लागत से 525 निर्धन बच्चों को स्वेटर वितरण किया गया। **रा.उ.मा.वि. पटवा** तह. भादरा को श्री राजेन्द्र कुमार कुलड़िया से पाँच सीलिंग बजाज पंखे व एक अलमारी जिसकी लागत 11,000 रुपये, श्री सुनील कुमार झारेड़ से एक कम्प्यूटर प्राप्त हुआ जिसकी लागत 15,000 रुपये। **रा.प्रवेशिका संस्कृत वि. गोगामेड़ी** तह. नोहर में श्री बजरंग सहारण द्वारा एक कम्प्यूटर सैट व 2,100 रुपये, कक्षा 01 से 10 तक प्रत्येक कक्षा में प्रथम रहने वाली छात्राओं को 500 रुपये दिए गए।

सीकर

रा.मा.वि. बिंजासी धोद में श्री ओमप्रकाश भार्गव द्वारा 51,000 रुपये की लागत से मुख्य द्वार का निर्माण करवाया गया, श्री जितेन्द्र सिंह से एक लेपटॉप व प्रिन्टर मय स्कैनर जिसकी लागत 45,600 रुपये व दो छत पंखे, सर्व श्री हणमान सिंह, विजय सिंह उपसरपंच व सुरेन्द्र से एक-एक पंखा प्राप्त हुआ। **रा.मा.वि., रलावता दातारामगढ़** को श्री बिहारीलाल कुमावत से एक वाटर कूलर, विद्युत मोटर, एक प्लास्टिक टंकी जिसकी लागत 60,000 रुपये, श्रीमती मोहनी देवी मीणा से कम्प्यूटर सैट जिसकी लागत 20,000 रुपये, श्री गणपत सोनी से 6 ग्रीनबोर्ड जिसकी लागत 13,500 रुपये, श्री राधे पारीक द्वारा लहर कक्ष चौकी नौ जिसकी लागत 13,500 रुपये, श्री शंकर लाल सोनी से फ्लेग पोल, फ्लेश बोर्ड व 8 दीवार घड़ियाँ जिसकी लागत 5,000 रुपये, श्री बजरंग सिंह शेखावत से शाला सौंदर्यीकरण (कलर) लागत 50,000 रुपये, रिवोलविंग ऑफिस चेयर लागत 6,000 रुपये, दो टीमों खिलाड़ियों हेतु किट केट (ड्रेस, जूते, जुराब आदि) लागत 22,800 रुपये, जनसहयोग से प्रिंटर कम्प्यूटर टेबल 18,452 रुपये, कार्यालय टेबल लागत 3,000 रुपये, 10 टेबल लोहे की लागत 11,000 रुपये, श्री गोपाल लाल जांगिड़ से टेबल लकड़ी की पाँच लागत 3,500 रुपये। **रा.मा.वि. नेठवा तह. फतेहपुर** में श्री जगदीश प्रसाद कटारिया द्वारा प्रार्थना सभा हाल (22×45) लागत 10,00,000 रुपये, पेयजल के लिए ट्यूबवेल लागत 1,00,000 रुपये, 130 टेबल स्टूल सैट लागत 1,30,000 रुपये,सर्व श्री बालूराम पूनियां, सुखदेव कालेर, रवि सैनी, श्री श्री 108 शीलनाथ जी महाराज द्वारा प्रत्येक से एक-एक कमरा मय बरामदा का निर्माण करवाया गया जिसकी प्रत्येक की लागत 3,00,000 रुपये, श्री महावीर प्रसाद चोटिया द्वारा छत सीढ़ीयाँ, पानी की टंकी, प्रसाधन कक्ष का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 2,00,000 रुपये, श्री केशा राम पूनियाँ द्वारा छात्र-छात्राओं के लिए पृथक-पृथक शौचालय एवं मूत्रालय कक्ष का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 1,50,000 रुपये, श्री शुभकरण सैनी से पानी की टंकी व 14 पंखे प्राप्त हुए लागत 78,000 रुपये, श्री नौरंग लाल सिहाग से 5 दरी (15×15) लागत 35,000 रुपये, श्री राजकुमार झाझड़िया से एक कम्प्यूटर सिस्टम मय प्रिन्टर स्केनर मशीन जिसकी लागत 33,000 रुपये, श्री धन्नाराम सिहाग से शाला का मुख्य द्वार का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 25,000 रुपये, श्री किशोरी लाल चौधरी से 2 पंखे प्राप्त हुए लागत 4,000 रुपये। **रा.उ.मा.वि. मन्दोली** को हरिसिंह तंवर से 125 ऊनी स्वेटर जिसकी लागत 30,000 रुपये, श्री मूलचन्द मीणा से 125 जूतों की जोड़ी जिसकी लागत 25,000 रुपये, श्री भंवरलाल जांगिड़ से 125 जोड़े जुराब जिसकी लागत 5,000 रुपये, श्री रामस्वरूप मीणा द्वारा 50 किलो लड्डू लागत 5,000 रुपये, श्री नाथूराम कुमावत से 05 कुर्सी (प्लास्टिक) विद्यालय को सप्रेम भेंट लागत 1,500 रुपये। **रा.मा.वि. पीली का जोहड़ा (खटकड़) पं.सं. नीम का थाना** को श्री प्रदीप कुमार कमलेश (अ.) से 115 छात्र-छात्राओं को स्वेटर सप्रेम भेंट, श्री आशाराम कांसोटिया (पू.प्र.अ.) से 20 कुर्सियां विद्यालय को सप्रेम भेंट। **शहीद जयपाल सिंह रा.मा.वि. खींवासर (लक्ष्मणगढ़)** को श्री अमर चन्द काजला से एक इलेक्ट्रॉनिक बेल लागत 11,000 रुपये, श्री रिछपाल कस्वां से एक R.O., 1000 लीटर पानी की टंकी मय नल फिटिंग लागत 21,000 रुपये, समस्त ग्रामवासी, समस्त स्टाफ (प्र.अ. सहित) के सहयोग से विद्यालय मरम्मत, रंग-रोगन व मुख्य रैम्प सहित कार्य लागत 2,01,251 रुपये।

करौली

शहीद सोहनसिंह रा.आ.उ.मा.वि., महू इब्राहिमपुर को श्री दामोदर सोलंकी (से.नि.अ.) से आर.ओ. एवं वाटर कूलर हेतु नकद 21,000 रुपये प्राप्त हुए। सर्व श्री सीताराम सोलंकी व आर.बी. सिंह प्रधानाचार्य से प्रत्येक से 11,000 रुपये नकद आर.ओ. वाटर कूलर हेतु नकद प्राप्त हुए। सर्व श्री शिवसिंह खैरवाल (सरपंच), श्री हमीमुद्दीन, पुष्पा मंगल (व.अ.), श्री दीवान सिंह (से.नि. व्या.) से आर.ओ. एवं वाटर कूलर हेतु नकद प्रत्येक से 5,100 रुपये नकद प्राप्त हुए। सर्व श्री वृद्धि चन्द मित्तल (से.नि.प्र.अ.), चतरसिंह सोलंकी से प्रत्येक से 3,100 रुपये नकद प्राप्त हुए, सर्व श्री महेशचन्द गर्ग, महेश चन्द बंसल, रामदयाल पंसारी, रामावतार बंसल, कम्पोटर चुरारी वाले कप्तान सिंह सोलंकी, प्रिंस सोलंकी, तेजसिंह सोलंकी (पूर्व भाजपा ब्लॉक अध्यक्ष हिण्डौन, ग्रामीण) से आर.ओ. एवं वाटर कूलर हेतु प्रत्येक से 2,100 रुपये नकद प्राप्त हुए, सर्व श्री नरेश गर्ग, मन्नू लाल गर्ग, कैलाश चन्द सोनी, भीम सिंह सोनी, ओमप्रकाश, मुकेश कुमार गर्ग, राधेश्याम सोनी, केशव, प्रेमचंद गर्ग, श्री धार्मिक प्याऊ न्यू बाजार महू, रामभरोसी गुर्जर, रवि गर्ग, जीतू गुप्ता, बृजेश धनेरवाल, राजकुमार गुप्ता, गजानन्द गर्ग, मलूक चन्द, कजोड़मल, केदारलाल चुरारीवाले, जगदीश मीना, खूबीराम शर्मा, वीरसिंह सोलंकी, विजेन्द्र सिंह से प्रत्येक से 1,100 रुपये आर.ओ. एवं वाटर कूलर हेतु नकद प्राप्त हुए। सर्व श्री कल्लाराम सोलंकी, सुशील कुमार सिंहल, प्रभातीलाल शर्मा, कैलाश चन्द्र धनेटवाल, गिर्राज प्रसाद गुप्ता, दिनेश चन्द गर्ग, गोविन्द सिंहल, अशोक तिवाड़ी, मंगती लाल प्रजापत, देवेन्द्र सिंह जाट, खुशी राम जाटव, श्री कल्याण पेन्टर जाटव, श्रीमती हरदोई सोलंकी से प्रत्येक से 500 रुपये, आर.ओ. एवं एक वाटर कूलर हेतु नकद प्राप्त हुए। **रा.आदर्श.उ.मा.वि. पहाड़ी, टोडाभीम** में सम्पूर्ण ग्राम द्वारा 8,50,000 रुपये की लागत से दो बीघा जमीन स्कूल के लिए तथा 2,50,000 रुपये की लागत से स्कूल की चार दीवारी एवं मिट्टी भराई हेतु, श्रीमती कमला मीना (पूर्व महासचिव प्रदेश महिला कांग्रेस कमेटी) से बालिका शौचालय निर्माण हेतु 31,000 रुपये नकद प्राप्त हुए, श्री हरज्ञान मीना से विद्यालय का मुख्य दरवाजा हेतु 1,50,000 रुपये नकद, डॉ. नरेशपाल मीना से लैपटॉप व प्रिण्टर हेतु 55,000 रुपये नकद, श्री रामनिवास मीना (पूर्व सरपंच) द्वारा शौचालय बालक एवं स्टाफ हेतु पृथक-पृथक लागत 51,000 रुपये, श्री तेजराम मीना से दस लैक्चर स्टैण्ड लागत 21,000 रुपये नकद, श्री शिवराम मीना द्वारा पाँच फर्श (18×20) लागत 21,000 रुपये नकद, डॉ. नसरू खाँ से चालीस सैट स्टूल व टेबल लागत 51,000 रुपये, श्री किरोड़ी लाल गुप्ता से 15 सैट स्टूल व टेबल लागत 17,000 रुपये, श्री रामचरण मीना से 10 सैट स्टूल व टेबल लागत 11,000 रुपये, श्री हरभजन मीना सरपंच से 70 सैट स्टूल व टेबल व 50 डैस्क (कक्षा एक से 5 तक के लिए) लागत 71,000 रुपये, श्री शिवराम मीना से 11 डेस्क (कक्षा एक से पाँच तक के लिए) लागत 11,000 रुपये नकद, सर्वश्री रूपचंद मीना, खेमचंद मीना, हरीराम जाटव से प्रत्येक से 10 सैट स्टूल व टेबल तथा प्रत्येक की लागत 11,000 रुपये नकद प्राप्त हुए।

संकलन- रमेश कुमार व्यास

शिविरा पत्रिका (मासिक) : दिसम्बर 2016 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। © वरिष्ठ सम्पादक : प्रकाश चन्द जाटोलिया, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

चित्र वीथिका-दिसम्बर, 2016

61वीं राज्यस्तरीय मा./उ.मा. विद्यालयी 17-19 वर्ष छात्र-छात्रा तैराकी प्रतियोगिता का रा.बा.उ.मा.वि. गाँधी नगर, जयपुर में उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रो. वासुदेव देवनानी।

निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान श्री बी.एल. स्वर्णकार (आई.ए.एस.) जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, कोटा में नवाचार के रूप में प्रारम्भिक शिक्षा हेतु निर्मित गणित की प्रयोगशाला का अवलोकन करते हुए।

श्रीमती नाथीबाई आदर्श राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रेवतड़ा, सायला (जालोर) के भवन नवीनीकरण लोकार्पण समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति देते हुए विद्यार्थीगण।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय आडसर, लूनकरनसर (बीकानेर) में विद्यार्थियों द्वारा मध्यावधि अवकाश के दौरान किये गए गृहकार्य के पश्चात श्रेष्ठतम कार्य करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

62वीं राष्ट्रीय 14 वर्षीय विद्यालयी छात्र-छात्रा प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु जोधपुर से प्रस्थान करने वाली राजस्थान राज्य की हॉकी टीम सम्माननीय अतिथियों के साथ।

रमसा द्वारा आयोजित राज्यस्तरीय कला उत्सव 2016 नृत्य प्रतियोगिता में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय लेटा (जालोर) की टीम ने राज्य स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त कर, राष्ट्रीय स्तर पर दिल्ली में राजस्थान का प्रतिनिधित्व किया।

डाक पंजीयन संख्या Jaipurcity408/2014-16

शिविरा पत्रिका (मासिक) ● दिसम्बर, 2016
प्रकाशन तिथि : 2 दिसम्बर, 2016 पृष्ठ 52 ● प्रेषण : हर माह की 5, 6 तारीख

समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66

चित्र वीथिका

माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रो. वासुदेव देवनानी, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय राजेन्द्र मार्ग, भीलवाड़ा की स्थापना के 75 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर शिक्षकों, भामाशाहों को सम्मानित एवं उपस्थित जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए।

डिजिटल इण्डिया व स्मार्ट सिटी के सपने का पहला सोपान : अजमेर शहर में 30 स्मार्ट राजकीय विद्यालय

माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रो. वासुदेव देवनानी अजमेर शहर में निर्माणाधीन स्मार्ट कक्षा-कक्षों का अवलोकन करते हुए।

पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें : **वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर-334001**